एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९

।।ओ३म्।।

डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

हिन्दी मासिक

● प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित

वैदिक संसार

● वर्ष : १२ ● अंक : ५ ● २५ मार्च २०२३, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : २५/- ● कुल पृष्ठ : ४४

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

'वैदिका निधि' नूतन गृहप्रवेश एवं चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार तथा वैदिक संसार के अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्यों का अभिनन्दन आयोजन सानन्द सम्पन्न

(विस्तृत विवरण पृष्ठ ३९ पर)

गृह नाम पट्टिका

यज्ञाग्नि व जल आदि लेकर आचार्य डॉ. नरेन्द्र अग्निहोत्री के मार्गदर्शन में वेदोक्त विधि-विधान से गृह प्रवेश करते परिजन।

ईश्वरकर्ता से गृह प्रवेश के पश्चात् सर्वप्रथम यज्ञाग्नि को गृह की यज्ञवेदी में स्थापित कर संसार के श्रेष्ठतम् कर्म यज्ञ का अनुष्ठान।

गरिमामयी स्वर्णिम अवसर यज्ञब्रह्मा आचार्य नरेन्द्र जी के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ

अपने नूतन गृह को वैदिक विधिपूर्वक चारों दिशाओं में सैनिटाइज करते हुए

मुण्डन संस्कार के पूर्व आह्लादित चिरंजीव प्रणव

(अनवरत पृष्ठ २ पर)

मंचस्थ यज्ञ ब्रह्मा एवं बृहद यज्ञवेदी पर
मुण्डन संस्कार हेतु उपस्थित परिजन

ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना
करते हुए इंजी. नितिन शर्मा

ताऊ और बुआओं के सहयोग से
नापित द्वारा मुण्डन संस्कार

लो जी! हो गया मुण्डन संस्कार
माता की ममतामयी गोद में चैन मिला

हम पथिक वेद पथ के, संसार में आने वाले
कष्टों से विचलित नहीं होने वाले

उपस्थित गणमान्य महानुभावों द्वारा पुष्प वर्षा कर प्रणव
एवं यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया गया।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री
प्रकाश जी आर्य का सम्मान ज्येष्ठ सुपुत्र निलेश द्वारा

यज्ञ ब्रह्मा डॉ. नरेन्द्र जी अग्निहोत्री का सम्मान
सुपुत्र नितिन द्वारा

दयानन्द जी शर्मा, दक्षिण अफ्रीका का सम्मान
कनिष्ठ सुपुत्र गजेश शास्त्री द्वारा

अति विशिष्ट संरक्षक सदस्य श्री लक्ष्मी नारायण जी पाटीदार, विक्रम नगर
(उज्जैन) का अभिनन्दन उपस्थित गणमान्य महानुभावों के करकमलों द्वारा।

अति विशिष्ट संरक्षक सदस्य श्री रमेशचन्द्र जी भाट, अजमेर का अभिनन्दन
उपस्थित गणमान्य महानुभावों के करकमलों द्वारा

अति विशिष्ट संरक्षक सदस्य श्री अनिल जी शर्मा, इन्दौर का अभिनन्दन
उपस्थित गणमान्य महानुभावों के करकमलों द्वारा

अति विशिष्ट संरक्षक सदस्य श्री रामभजन जी पाटीदार, बूढ़ा (मन्दसौर) का अभिनन्दन
उपस्थित गणमान्य महानुभावों के करकमलों द्वारा, ग्रहण करते पं. सत्येन्द्र जी

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १२, अंक : ५
अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मार्च, २०२३
आर्ष तिथि: वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि
सृष्टि सम्वत् : १,९७,२९,४९,१२५
शक सम्वत् : १९४५, विक्रम सम्वत् : २०८०

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  गजेश शास्त्री, इन्दौर (अवैतनिक)
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
  बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन– **नितिन पंजाबी, इन्दौर**
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	२५,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	५,१००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,५००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	९००/–
वार्षिक सहयोग (प्रेषण व्यय सहित)	३५०/–
एक प्रति (प्रेषण व्यय रहित)	२५/–
विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ	७,१००/–

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलिया हाना, तिलक नगर, इंदौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०५
कैसे होगी हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा?	सम्पादकीय	०५
महान् विभूतियाँ : ...श्री रामचन्द्र जी	नन्दलाल निर्भय	०७
...कान्हरे, देशपाण्डे और कर्वे	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०९
...वीर सावरकर	इन्द्रदेव गुलाटी	११
...श्री धर्मसिंह कोठारी एवं श्रीमती मदनकुमारी	सा. श्रेय से प्रेय की ओर	१३
वेदों में विश्व बन्धुत्व की भावना की विवेचना	खुशहालचन्द्र आर्य	१५
स्वामी दयानन्द सरस्वती महात्मा ज्योतिराव फूले के विरोधी नहीं थे	आ. रामगोपाल सैनी	१६
महर्षि दयानन्द की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर महर्षि के २००...	आचार्य राहुलदेव	१७
मुसलमानों की अदूरदर्शिता	देवकुमार प्रसाद आर्य	१८
अग्निपथ	सुश्री आदर्श आर्या	१८
आरक्षण एक अनर्थकारी अन्याय	रामनिवास गुणग्राहक	१९
कहेगा फिर से एक स्वर में विश्व सारा, विश्व गुरु भारत देश...	आचार्य सोमेन्द्रश्री	२१
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिंह आर्य	२२
धर्म सरिता, भाग–७ (गतांक से आगे)	रमेशचन्द्र भाट	२३
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	२४
सत्यार्थ प्रकाश कणिका (गतांक से आगे)	देवनारायण सोनी	२५
देते हैं भगवान को धोखा, व्यक्ति को क्या छोड़ेंगे?	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	२७
ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं, सर्वव्यापक शक्ति है	पं. उम्मेदसिंह विशारद	२९
ऋषि दयानन्द के उपकार	देशराज आर्य	३०
बलात्कार के कारण और निवारण	आचार्य विश्वामित्रार्य	३१
कथनी–करनी में अन्तर ही पतन और विनाश का कारण	मोहनलाल दशौरा	३२
जय हो भारत! जय हो!	ओमप्रकाश बटवाल	३२
भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल	डॉ. गंगाशरण आर्य	३३
श्रेष्ठ कर्म करो और भले बनो	शिवनारायण उपाध्याय	३५
बंग भूमि बांग्लादेश से आर्यों के नाम एक पाती	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	३६
बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा	आर्ष गुरुकुल जरैल	३७
भारत को भारी तूफानों ने घेरा था/हम कृतज्ञ आर्य...	अम्बालाल विश्वकर्मार्य	४१

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार ११ गते, माधव मास से १० गते, शुक्र मास, शक सम्वत् १९४५ तक तदनुसार वैशाख (अधिक) मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि से वैशाख (शुद्ध) मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, विक्रम सम्वत् २०८० तक तदनुसार दिनांक १ अप्रैल से ३० अप्रैल, सन् २०२३ तक के आर्यावर्त भू–मण्डल के कुछ विशेष पर्व एवं दिवस

११ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल एकादशी	०१ अप्रैल	गुरु तेगबहादुर व डॉ. हेडगेवार जयन्ती
१३ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल द्वादशी	०३ अप्रैल	छत्रपति शिवाजी पुण्यतिथि
१६ गते	माधव मास	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा	०६ अप्रैल	चित्रा– २५:५५
१७ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा	०७ अप्रैल	विश्व स्वास्थ्य दिवस
१८ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण द्वितीया	०८ अप्रैल	मंगल पाण्डे व बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय पुण्यतिथि
२० गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण चतुर्थी	१० अप्रैल	मोरारजी देसाई पुण्यतिथि
२१ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण पंचमी	११ अप्रैल	महात्मा ज्योति बा फूले जयन्ती
२२ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण सप्तमी	१२ अप्रैल	क्षय तिथि षष्ठी– २९:४२, पूर्वाषाढ़– २०:५५, उत्तराषाढ़– २५:५५
२३ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण अष्टमी	१३ अप्रैल	जलियाँवाला बाग नृशंस हत्याकाण्ड दिवस
२४ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण नवमी	१४ अप्रैल	डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती, महर्षि रमण पुण्यतिथि
२५ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण दशमी	१५ अप्रैल	पंचक प्रारम्भ– ०६:१३, गुरु नानक देव, गुरु अर्जनसिंह व दानवीर भामाशाह जयन्ती
२७ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण द्वादशी	१७ अप्रैल	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पुण्यतिथि
२८ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण त्रयोदशी	१८ अप्रैल	विश्व धरोहर दिवस
२९ गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण चतुर्दशी	१९ अप्रैल	महात्मा हंसराज जयन्ती
३० गते	माधव मास	वैशाख कृष्ण अमावस्या	२० अप्रैल	**वृषभ सङ्क्रान्ति– १३:४४,** पंचक समाप्त– १७:३३
०१ गते	शुक्र मास	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा	२१ अप्रैल	महात्मा हंसराज पुण्यतिथि
०२ गते	शुक्र मास	वैशाख शुक्ल द्वितीया	२२ अप्रैल	परशुराम जयन्ती, छत्रपति शिवाजी जयन्ती (अपर मत से), पृथ्वी दिवस
०४ गते	शुक्र मास	वैशाख शुक्ल चतुर्थी	२४ अप्रैल	मृगशिरा– २२:४३, रामधारीसिंह दिनकर पुण्यतिथि, राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस
०५ गते	शुक्र मास	वैशाख शुक्ल पंचमी	२५ अप्रैल	शंकर जयन्ती, आर्य समाज स्थापना दिवस (१०.४.१८७५, शनिवार, चैत्र शुक्ल पंचमी सम्वत् (कार्तिकेय) १९३१) वैदिक पंचांगानुसार वैशाख शुक्ल पंचमी सम्वत् (चैत्रीय) १९३२)
०६ गते	शुक्र मास	वैशाख शुक्ल षष्ठी	२६ अप्रैल	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीनिवास रामानुज पुण्यतिथि
०८ गते	शुक्र मास	वैशाख शुक्ल अष्टमी	२८ अप्रैल	पुष्य– १६:१३, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जयन्ती, सुभाषचन्द्र बोस पुण्यतिथि

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

नवीन पंचांग प्रकाशित हो चुका है। अपनी प्रति शीघ्र मँगवाएँ, लाभ उठाएँ।

किसी भी शंका–समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें

अन्य स्रोतों से प्राप्त अप्रैल मास, २०२३ के कुछ विशेष पर्व–दिवस

१. वित्तीय वर्ष प्रारम्भ, ओडिसा दिवस। ०२. विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय बाल पुस्तक दिवस। ०३. **स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी पुण्यतिथि।** ०४. झलकारी बाई बलिदान दिवस। ०५. राष्ट्रीय समुद्री दिवस, बाबू जगजीवन राम जयन्ती (समता दिवस)। ०६. विश्व टेबल टेनिस दिवस, **महाशय राजपाल बलिदान दिवस,** दाण्डी सत्याग्रह दिवस, ०७. विश्व स्वास्थ्य दिवस। ०८. **पं. रामचन्द्र देहलवी जयन्ती,** विश्व बंजारा दिवस। ०९. सी.आर.पी.एफ. वीरता दिवस। १०. विश्व होम्योपैथी दिवस, डॉ. हेनीमेन जयन्ती। ११. राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस। १२. विश्व पारकिंसस दिवस, मानव अन्तरिक्ष उड़ान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। १३. खालसा पन्थ स्थापना दिवस, सियाचिन दिवस। १४. राष्ट्रीय अग्निशमन दिवस। १५. विश्व कला दिवस। १६. विश्व आवाज दिवस, हिमाचल प्रदेश स्थापना दिवस। १७. विश्व हिनोफिलिया दिवस। १८. रामचन्द्र पांडुरंग (तात्या टोपे) बलिदान दिवस। १९. भारत द्वारा उपग्रह क्षेत्र में प्रवेश दिवस, विश्व लीवर दिवस। २१. सिविल सेवा दिवस। २३. विश्व पुस्तक तथा कॉपीराइट दिवस। २५. विश्व मलेरिया दिवस, विश्व पेंगुईन दिवस। २६. विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस। २८. कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए विश्व दिवस। २९. अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस। ३०. आयुष्मान दिवस, विश्व पशु चिकित्सा दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त आँधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम।
यो मा ददादि स इदेवमावदहम् अन्नमन्नम् अदन्तमद्मि।। (३६)

– सामवेद पू. ६.३.१.९

शब्दार्थ– अहं देवेभ्यः प्रथमजाः अस्मि = मैं वायु बिजली आदि देवों से पूर्व ही विद्यमान हूँ और **ऋतस्य अमृतस्य नाम** = सच्चे अमृत का टपकाने वाला हूँ। **यः मा ददाति** = जो पुरुष मेरा दान करता है, स इत् = **वही एवम् आवत्** = ऐसे प्राणियों की रक्षा करता है और जो किसी को न देकर आप ही खाता है **अन्नम् अदन्तम्** = उस अन्न को खाते हुए को **अहम् अन्नम् अद्मि** = मैं अन्न खा जाता हूँ अर्थात् नष्ट कर देता हूँ।

विनय : इस मन्त्र के माध्यम से स्वयं परम ब्रह्म परमेश्वर उपदेश करते हैं कि हे मनुष्यो! जब पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि पदार्थ उत्पन्न नही हुए थे तब भी मैं परमात्मा सर्वत्र विद्यमान था, मैं ही अमृत सुख मोक्ष आनन्द का प्रदाता हूँ। मेरा यह नियम है कि जो स्वयं विद्वान् बनकर भी दूसरों को उपदेश नहीं करता है मैं उसकी विद्या का नाश कर देता हूँ तथा जो विद्या पढ़कर विद्वान् बनकर दूसरों को भी विद्यादान करता है मैं उसकी विद्या को बढ़ाता हूँ। वास्तव में जो ऐसा परोपकारी विद्वान् पुरुषार्थ पूर्वक विद्या का प्रचार–प्रसार करता हुआ अपनी एवं दूसरों की रक्षा करता है वह सदैव प्रशंसनीय होता है।

इस मन्त्र के दूसरे पक्ष में अलंकारिक वर्णन के माध्यम से अन्न कहता है– कि मैं ही सब पदार्थो से पहले महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ हूँ। मेरी महिमा सबसे पहले है। जो पुरुष विद्वान् अतिथियों अथवा अन्य प्राणियों को खिलाकर खाता है, वह अपनी व दूसरों की रक्षा करता हुआ प्रसिद्धि को प्राप्त होता है और जो केवल अपना ही पेट भरता है, दूसरों को अन्न आदि का दान नहीं करता है वह कंजूस अपना नाश कर लेता है।

पद्यार्थः *सुख दाता अमृत का दाता, सबका ज्ञान प्रदाता मैं।*
विद्युत, वायु आदि देवों के, पहले से भी पहले मैं।।
जो निरभिमानी ज्ञानी होकर, मेरा काम बढ़ाता है।
मेरा सच्चा विमल पुत्र बन, मुझको वह पा जाता है।।
जो मेरी उपभोग वस्तुएँ, हो कृपण अकेला खाता है।
कर देता हूँ नष्ट उसे मैं, मेरा प्यार न पाता है।।
चेतो जागो उठो उठाओ, मेरी आज्ञा को मानो।
बाँटो बन उदार हृदय, स्वामी सम्पत्ति मुझको जानो।। ■

दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली
चलभाष : ८१३०५८६००२

सम्पादकीय

शहरों और मार्गों के विदेशी आक्रान्ताओं के नाम बदले जाने हेतु आयोग के गठन की याचिका अस्वीकार

कैसे होगी हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा?

२७ फरवरी को उच्चतम न्यायालय ने वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय द्वारा विदेशी आक्रान्ताओं के नाम पर शहरों और मार्गों के नाम परिवर्तन हेतु आयोग गठित किए जाने हेतु भारत सरकार को निर्देश देने सम्बन्धी माँग वाली याचिका पर विचार करने को अस्वीकार कर दिया। उपर्युक्त याचिका को अस्वीकार ही नहीं किया है अपितु याचिका प्रस्तुत किए जाने के मन्तव्य को लेकर आपत्ति प्रकट करते हुए सख्त टिप्पणी भी की है।

वैसे तो देश के बहुसंख्यक वर्ग और देश की मूल धर्म–संस्कृति के दृष्टिकोण से यह निर्णय हतप्रभ करने वाला, सामान्य व्यक्ति की भावनाओं को आहत करने वाला प्रतीत होता है और वह भी तब, जब निर्णय देने वाली बेंच के एक न्यायमूर्ति के एम जोसेफ सनातन धर्म–संस्कृति की विचारधारा के न हो।

यहाँ हमें मात्र भावनाओं में बहकर किसी निर्णय पर पहुँचने के पूर्व अपने विवेक का उपयोग कर विचार करना चाहिए कि क्या न्यायमूर्ति के पद पर आसीन व्यक्ति अपनी स्वैच्छा से कुछ भी निर्णय देने के लिए स्वतन्त्र है अथवा वह जो चाहे निर्णय दे सकता है इस प्रश्न का उत्तर यह होगा कि एक सामान्य व्यक्ति जो प्रशासनिक, न्यायिक व्यवस्थाओं से अनभिज्ञ होता है वह तो अपनी कुछ भी अवधारणाएँ अपने मन–मस्तिष्क में बना सकता है और बनाता भी है किन्तु वास्तविक धरातल पर ऐसा होता नहीं है। न्यायालय संविधान के अन्तर्गत निर्मित व्यवस्था पर अपना कार्य करता है। जब देश का संविधान धर्मनिरपेक्ष है तो इस बात का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता कि यहाँ की धर्म–संस्कृति कौन सी थी और कौन यहाँ का है और कौन बाहरी तथा कौन आक्रान्ता है और कौन देवदूत। जो सनातन धर्म–संस्कृति के अनुयाइयों के लिए आक्रान्ता हो सकता है किसी और विचारधारा के लिए वह देवदूत भी हो सकता है, आप कैसे निर्णय करोगे ? और जब संविधान के धर्मनिरपेक्ष ताने–बाने ने सबको अपनी–अपनी मान्यताओं के पालन–पोषण और सम्वर्धन की निर्बाध,स्वछन्दता प्रदान की हो तो इस माँग वाली याचिका पर आपत्ति उठना स्वाभाविक भी है और न्यायालय ने इसी धर्मनिरपेक्ष स्वरूप का उल्लेख अपनी टिप्पणी में किया भी है।

अब इस याचिका विषय को यहाँ विराम देकर इस विषय पर कुछ अन्य प्रकार से विचार करते हैं। भारत देश की स्वतन्त्रता का एक दीर्घ संघर्षमय काल रहा है। ना तो भारत देश खेल–खेल में परतन्त्र हुआ और ना ही हास्य–विनोद में स्वतन्त्र हुआ और मुझ अल्पज्ञ की बुद्धि में सम्पूर्ण भूगोल में किसी अन्य भूखण्ड

का इतिहास इस प्रकार की परतन्त्रता और स्वतन्त्रता का नहीं है। सैकड़ों वर्ष तथा सहस्त्रों प्राणों की आहुति के पश्चात् हमने स्वतन्त्रता पाई है। प्रश्न उपस्थित होता है कि स्वतन्त्रता किस बात की ? क्या स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रयास मात्र सत्ता प्राप्ति के लिए था ? वह भी नहीं हो सकता क्योंकि संविधान का वर्तमान धर्मनिरपेक्ष स्वरूप जो भारतीय नागरिक है वह किसी भी मत–पंथ, सम्प्रदाय, विचारधारा, प्रचलित वेद विरुद्ध जन्मना जाति, आस्तिक–नास्तिक, साक्षर–निरक्षर, कैसा भी हो प्रत्येक को निर्वाचन में भाग लेने का अधिकार देता है। वह मतदान से लेकर देश के शीर्षस्थ पद प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, गृहमन्त्री, मुख्य न्यायाधीश, सेनाध्यक्ष आदि किसी भी पद पर पात्रता अनुरूप आसीन हो सकता है और हुए भी है। मैं जहाँ तक समझता हूँ कि नगरों और मार्गों के विदेशी विधर्मी आक्रान्ताओं के नाम परिवर्तन की बात तो बहुत सामान्य सी बात है किन्तु अगर कोई व्यक्ति ऐसा है जो इन आक्रान्ताओं के कुल–वंश का भी है और होगा भी तो हमारा संविधान उसे किसी भी पद पर किसी भी प्रकार से आसीन होने से नहीं रोकता तथा तब तक नहीं रोकता जब तक वह निर्धारित पात्रता को पूर्ण नहीं करता। इस प्रकार प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है कि हमने सत्ता के लिए ही संघर्ष नहीं किया और देश की लगभग १३५ करोड़ जनसंख्या सभी तो प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, सांसद, विधायक, सरपंच, निकाय अध्यक्ष, पार्षद, पंच बनने से रही। इस सम्बन्ध में देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को अक्षुण रखते हुए सनातन धर्म–संस्कृति जो इस धरा की मूल सभ्यता–संस्कृति है और बहुल जनसंख्या की आस्था का केन्द्र होने से भी बहुमत का सिद्धान्त मुझे इसकी अनुमति देता है कि मैं इसकी शास्त्रोक्त अवधारणा को भी यहाँ स्पष्ट करूँ। '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी पर वास करने वाले व्यक्तियों का समूह एक परिवार है। '**भवत्येक निडम्**' अर्थात् सम्पूर्ण संसार एक घोंसले के समान है। '**सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया:...**' अर्थात् सब सुखी हों,सभी नीरोग रहे जैसी उदात्त भावनाएँ सनातन धर्म–संस्कृति को उदात्त और उदार बनाती हैं इसमें लेशमात्र भी अपने–पराए, घृणा–विद्वेष का स्थान नहीं। इन तथ्यों के प्रकाश में पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि सत्ता प्राप्ति हमारी स्वतन्त्रता प्राप्ति का लक्ष्य नहीं था, नहीं है और ना ही रहेगा। इतिहास साक्षी है, सनातन धर्म–संस्कृति के जाजवल्यमान नक्षत्र मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी और योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी हमारे आदर्श महापुरुष है जिन्होंने सत्ता को गेंद के मानिन्द ठोकर मार दी। प्रश्न वहीं आकर पुन: उपस्थित हो गया कि जब हमें सत्ता की भूख नहीं थी तो फिर हम लड़े क्यों ? क्यों हम प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणों को होम करते चले गए ?

आखिर क्यों ? क्यों ? ? क्यों ? ? ?

इस देश में कमी नहीं है बुद्धिजीवियों की, अनेक मनीषी विद्वान्, चिन्तक हैं। कोई कठिन प्रश्न भी नहीं है जो इस प्रश्न का उत्तर न खोज सके। हो सकता है सबके उत्तर अलग–अलग भी हो किन्तु मुझ अल्पज्ञ की बुद्धि में इसका एक ही उत्तर है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति का एकमात्र लक्ष्य था– **सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा।** किसी के लिए देश भूमि का एक खण्ड हो सकता है जिसकी सीमाएं हो सकती है किन्तु हमारे लिए राष्ट्र होता है जिसमें हमारे सांस्कृतिक मूल्य अन्तर्निहित होते हैं। सनातन धर्म–संस्कृति की विचारधारा में विश्वास रखने वाला व्यक्ति ईश्वर के प्रति अटल विश्वासी होता है और इस संसार को अपने परम पिता का घर मानते हुए सम्पूर्ण भूगोल में कहीं भी रहे वहाँ उसकी विचारधारा की सत्ता हो या ना हो उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता वहाँ पर भी वह अपनी पूर्णरूपेण मानवीय मूल्यआधारित सांस्कृतिक धरोहर–विरासत को नहीं छोड़ता और छोड़ देता है तो फिर वह सनातनधर्मी नहीं होता। बस यही एक ऐसी धरोहर थी जिसके लिए हम सब कुछ त्यागने को तत्पर थे और त्यागा भी, मात्र धन–सम्पदा ही नहीं, असंख्य नौनिहालों ने अपने प्राण तक त्यागे। हाँ यह अवश्य है कि जो सत्ता के केन्द्र में होता है वह अपनी विचारधारा को अपने से भिन्न विचाराधारा के अन्य व्यक्तियों के ऊपर येन–केन–प्रकारेण कैसे भी थोपता है। हमारी स्वतन्त्रता प्राप्ति का मूल उद्देश्य सम्पूर्ण मानव जाति की हितकारी, विराट, व्यापक सनातन धर्म–संस्कृति के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा का था। अब जब स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई तो विचार उत्पन्न होता है और स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष व्यतीत हो जाने पर अमृत महोत्सव की बेला में तो अवश्य विचार उत्पन्न होना चाहिए कि क्या यही '**स्व**' (अपना) '**तन्त्र**' (शिक्षा और कानून व्यवस्था) है ? जिसके लिए हम लड़े थे ऐसा प्रतीत होता है कि जिस स्वतन्त्रता के लिए हम लड़े थे वह आधी अधूरी है अभी पराधीनता की बेड़ियाँ शेष हैं। इन परिस्थितियों में मेरे ऋषि दयानन्द के द्वारा पराधीनता के काल में वर्ष १८७५ में अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा गया यह वाक्य '**कोई कितना ही करें, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अर्थात् मत–मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए के पक्षपात से रहित प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है**' कैसे सार्थक होगा ? मानव जाति के श्रेष्ठ संविधान मनुस्मृति को उसके मूल देश में ही जलाया जाता हो और जलाने वाले निर्भय, निर्बाध विषवमन करते हो, शिक्षा में आज भी लॉर्ड मैकाले का साम्राज्य स्थापित है और लॉर्ड मैकाले की कुटिल योजना कि भारतीय शरीर से तो भारतीय दिखेंगे किन्तु मन–मस्तिष्क से पूर्णत: अंग्रेज होंगे और ये अपनी संस्कृति से घृणा करेंगे, को हम पूर्ण परिश्रम और निष्ठा से सफल सार्थक कर रहे हैं क्योंकि हमें डॉक्टर ,इंजीनियर, कलेक्टर, मैनेजर, मास्टर, जज, वकील, क्लर्क, बिजनेसमैन आदि–आदि की आवश्यकता है, एक आवश्यकता नहीं है तो केवल और केवल मानवीय गुणों से युक्त मनुष्य की नहीं। यही कारण है कि वर्तमान में हमारी भावी पीढ़ी के मन–मस्तिष्क से हमारी सांस्कृतिक विरासत समाप्त प्राय: हो गई हैं,तो हम स्वतन्त्र कैसे ? हमारा यह गुणगान करना कि ऋषि दयानन्द का देश की स्वतन्त्रता में अहम् योगदान है क्या वास्तविक धरातल पर यह ठीक प्रतीत होता है ? क्या मेरे ऋषि ने और उनके असंख्य सच्चे शिष्यों ने इसी स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राण आहूत किए थे ? जब हम मात्र विदेशी, विधर्मी आक्रान्ताओं के नाम बदले जाने की भिक्षा माँग रहे हो और हमें दुत्कार कर भगा दिया जाए, जब सनातन धर्म–संस्कृति की धुर विरोधी अमानवीय विचारधाराएं कुकुरमुत्तों की तरह फल–फूल रही हो तो पुन:–पुन: प्रश्न उपस्थित होता है कि हम स्वतन्त्र कैसे ? महाभारत काल के पश्चात् सनातन धर्म–संस्कृति पर लगी दीमक पल–प्रतिपल इसे खोखला किए जा रही है। वर्तमान के विकासशील कहे जाने वाले युग में भी उस देश में जो ऋषिकाओं का देश रहा है महिलाओं को वेदमन्त्र पाठ करने तथा यज्ञोपवित धारण करने आदि पर प्रश्न उठाए जा रहे हो, जन्मना जातिवाद, अवतारवाद, गुरुडमवाद, जड़पूजा, चमत्कारवाद, जादू–टोना, बलिप्रथा, भ्रूण हत्या, नारी शोषण–उत्पीड़न, अलगाववाद, भोगवाद, परस्पर वैमनस्य, अविश्वास, अन्धविश्वास, पाखण्ड मात्र फल–फूल ही नहीं रहे अपितु सिर चढ़कर बोल रहे हो तो हम स्वतन्त्र कैसे ? महर्षि दयानन्द की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर आर्यों को स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पुन: एक बार हुँकार भरना होगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्घोष वेदों की ओर लौटो सार्थक करना होगा और यह तभी सम्भव है जब हमारी शिक्षा और कानून व्यवस्था वेदानुकूल हो। हम जब तक ऐसा नहीं कर पाते तब तक मेरे ऋषि का स्वप्न तथा वेद का सन्देश **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** अपूर्ण ही है। विदेशी आयातित कानून और शिक्षा से पोषित–पल्लवित कर्णधारों से आशा करना मरुस्थल में पानी का स्वप्न संजोना मात्र है। ■

मानवता के अवतार : आर्य शिरोमणि श्री रामचन्द्र जी

✍ पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

श्रीराम थे तपस्वी, ईश्वर भक्त महान।
सारा जग श्रीराम के, गाता है गुणगान।।
मात–पिता के भक्त थे, गुरुओं के थे भक्त।
सन्तों के सेवक सुघड़, दुष्टों को थे सख्त।।
विनम्रता की मूर्ति थे, महावेद विद्वान्।
साहस, बल के पुंज थे, भारत की थे शान।।
प्रजा वत्सल राम ने, किये धर्म के काम।
महावीर धर्मात्मा, का है ऊँचा नाम।।
दुनिया के नर–नारियों! सुनो लगाकर ध्यान।
भक्त बनो श्रीराम के, यदि चाहो कल्याण।।

युग नायक जगत् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज इस युग में ऐसे महापुरुष हुए जिन्होंने संसार को वेदों की ओर लौटो का सन्देश देकर समस्त विश्व के विद्वानों को चौंका दिया था। स्वामीजी के समय पोंगा पंथी पाखण्डियों महीधर, सायण जैसे लोगों ने वेदों का गलत अर्थ करके भारत की सभ्यता–संस्कृति को कलंकित कर दिया था। इसका लाभ विदेशी–विधर्मी, ईसाई–मुसलमान उठा रहे थे। मैक्स मूलर जैसे पाश्चात्य लोगों ने वेदों को गड़रियों के गीत बताकर हमारी हँसी उड़ाना शुरू कर दिया था।

उस समय पौराणिकों ने श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्णचन्द्र जी जैसे महान् पुरुषों को ईश्वर का अवतार बताकर निराकार ईश्वर को जन्म–मरण के बखेड़े में डालने की कुचेष्टा करके महापाप किया था। इस वेद विरुद्ध घोषणा का परिणाम था, भारतवासियों का आलस्य–प्रमाद में फँसकर भाग्यवादी एवं अकर्मण्य कायर बन जाना।

महर्षि दयानन्द जी ने वाल्मीकि रामायण व महाभारत को भारत के गौरवशाली इतिहास ग्रन्थ सिद्ध किया। स्वामीजी ने पुरजोर घोषणा की कि **''श्री रामचन्द्र जी वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम थे तथा श्री कृष्णचन्द्र जी योगिराज थे।''** उनके चरित्र की पूजा करो, चित्र की पूजा करने से कल्याण नहीं होगा। वास्तव में सर्व विश्व पर महर्षि दयानन्द जी का भारी ऋण है जो वेद प्रचार द्वारा ही चुकाया जा सकता है।

इस लेख द्वारा मैं संसार को वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी की महानता का वाल्मीकि रामायण के आधार पर एक उनके जीवन का प्रसंग लिखकर सुमार्ग पर लाने का यत्न कर रहा हूँ। आशा है संसार के सब नर–नारी धर्मलाभ उठाकर अपना जीवन निर्माण करके पुण्य के भागी बनेंगे।

जिस समय श्री रामचन्द्र जी व लंकापति रावण का घोर युद्ध हुआ और रावण युद्ध करते–करते मारा गया तो अपने भाई रावण को रणभूमि में मरा हुआ देखकर विभीषण रोकर कहने लगा– **''आज नीति का सेतु धर्म का विग्रह, शास्त्र जानने वालों का गुरु भूमण्डल को त्याग गया। आज सूर्य पृथ्वी पर और चन्द्रमा अन्धकार में पतित हुआ चाहता है।''**

विभीषण का विलाप सुनकर उसे सांत्वना देते हुए श्रीराम बोले– **''मित्र! यह रावण शोक करने के योग्य नहीं है क्योंकि यह असमर्थ एवं दीन होकर नहीं मरा किन्तु बड़े उत्साह और विक्रम से लड़ता हुआ, मेरे शस्त्र बल से यह मरा है।''**

युद्ध में विजय निश्चित नहीं होती। युद्ध में या तो शत्रु के हाथों से मरना होता है या शत्रु मारा जाता है। पुराने ऋषियों की यह मर्यादा चली आती है कि जो क्षत्रिय युद्ध में वीरों की मौत मरे वह शोक के योग्य नहीं। अब इसका वैदिक विधि से अंत्येष्टि संस्कार करो। याद रखो, वैर तो जीवितों से होता है। अब यह मेरे लिए भी वैसा ही है जैसा तुम्हारे लिए।

नेव्यान्त विजयो युद्धे भूत पर्वः कदाचन।
परै र्वा हन्यते वीरः परान्वा हन्ति संयुगे।। *–१०९/१७*
इयं हि पूर्वः संदिष्टा गतिः क्षत्रिय सम्मता।
क्षत्रियो निहतः सख्ये न शोच्यः इति निश्चयः।। *-१०९/१८*
मरणान्तानि वैराणि निवृत्त न प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।। *–१०९/१९*

रावण की मृत्यु सुनकर अन्त:पुर में उसकी रानियाँ उसकी मृत देह के पास विलाप करने लगी। कोई उसके दोनों पाँवों को पकड़कर, कोई गले से लिपट कर, कोई दोनों भुजाओं को उठाकर, कोई उसके मुख को देखकर रोने लगी। कोई उसका सिर गोद में रखकर उसके मुख को देखती हुई नेत्र जलों से उसके मुख कमल को आर्द्र कर देती थी।

अन्त में सब बोलीं– **''नाथ! यदि तुम सीता को राम को अर्पण कर देते तो यह विपद हम पर न आती और हम सब विधवा न होतीं। राक्षस राज! तुमने सीता को रोकने से राक्षसों, हमें और अपनी आत्मा तीनों को नीचे गिरा दिया है।''**

मन्दोदरी बोली– ''प्रभो! बुद्धि रखते हुए भी आपने सीता के कारण मानो मृत्यु को दूर से अपने लिए बुलाया है। अब तुम्हारे मरने से मैं भी सब प्रकार के भोगों से शून्य (हीन) हो रही हूँ। इसलिए धिक्कार है राजाओं की चंचल मति को। राजन्! आप तो बड़े प्रकाश और तेज वाले थे। अब पुष्प माला पहनने वाला आपका सुन्दर मुख क्यों नहीं शोभा देता? स्वामिन्! अब आप मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो? प्राणनाथ! मुझ दुखियारी को भी अपने साथ ले चलो। मैं आपके बिना यहाँ जीवित नहीं रह सकती।''

नहिं त्वं शोचितव्यो मे प्रख्यातबल पौरुष।
स्त्री स्वभावातु मे बुद्धि कारूण्ये परिवर्तते।। –१११/७४
सुकृतं दुष्कृतं चत्वं गृहीत्वा स्वांगति गत।
आत्मान मनु शोचामित्वहि नाशेन सुखीत्वम्।। –१११/७५
सुहृदां हित कामानां न श्रुतं वचन त्वया।
भ्रातृनाम चैव कालस्नयेन हित मुक्तं दशानन।। –१११/७६
हेततर्थ युक्तम् विधिवच्छेयस्य करम दारूणम्।
विभीषणे नाभि हितं न कृतं हेतु मत्त्वया।। –१११/७७
मारीच कुम्भकरणाभ्यां वाक्यं मम पितुस्तथा।
न कृतं वीर्यमत्तेन तस्येदं, फलमीदृशम।। –१११/७८

वीर तुम शोक के योग्य नहीं क्योंकि तुम वीरों की भाँति ही युद्ध में मरे हो। मैं केवल स्त्री स्वभाव से अपने दुःखों को रोती हूँ। तुम तो शुभ–अशुभ कर्मों के अनुसार योग्य गति को गए हो। हाँ तुमने हितकारी मित्रों और भाइयों के हितकर वचन न सुने, युक्ति और अर्थ वाला जो विभीषण का शुभ व नम्र वचन था वह भी तुमने न माना। मारीच, कुम्भकरण, मेरे माता–पिता तथा मेरा भी हितकर वाक्य भी न सुना। उसी का आज यह फल मिल रहा है।

यह सब सुनकर श्री रामचन्द्र जी विभीषण से बोले– ''हे भाई! अब अपने भाई का अन्तिम संस्कार करो और स्त्रियों को शान्तिकारी उपदेश देकर शान्त करने का यत्न करो।''

संस्कारः क्रियतां भ्रातुः स्त्रीगणः पारिसान्त्व्यताम्।। –१११/८२

तब विभीषण बोला– हे राम! मैं इस परस्त्री लम्पट का संस्कार न करूँगा। यह दुराचार के कारण मेरा भाई होने पर भी मेरा शत्रु है। यदि मैंने इसका संस्कार कर दिया तो लोग मेरी भारी निन्दा करेंगे।

विभीषण का वचन सुनकर राम ने कहा– ''विभीषण! यद्यपि रावण अधर्मी था किन्तु यह प्रसिद्ध पुरुष व बली था। इसका संस्कार तुम अवश्य करो क्योंकि वैर भाव तो सदा जीवितों से होता है। अब यह मर गया और हमारा काम (प्रयोजन) पूरा हो गया है। अब कोई राग–द्वेष की बात मत करो। तुम इसके संस्कार से अपयश के स्थान पर यश के पात्र बनोगे।

चितां चन्दन काष्ठेश्च पद्मकोशीर चन्दनैः।
ब्रह्म पासंक्तियाम सूरां कवास्तणाकृताम्।। –१११/११३
प्रचक्रू राक्षेश्द्रस्य पितृ मेघ भतृत्तमम्।
वेदिं च दक्षिणा प्राचीं यथास्थानं च पावकम्।। –१११/११४
पृषधज्येन सम्पूर्ण स्त्रवं स्कंध प्रचि क्षिपुः।। –१११/११५

श्री राम के आदेश के अनुसार विभीषण ने लंका में जाकर रावण के अन्त्येष्टि संस्कार के लिए सुन्दर सुगन्धित चन्दनादि काष्ठ, अगर–तगर आदि औषधि, घृत, अग्नि और अग्निहोत्र कराने वाले, याजक ब्राह्मण और रावण के शव को सुन्दर राजाओं के योग्य शिवका (पालकी) में बड़े ठाठ से रख वेदी स्थान में पहुँचाया और वहाँ दक्षिण–पूर्व दिशा में विधि के अनुसार रावण के शरीर का अन्तिम संस्कार किया जिसे सर्वोत्तम पितृमेध यज्ञ कहा जाता है।

यज्ञ के बाद वस्त्र सहित स्नान कर और स्त्रियों को सांत्वना देकर सब लोग अपने–अपने घर चले गए। यह था श्री रामचन्द्र भगवान का वैदिक मर्यादा का पालन करना–कराना। वास्तव में ही वे देवपुरुष थे। परमात्मा ऐसे महापुरुष इस देश में लाखों पैदा करे।

सज्जनों! थोड़ा विचार करो, ऐसा दूसरा उदाहरण भारत देश से बाहर किसी अन्य देश में मिल सकता है? आर्यावर्त के राजा वास्तव में महान् थे। ऐसे ईश्वर भक्त धर्मात्माओं के कारण ही भारत का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य समस्त संसार में था। भारत के नेताओं को भी वैदिक मर्यादा का पालन करके अपना जीवन निर्माण करना चाहिए।

आज तो धर्म का स्थान धन ने ले लिया है। सारा संसार धन के पीछे अन्धा होकर दौड़ रहा है। आज संसार की हालत बहुत खराब है। जैसे–

होता है संसार में पैसा से सम्मान।
पैसा ही माँ–बाप है, पैसा है भगवान।।
पैसा है भगवान, अजब पैसे की माया।
पैसे ने है सकल, विश्व को नाच नचाया।।
पैसे से ही मित्र, यहाँ बनते हैं नेता।
बिन पैसे का यार, दिखाई एक न देता।।
सुख चाहो यदि मीत!, बनो सब पैसे वाले।
कंगालों को यहाँ, रोटियों के हैं लाले।।
लीडर बेईमान, देश को लूट रहे हैं।
चाँदी डाकू, चोर, कुचाली कूट रहे हैं।।

प्रिय पाठकों! देश के नेताओं ने देश आजाद कराने के लिए नारा लगाया था– **'गोरों को भगाएँगे, गऊओं को बचाएँगे, राम राज्य लाएँगे।'** राम राज्य न कांग्रेस ला सकी और इस सरकार का भी ढंग अच्छा नहीं दिख रहा।

इस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के सुझाए वैदिक मार्ग पर चलने की जरूरत है। तभी संसार सुखी बनेगा। अतः प्यारे युवकों और युवतियों! जागो और कुछ करके दिखाओ। श्रीराम और देवी सीता बन जाओ।

उठो साथियों! बढ़ो समर में, अब मत देर लगाओ तुम।
ओ३म् ध्वजा लेकर हाथों में, वैदिक नाद बजाओ तुम।।
राम बनो, लक्ष्मण बन जाओ, वेश केसरी धारो तुम।
बनो वीर हनुमान जवानों! दानव दल को मारो तुम।।
कहने से ना काम चलेगा, करके काम दिखाओ तुम।
'नन्दलाल' संसार बचाओ, राम राज्य फिर लाओ तुम।। ■

हमसफर कान्हरे, देशपाण्डे और कर्वे

अनन्त लक्ष्मण कान्हरे

विनायक नारायण देशपाण्डे

कृष्णगोपाल कर्वे

✍ **डोंगरलाल पुरुषार्थी**
प्रधान आर्य समाज, कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

लक्ष्मण कान्हरे, निकट मंच के जा बैठा,
जम गया देशपाण्डे भी बिल्कुल वहीं।
केवल कुछ गज की दूरी पर कर्वे बैठा,
बचकर शिकार वह किसी तरह जा सके नहीं।।
फिर तड़–तड़–तड़–तड़, पाँच गोलियाँ छूटी कुल,
जैक्सन धड़ाम से गिर, धरती पर ढेर हुआ।
उस दुष्ट कलेक्टर को वैसा ही दण्ड मिला,
उसके द्वारा जैसा घातक अन्धेर था हुआ।।

मि. साण्डर्स वध और असेम्बली में बम फेंकने के अपराध में क्रान्तिकारी योद्धा सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को दि. २३.३.१९३१ को फाँसी दी गई जो विश्व विख्यात् है। इन क्रान्तिकारियों के शहीद होने के पहले दि. १९.४.१९१० को क्रान्ति–वीर अनन्त लक्ष्मण कान्हरे, विनायक नारायण देशपाण्डे और कृष्णगोपाल कर्वे फाँसी के फन्दे पर झूले थे। दिनांक २१.१२.१९०९ को नासिक के विजयानन्द सभागृह में गोलियों की बौछार में कलेक्टर जैक्सन को छलनी कर दिया। जिससे सारे महाराष्ट्र और समूचे राष्ट्र में **'राष्ट्रीय चेतना'** की ज्वाला प्रज्वलित हुई थी। इसी महाराष्ट्र की पन्नाधाय ने अपने तीन सपूतों को भारत पर न्योछावर कर दिया। दो बड़े भाई दामोदर चापेकर और बालकृष्ण चापेकर ने अत्याचारी मि. रैण्ड और मि. आयरिस्ट को पिस्तौल द्वारा काम तमाम कर दिया। इन दो भाइयों को पकड़वाने एवं ईनाम की लालसा में गद्दार दो द्रविड़ बन्धुओं ने विश्वासघात किया। अस्तु इन गद्दारों को मौत के घाट उतारने के लिए तीसरा भाई वासुदेव चापेकर अपनी माँ से स्वीकृति के लिए– कवि सरलजी की मार्मिक पंक्तियाँ–

माँ! आशीष दो मुझे पूज्य अग्रजों–सा,
पावन पथ पर मैं भी अनुगमन करूँ।
मैं करूँ तुम्हारा दूध उजागर जग में,
जीवन देकर धरती माता को नमन करूँ।।
सावन–भादो घिर आए माँ की आँखों में,
रोके न रुकी दोनों आँखों से लगी झड़ी।
अपने बलि–पन्थी वीर–पुत्र की थी अनुपम छवि,
यह देख वह रह गई लुटी–लुटी ठगी–ठगी।।
हाँ कहती है दीपक वंश का बुझता है।
हाँ कहती है उसकी अपनी गोद उजड़ती।।
ना कहती है, मातृत्व कलंकित होता है।
बलि–परम्परा पर काली छाया पड़ती है।।
भावना कह रही थी उसे, हाँ मत कहना,
कर्तव्य कर रहा था प्रेरित, झट हाँ कर दे।
भावना कह रही थी, तू अपनी गोद बचा,
कर्तव्य कह रहा था, धरती की गोद भर दे।।
इस तुमुल द्वन्द्व में विजय हुई कर्तव्य की,
हृदय में रह गई भावना कसमसा कर।
आँखें बहती रही, हाथ उठा आशीष भरा,
टिक गया वीर बेटे के मस्तक पर जाकर।।

वैसे धरती पर कुछ दाने पड़ते हैं और अनेकों दाने पैदा हो जाते हैं। इसी भाँति एक क्रान्तिकारी शहीद होता है तो और दूसरे तैयार हो जाते हैं। १ जुलाई १९०९ में वीर मदनलाल धींगरा ने क्रान्तिकारियों का गुनाहगार सर कर्जन वायली को उसी के गृह नगर लन्दन में गोलियाँ बरसाकर चेहरा विकृत कर मौत की नींद सुला दिया। फलत: मदनलाल धींगरा क्रान्तिकारियों का हीरो (नायक) बन गया और विश्व में वह **'शेर–ए–दिल'** की उपाधि से अलंकृत हो गए। बंगाल के बम निर्माता सुशील कुमार सेन के बमों का विस्फोट करने की जिम्मेदारी खुदीराम बोस और प्रफुल्ल कुमार चाकी ने मि. किंग्सफोर्ड की बग्घी पर फेंका। ठीक ऐसे ही लक्ष्मण कान्हरे शहीद मदनलाल धींगरा का अनुगामी तो बना किन्तु कान्हरे को पिस्तौल कहाँ से प्राप्त हुई। वह घटना इस प्रकार है– लन्दन से आए हुए जहाज की सवारियाँ ज्यों ही बम्बई बन्दरगाह पर उतरी, तो कस्टम के अधिकारियों ने यात्रियों की तलाशी शुरू कर दी। एक व्यक्ति की तलाशी लेते हुए अधिकारी ने पूछा– आपका नाम? व्यक्ति ने कहा– चतुर्भुज अमीन। आपके पास कोई आपत्तिजनक सामान तो नहीं है? जी नहीं! अधिकारी ने सरसरी तौर से सामान को टटोला और उसे जाने की इजाजत देने ही वाला था और सवाल किया– लन्दन से आप कहाँ से आए हैं? चतुर्भुज ने कहा– जी! मैं लन्दन में भारतीय भवन में रहता हूँ। भारतीय भवन का नाम सुनते ही अधिकारी के कान खड़े हो गए। यात्री को ऊपर से नीचे तक देखने के बाद कहा– वही भारतीय भवन जिसमें भारत के क्रान्तिकारी ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ षड्यन्त्र रचते हैं? चतुर्भुज ने कहा– मुझे ऐसी कोई जानकारी नहीं है। मुझे इतना मालूम है वहाँ भारत के विद्यार्थी रहते हैं और कॉलेज की पढ़ाई करते हैं। अधिकारी बोला– मुझे

तो जानकारी है कि तुम्हारे भारतीय भवन में बम और पिस्तौलें बनाने का हुनर सीखते हैं। अच्छा, यह बताओ कि आप वहाँ कौनसा हुनर सीखते हो? चतुर्भुज– जी! मैं वहाँ कोई हुनर नहीं सीखता, बल्कि मैं भारतीय भवन का रसोइया हूँ। अधिकारी ने चतुर्भुज का बड़ा सन्दूक खोलकर सामान को बाहर निकालकर देखा, तब जाकर उसको सन्तोष हुआ। और जाने की इजाजत दे दी। बाद में चतुर्भुज अमीन ने सामान यथावत जमा लिया। और हम्माल सामान लेकर चल दिया। अगर चतुर्भुज एकान्त में होता तो जोर–जोर से हँसता। क्योंकि कस्टम अधिकारी को उसने उल्लू बनाया था। अधिकारी जिस सन्दूक की तलाशी ले चुका था, उसमें एक और पेन्दी लगवाकर उसमें बीस ब्राउनिंग पिस्तौलें रखी हुई थीं। क्योंकि ये शस्त्र लन्दन से वीर सावरकर ने भारतीय क्रान्तिकारियों के लिए भेजे थे।

महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियों के सामने उस समय एक बड़ा काम था। वे नासिक के कलेक्टर मि. जैक्सन की हत्या करना चाहते थे। वे जैक्सन की हत्या इसलिए करना चाहते थे क्योंकि उसने राष्ट्रीय कविताएँ लिखने पर गणेश दामोदर सावरकर को आजीवन कारावास की सजा देकर काले पानी भिजवाया था। नासिक के क्रान्तिकारी कलेक्टर जैक्सन की हत्या की योजना बना चुके थे। इस योजना को क्रियान्वित करने में सबसे अधिक उत्साह जिस नौजवान ने दिखाया था, वह अनन्त लक्ष्मण कान्हरे ही थे। कान्हरे औरंगाबाद का निवासी और अभिनव भारत संस्था का सदस्य था। कान्हरे, मदनलाल धींगरा से प्रेरित था, वह चाहता था कि जिस तरह लन्दन में मदनलाल धींगरा ने कर्जन वायली की हत्या की थी, वह भी महाराष्ट्र में मि. जैक्सन की हत्या करके अंग्रेजों को सिखाए कि भारतीय नौजवान किसी भी अन्याय का बदला लेने की क्षमता रखते हैं। किसी भी परिस्थिति से वह विचलित नहीं होगा। यह प्रमाणित करने के लिए कान्हरे ने मदनलाल धींगरा की भाँति एक जलती हुई चिमनी के ऊपर अपनी हथेली कर ली और दो मिनट तक वह जलती लौ पर हथेली रखा रहा।

जैक्सन की हत्या का दिन २१ दिसम्बर १९०९ निश्चित किया गया। जैक्सन का स्तानान्तर पूना हो चुका था। उसके कार्यालय के कर्मचारियों ने उसके विदाई समारोह के अन्तर्गत दि. २१.१०.१९०९ को नासिक के विजयानंद सभागृह में रात्रि को 'शारदा' नाम का नाटक अभिनय करना निश्चित था। लक्ष्मण कान्हरे और सहयोगी साथी सभा भवन में पहले ही अपनी स्थिति ले चुके थे। कान्हरे के सहयोगी में विनायक नारायण देशपाण्डे के घर पर क्रान्तिकारियों की बैठक हुई और सभी को जो लन्दन से चतुर्भुज अमीन हथियार लाया था, वितरित किये गये। कान्हरे को ब्राउनिंग पिस्तौल तथा देशपाण्डे, कर्वे को निकेल–प्लेटेड रिवॉल्वर दिये गये। इनके द्वारा यह तय किया गया कि यदि कान्हरे का निशाना चूकता है तो देशपाण्डे आक्रमण करेगा और उसके बाद कृष्णगोपाल कर्वे। जिस स्थान पर कलेक्टर जैक्सन के बैठना की व्यवस्था की गई थी, उसके बहुत निकट ही कान्हरे ने अपनी स्थिति जमा रखी थी। वह उस स्थान पर बैठा हुआ था जिस रास्ते को पार करके मि. जैक्सन को अपनी निश्चित जगह तक पहुँचना था।

निश्चित समय पर जैक्सन सभागृह पहुँचा। वह आगे–आगे था और उसकी अगवानी करने वाले लोग उसके कुछ पीछे थे। जैसे ही वह कान्हरे के पास से निकला, कान्हरे ने अपनी पिस्तौल से एक गोली दाग दी। पर निशाना खाली गया और तनिक भी देर किये बिना उसने दूसरी गोली दाग दी जो कि जैक्सन की बाँह में जाकर लगी। कुछ लोग तो यह समझ रहे थे कि जैक्सन की अगवानी में पटाखे छोड़े जा रहे हैं। जब गोली खाकर जैक्सन जमीन पर गिरा, तब लोगों को समझ में आया कि पटाखे नहीं गोलियाँ दागी जा रही हैं। जैक्सन के गिरने पर भी कान्हरे ने उसके शरीर पर कई गोलियाँ दागकर उसे छलनी कर दिया। कुछ लोग कान्हरे पर टूट पड़े और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। जैक्सन की मृत्यु घटनास्थल पर ही हो चुकी थी। मि. जैक्सन नासिक से पूना विदा होने के बजाय वह इस दुनिया से ही विदा हो गया।

अनन्त लक्ष्मण कान्हरे, विनायक नारायण देशपाण्डे, कृष्णगोपाल कर्वे और चार दूसरे व्यक्तियों पर मि. जैक्सन की हत्या का मुकदमा चला और २९ मार्च १९१० को फैसला सुनाया गया। इस फैसले के अनुसार कान्हरे, कर्वे और देशपाण्डे को फाँसी की सजा सुनाई गई तथा तीन दूसरे अभियुक्तों को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया तथा एक अन्य अभियुक्त को केवल दो वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। बम्बई के निकट थाना की विशेष जेल में दि. १९.४.१९१० को कान्हरे, कर्वे और देशपाण्डे को फाँसी के फन्दों पर झुला दिया गया। जो कि महराष्ट्र और भारत माता के ये सपूत एक साथ मृत्यु के हमसफर बने। जो आगे चलकर दिनांक २३.३.१९३१ को सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ये त्रिदेव भी जीवन की अन्तिम यात्रा के हमसफर बने।

नाटक दुःखान्त था, था उसका परिणाम यही,
लक्ष्मण कान्हरे, कर्वे और देशपाण्डे लटके।
भारत माता की जय के नारे लगा–लगाकर,
फाँसी के फन्दों पर वीर क्रान्तिकारी सपूत लटके।। (सरलजी)

क्रान्तिकारियों को कोई भय डरा नहीं सकता।
खड़ी हो मौत सामने, वह डर नहीं सकता।।
जला दो, गला दो, कर दो तन की बोटियाँ।
सच यह है, क्रान्तिकारी कभी मर नहीं सकता।।

अस्तु वतन पर शहीद होने वाले वीरों को कोटि–कोटि नमन।

(जय भारती) ■

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज झोकर, जिला : शाजापुर, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में दिनांक १२ फरवरी २०२३ को ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के २००वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में ग्राम झोकर के चौक बाजार स्थित राजाभाऊ महाकाल मन्दिर प्रांगण में ऋषि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस अत्यन्त ही हर्षोल्लास के साथ यज्ञाहुति प्रदान कर मनाया गया। इसमें अतिथि के रूप में मक्सी से पधारे श्री ओमप्रकाश जी श्रीवास्तव 'कर्नल', झोकर से दयाराम जी सिसोदिया, रमेश जी इन्द्रिया पुरोहित आर्य समाज, प्रधान रमेश जी इन्द्रिया एडवोकेट, दीपक जी सोनी पूर्व प्रधान, नागपाल जी, जितेंद्र जी राठौर, ललित जी सोनी, आर्य अंकित राठौर भजन उपदेशक एवं समस्त आर्यजनों ने आहुति देकर ऋषि दयानन्द जी के जन्मदिवस पर उनके द्वारा राष्ट्र, धर्म संस्कृति रक्षार्थ दिए गए योगदान को स्मरण करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए।

कौन थे वीर सावरकर?

इन्द्रदेव गुलाटी

संस्थापक : नगर आर्य समाज,

बुलन्दशहर (उ.प्र.)

चलभाष : ८९५८७७८४४३

सिर्फ २५ बातें पढ़कर आपका सीना गर्व से चौड़ा हो उठेगा। इसको पढ़े बिना आज़ादी का ज्ञान अधूरा है आइए जानते हैं एक ऐसे महान क्रांतिकारी के बारे में जिनका नाम इतिहास के पन्नों से मिटा दिया गया। जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत के द्वारा इतनी यातनाएं झेलीं कि वीर सावरकर के बारे में कल्पना करके ही कायरों में सिहरन पैदा हो जायेगी। जिनका नाम लेने मात्र से आज भी हमारे देश के राजनेता भयभीत होते हैं क्योंकि उन्होंने माँ भारती की निःस्वार्थ सेवा की थी। वो थे हमारे **परमवीर सावरकर।**

१. वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी देशभक्त थे जिन्होंने १९०१ में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया की मृत्यु पर नासिक में शोकसभा का विरोध किया और कहा कि वो हमारे शत्रु देश की रानी थी, हम शोक क्यूँ करें? क्या किसी भारतीय महापुरुष के निधन पर ब्रिटेन में शोक सभा हुई?

२. वीर सावरकर पहले देशभक्त थे जिन्होंने एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह का उत्सव मनाने वालों को त्र्यम्बकेश्वर में बड़े-बड़े पोस्टर लगाकर कहा था कि गुलामी का उत्सव मत मनाओ।

३. विदेशी वस्त्रों की पहली होली पूना में ७ अक्तूबर १९०५ को वीर सावरकर ने जलाई थी।

४. वीर सावरकर पहले ऐसे क्रांतिकारी थे जिन्होंने विदेशी वस्त्रों का दहन किया, तब बाल गंगाधर तिलक ने अपने पत्र केसरी में उनको शिवाजी के समान बताकर उनकी प्रशंसा की थी जबकि इस घटना की दक्षिण अफ्रीका के अपने पत्र **'इन्डियन ओपीनियन'** में गाँधी ने निंदा की थी।

५. वीर सावरकर द्वारा विदेशी वस्त्र दहन की इस प्रथम घटना के १६ वर्ष बाद गाँधी उनके मार्ग पर चले और ११ जुलाई १९२१ को मुंबई के परेल में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया।

६. सावरकर पहले भारतीय थे जिनको १९०५ में विदेशी वस्त्र दहन के कारण पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज से निकाल दिया गया और दस रूपये जुर्माना किया जिसके विरोध में हड़ताल हुई। स्वयं तिलक जी ने **'केसरी'** पत्र में सावरकर के पक्ष में सम्पादकीय लिखा।

७. वीर सावरकर ऐसे पहले बैरिस्टर थे जिन्होंने १९०९ में ब्रिटेन में ग्रेज-इन परीक्षा पास करने के बाद ब्रिटेन के राजा के प्रति वफ़ादार होने की शपथ नहीं ली। इस कारण उन्हें बैरिस्टर होने की उपाधि का पत्र कभी नहीं दिया गया।

8. वीर सावरकर पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा ग़दर कहे जाने वाले संघर्ष को **'१८५७ का स्वातंत्र्य समर'** नामक ग्रन्थ लिखकर सिद्ध कर दिया।

९. **'१८५७ का स्वातंत्र्य समर'** विदेशों में छापा गया और भारत में भगत सिंह ने इसे छपवाया था जिसकी एक-एक प्रति तीन-तीन सौ रूपये में बिकी थी। भारतीय क्रांतिकारियों के लिए यह पवित्र गीता थी। पुलिस छापों में देशभक्तों के घरों में यही पुस्तक मिलती थी।

१०. वीर सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जो समुद्री जहाज में बंदी बनाकर ब्रिटेन से भारत लाते समय आठ जुलाई १९१० को समुद्र में कूद पड़े थे और तैरकर फ्रांस पहुँच गए थे।

१२. सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जिनका मुकदमा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में चला, मगर ब्रिटेन और फ्रांस की मिलीभगत के कारण उनको न्याय नहीं मिला और बंदी बनाकर भारत लाया गया।

१३. वीर सावरकर विश्व के पहले क्रांतिकारी और भारत के पहले राष्ट्रभक्त थे जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने दो आजन्म कारावास की सजा सुनाई थी।

१४. वीर सावरकर पहले ऐसे देशभक्त थे जो दो जन्म कारावास की सजा सुनते ही हंसकर बोले- 'चलो, ईसाई सत्ता ने हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म सिद्धांत को मान लिया।'

१५. वीर सावरकर पहले राजनैतिक बंदी थे जिन्होंने काला पानी की सज़ा के समय १० साल से भी अधिक समय तक आज़ादी के लिए कोल्हू चलाकर ३० पोंड तेल प्रतिदिन निकाला।

१६. वीर सावरकर काला पानी में पहले ऐसे कैदी थे जिन्होंने काल कोठरी की दीवारों पर कंकर कोयले से कवितायें लिखीं और ६००० पंक्तियाँ याद रखी।

१७. वीर सावरकर पहले देशभक्त लेखक थे, जिनकी लिखी हुई पुस्तकों पर आज़ादी के बाद कई वर्षों तक प्रतिबन्ध लगा रहा।

१८. वीर सावरकर पहले लेखक थे जिन्होंने हिन्दू को परिभाषित करते हुए लिखा कि :-

'आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारत भूमिका,
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरितीस्मृतः।

अर्थात् समुद्र से हिमालय तक भारत भूमि जिसकी पितृभूमि है, जिसके पूर्वज यहीं पैदा हुए हैं व यही पुण्य भूमि है, जिसके तीर्थ भारत भूमि में ही हैं, वही हिन्दू है।

१९.वीर सावरकर प्रथम राष्ट्रभक्त थे जिन्हें अंग्रेजी सत्ता ने ३० वर्षों तक जेलों में रखा तथा आजादी के बाद १९४८ में नेहरू सरकार ने गाँधी वध की आड़ में लाल किले में बंद रखा पर न्यायालय द्वारा आरोप झूठे पाए जाने के बाद ससम्मान रिहा कर दिया। नेहरू उनके राष्ट्रवादी विचारों से डरता था।

२०. वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी थे जब २६ फरवरी १९६६ को उनका स्वर्गारोहण हुआ तब भारतीय संसद में कुछ सांसदों ने शोक प्रस्ताव रखा तो यह कहकर रोक दिया गया कि वे संसद सदस्य नहीं थे जबकि चर्चिल की मौत पर शोक मनाया गया था।

२१. वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी राष्ट्रभक्त स्वातंत्र्य वीर थे जिनके मरणोपरांत २६ फरवरी २००३ को उसी संसद में मूर्ति लगी जिसमें कभी उनके निधन पर शोक प्रस्ताव भी रोका गया था।

२२. वीर सावरकर ऐसे पहले राष्ट्रवादी विचारक थे जिनके चित्र को संसद भवन में लगाने से रोकने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी ने राष्ट्रपति को पत्र लिखा लेकिन राष्ट्रपति डॉ.अब्दुल कलाम ने सुझाव पत्र नकार दिया और वीर सावरकर के चित्र अनावरण राष्ट्रपति ने अपने कर-कमलों से किया।

२३. वीर सावरकर पहले ऐसे राष्ट्रभक्त हुए जिनके शिलालेख को अंडमान द्वीप की सेल्युलर जेल के कीर्ति स्तम्भ से यूपीए सरकार के मंत्री मणिशंकर अय्यर ने हटवा दिया था और उसकी जगह गांधी का शिलालेख लगवा दिया था।

२४. वीर सावरकर ने दस साल स्वतंत्रता के लिए काला पानी में कोल्हू चलाया था जबकि गाँधी ने काला पानी की उस जेल में कभी दस मिनट चरखा नहीं चलाया।

२५. वीर सावरकर माँ भारती के पहले सपूत थे जिन्हें जीते जी और मरने के बाद भी आगे बढ़ने से रोका गया। पर आश्चर्य की बात यह है कि इन सभी विरोधियों के घोर अँधेरे को चीरकर आज वीर सावरकर सभी मे लोकप्रिय और युवाओं के आदर्श बन रहे हैं। ■

मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम् : श्री धर्मसिंहजी कोठारी एवं श्रीमती मदनकुमारी कोठारी

श्री धर्मसिंह जी कोठारी
जन्म : १७ फरवरी १९२१
प्रभु मिलन : १५ फरवरी २०१४

श्रीमती मदनकुमारी कोठारी
जन्म : २६ मई १९२६
प्रभुमिलन : १४ मार्च २०१३

आर्य जगत् के सशक्त हस्ताक्षर, त्याग, तपस्या व समर्पण की महामना विभूति, सुप्रसिद्ध निष्णात आयुर्वेदाचार्य, कविराज श्री धर्मसिंह जी कोठारी आयुर्वेद शास्त्र के निष्णात मर्मज्ञ, महर्षि दयानन्द सरस्वती के चिन्तन और दर्शन को अंगीकार और आत्मसात कर उसके प्रचार–प्रसार हेतु मनसा–वाचा–कर्मणा समर्पित एक सरल, सहज, उदार, आत्मीयता से पूर्ण, विनम्र, शालीन, सौम्य व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। आप प्रभावी लेखक, प्रखर वक्ता, वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ और सिद्धहस्त आयुर्वेदाचार्य थे। आप एक कवि, समाजसेवी, नामारूप धर्मनिष्ठ, सत्यानुरागी, मधुरभाषी, निरभिमानी और परोपकारी थे।

आपका जन्म राजस्थान प्रदेश के सुप्रसिद्ध कोठारी परिवार में ऐतिहासिक नगर अजमेर में परोपकार की प्रतिमूर्ति श्री दलेलसिंह जी कोठारी के यहाँ १७ फरवरी १९२१ को हुआ। श्री फतेहराज जी कोठारी ने आपको दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किया। आपके पितामह श्री सुजानसिंह जी कोठारी एवं उनके भ्रातागण मसूदा में महर्षि दयानन्द सरस्वती से यज्ञोपवीत ग्रहण करके वैदिक धर्म में दीक्षित हुए थे।

आपका विवाह अजमेर के प्रतिष्ठित राँका परिवार में श्री केसरीमल जी राँका की सुपुत्री मदनकुमारी के साथ १७ फरवरी १९४४ को सम्पन्न हुआ। जैन धर्म में पुष्पित–पल्लवित, सुलझे विचार और सकारात्मक सोच की धनी श्रीमती मदनकुमारी के जीवन की दिशा पति श्री धर्मसिंह जी कोठारी के सान्निध्य एवं प्रेरणा से बदल गई और वह वैदिक धर्म में रच–बस गईं। प्रतिदिन सन्ध्या व ईश भजनों का गायन उनकी दिनचर्या का अंग बन गया। आप सहधर्मिणी की श्रेष्ठ परम्पराओं का निर्वहन करते हुए जीवन के झंझावातों में भी प्रकाश स्तम्भ बन प्रेरणा भरती रहीं और अपनी त्याग, तपस्या एवं वात्सल्य के रंगों से अपने परिवार को एक सूत्र

साभार : प्रेय से श्रेय की ओर...

प्रकाशक : सेवानन्द सरस्वती न्यास
जयपुर (राज.)

में बाँधे रखा। श्री धर्मसिंह जी कोठारी अनेक विधाओं पर असाधारण योग्यता रखते थे। यही कारण है कि समय–समय पर उन्हें विभिन्न उपाधियों से अलंकृत किया गया। वर्ष १९४२ में डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर से **'कविराज'** और **'वैद्य वाचस्पति'** की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। आपने एक वर्ष तक ग्रामों में चिकित्सा क्षेत्र में सेवाएँ प्रदान करके वर्ष १९४३ में बसन्त पंचमी को अजमेर में **'चरक चिकित्सा सदन'** की स्थापना कर चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया। आप एक यशस्वी व उत्कृष्ट आयुर्वेदाचार्य थे। आपकी उत्कृष्ट सेवाओं के फलस्वरूप २५ नवम्बर १९९१ को प्रादेशिक आयुर्वेद सम्मेलन उत्तरप्रदेश, लखनऊ में **'आयुर्वेद भूषण'** की उपाधि प्रदान की गई। २२ मई १९९४ को **'राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन'** में प्रशस्ति पत्र देकर **'आयुर्वेद मार्तण्ड'** की उपाधि से अलंकृत किया गया। २ मार्च १९९८ को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के तत्वावधान में राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा **'रत्न सदस्य राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ'** की उपाधि से विभूषित किया गया। ५ अक्टूबर २००० को उज्जैन शहर में **'हंसवाहिनी'** ने अनेकानेक वैद्यों एवं प्रतिष्ठित साहित्यकारों की उपस्थिति में **'वैद्यक आत्मा'** की उपाधि से आपको अलंकृत किया। मध्यप्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन २००४ में आपको **'आयुर्वेद गौरव सम्मान पत्र'** प्रदान किया गया।

आपने कई वर्षों तक अजमेर जिला आयुर्वेद सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में आयुर्वेद को नए आयाम दिये। आप राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष रहे। अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन/संस्थानों से भी अनवरत जुड़े रहे। **'कल्पतरु'** स्मारिका का प्रकाशन कर आयुर्वेद को नई दिशा प्रदान की। आप सुप्रसिद्ध **'अश्वगन्धापाक'** के निर्माता थे, यह पाक आज भी उनके परिवार, सगे–सम्बन्धियों एवं मित्रगणों में प्रचलित है जिसे कोठारी परिवार स्वयं बनाकर प्रदान कर रहा है।

अपने पितामह और पिता द्वारा प्रदत्त वैदिक ज्ञान एवं संस्कारों से पुष्पित–पल्लवित श्री धर्मसिंह जी कोठारी कई वर्षों तक नगर आर्य समाज, अजमेर के प्रधान रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान; दयानन्द बाल सदन अजमेर; मथुराप्रसाद गुलाबदेवी आर्य कन्या पाठशाला;, आर्य पुत्री पाठशाला, दयानन्द विद्यालय, केशवदेव कपूरिया ट्रस्ट, वेद संस्थान एवं लोक भाषा प्रचार समिति, राजस्थान आदि विभिन्न संस्थाओं में विभिन्न पदों को अलंकृत कर

इन संस्थानों के उन्नयन के लिए कार्य करते रहे। आप **'सर्वेश्वर मित्रमण्डल, अजमेर'** के संस्थापक थे।

अनेकानेक कठिनाइयों एवं संघर्षों तथा जीवन की धूप–छाँव में भी आपका जीवन वेदज्ञान तथा यज्ञ की सुगन्ध से सुवासित रहा। आप इसी सुगन्ध से अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों से अवगत कराते रहे। उनको वैदिक ज्ञान का आनन्द प्रदान करने हेतु आर्य समाज जैसी श्रेष्ठ संस्था से जोड़कर उनके जीवन को नई दिशा प्रदान की। आप एक मौन साधक समान बड़ी लगन, तन्मयता एवं शान्तचित्त से आर्यसमाज के कार्यों को करते रहे, कभी उनको अपनी प्रशंसा हेतु प्रकाशित करने का प्रयास नहीं किया।

वैदिक यन्त्रालय में ग्रन्थ संशोधन के रूप में आप वैदिक साहित्य के प्रकाशन को गति देते रहे। **'वेद संस्थान'** अजमेर ने आपको **'वेद मनीषी'** की उपाधि प्रदान की। वर्ष १९८३ में परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्वावधान में **'महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह'** के सफल सम्पादन हेतु आपने सम्पूर्ण देश में भ्रमण कर पुष्कल राशि एकत्रित कर अपने गुरु महर्षि के प्रति अपने कर्तव्य का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। दिसम्बर १९७५ में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा आपको प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों मुख्यत: **'सत्यार्थ प्रकाश'** के परिरक्षण हेतु पूर्ण समर्पण के साथ किया गया अथक परिश्रम व अनवरत पुरुषार्थ आर्यजगत् के समक्ष उन्हें उच्च सोपान पर अवस्थित कर देता है। आपकी ही देन है **'सत्यार्थ प्रकाश'** के शुद्ध ३४वें संस्करण का सम्पादन जो आर्य जगत् की अनमोल धरोहर माना जाता है। इस संस्करण की सराहना महात्मा आनन्द स्वामी, पण्डित महामहोपाध्याय युधिष्ठिरजी मीमांसक, गुरुकुल बदायूँ के उपकुलपति आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र व आचार्य विश्वश्रवा जी ने मुक्त कंठ से की।

आपके चार सुपुत्र एवं दो सुपुत्रियाँ हैं। सबसे बड़े सुपुत्र श्री राजसिंह जी कोठारी, रीजनल कॉलेज अजमेर में गणित के प्रोफेसर रहे और उनकी सहधर्मिणी श्रीमती चन्दन कोठारी एक समर्पित गृहिणी हैं। उनसे छोटे सुपुत्र श्री सुदर्शन सिंह जी कोठारी वर्षों तक कतिपय निजी कम्पनियों में उच्च पद पर रहे तथा एक प्रतिष्ठित कम्पनी में सलाहकार के पद पर कार्यरत भी रहे। उनकी सहगामिनी डॉ. इन्दु कोठारी रसायन विज्ञान की व्याख्याता रहीं। तीसरे सुपुत्र न्यायमूर्ति सज्जनसिंह जी कोठारी ने राजस्थान के लोकायुक्त पद को सुशोभित किया है और पूर्व में राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति भी रहे हैं। उनकी पत्नी डॉ. अनिता कोठारी अंग्रेजी विषय की व्याख्याता रहीं। सबसे छोटे सुपुत्र श्री हर्ष जी कोठारी राजस्थान पुलिस में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए और उनकी पत्नी श्रीमती सरिता कोठारी स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में चीफ मैनेजर के पद से सेवानिवृत्त हुई।

आपकी ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती प्रभा का विवाह प्रख्यात न्यूरो सर्जन पद्मश्री डॉ. वी.एस. मेहता के साथ हुआ। **'राष्ट्रपति पुरस्कार'** से सम्मानित आपकी छोटी सुपुत्री श्रीमती विनय प्रभा केन्द्रीय विद्यालय जयपुर में उप प्राचार्या हैं। आपने परिवार में भी वैदिक मान्यताओं को सफलतापूर्वक स्थापित किया, जो आपके सुपुत्र–पुत्रवधुओं और सुपुत्रियों में दिखाई देती है। कोठारी परिवार की पाँचवीं पीढ़ी– उनके सुपौत्र–पौत्र वधुएँ, पौत्रियाँ एवं दोहित्र–दौहित्रियाँ भी उनकी शिक्षाओं को आत्मसात कर जीवन को सार्थक कर रही हैं।

श्री धर्मसिंह जी कोठारी के सत्यार्थ प्रकाश के सम्पादन कार्य पर आर्य जगत् के शीर्षस्थ विद्वानों की सम्मति

■ बड़ा पवित्र कार्य श्री कोठारीजी कर रहे हैं और बड़े परिश्रम, श्रद्धा तथा भक्ति से सत्यार्थ प्रकाश को असली रूप में ला रहे हैं। मेरा हार्दिक आशीर्वाद श्री कोठारीजी के अंग–संग रहेगा।

–आनन्द स्वामी सरस्वती (२२.१०.१९६५)

■ परोपकारिणी सभा की ओर से सत्यार्थ प्रकाश का जो नया संस्करण प्रकाशित हुआ है, उसे देखकर हृदय में बड़ी प्रसन्नता हुई। इसका कागज, छपाई तथा गेट–अप नेत्रों को प्यारा लगता है। **और सबसे बडी बात यह है कि इस संस्करण को अधिक से अधिक शुद्ध बनाने के लिए श्री धर्मसिंह जी कोठारी ने निरन्तर तीन वर्ष भरसक प्रयत्न किया और विद्वत् समिति का आशीर्वाद प्राप्त किया।**

सत्यार्थ प्रकाश की हस्तलिखित पुस्तक से भलीभाँति मिलान किया गया। जब श्री कोठारी जी इस पवित्र कार्य में लगे थे तब मैं भी उस कार्यालय में गया और कोठारी जी को इस कार्य में व्यस्त देखा और मैंने आशीर्वाद भी दिया। प्रभुकृपा से यह कार्य सफल हुआ और परोपकारिणी सभा भी इस कार्य के लिए बधाई की पात्र है।

–आनन्द स्वामी सरस्वती (२७.११.१९६६)

■ श्री पं. धर्मसिंह जी कोठारी ने दयानन्द आश्रम में सत्यार्थ प्रकाश के सम्पादन का कार्य आज दिनांक ३.५.६२ को मध्याह्नोत्तर २ बजे से ७ बजे तक दिखाया। विचार परस्पर हुआ। और अभी आगे भी कार्य करना है। **–आचार्य विश्वश्रवा (३.५.१९६२)**

■ ३ मई से ६ मई १९६२ तक चार दिन अजमेर दयानन्दाश्रम में रहकर श्री पं. धर्मसिंह जी कोठारी का सत्यार्थ प्रकाश के सम्पादन का कार्य देखा। **सत्यार्थ प्रकाश के हस्तलेख तथा अन्य संस्करणों के साथ जो तुलना करते हुए पाठों का संग्रह किया है यह घोर परिश्रम का परिणाम है। तुलना करने में अक्षर, बिन्दु, मात्रा तक का ठीक निरीक्षण किया है क्योंकि मैंने स्वयं हस्तलेखों और अन्य संस्करणों से मिलान करके उनके कार्य को देखा है। सत्यार्थ प्रकाश के कुछ स्थल ऐसे उनके सम्पादन कार्य में है जिसका निर्देश उन्होंने ही प्रथम बार किया और जहाँ अच्छे–अच्छे विद्वान् चूक गए।** इनके इस कार्य को लेकर इनके सहयोग से किसी एक उच्च कोटि के विद्वान् का कर्तव्य है कि इसमें सहयोग दे। परोपकारिणी सभा को श्री कोठारी जी का सदैव सहयोग प्राप्त रहे, यह इच्छा है।

–आचार्य विश्वश्रवा: (६.५.१९६३)

■ परोपकारिणी सभा द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के नवीन संस्करण पर दिल्ली के वेद प्रचारक पत्र ने अनेक आक्षेप किये हैं और परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित इस संस्करण के पाठों को भ्रष्ट बताया है और उसके बहुत से उदाहरण अपने पत्र में दिये हैं। उनकी वस्तुस्थिति जानने के लिए आज २५ दिसम्बर १९६६ को मैं दिल्ली सेन्ट्रल मेल से आया और कोठारी जी से उन पाठों की वस्तुस्थिति जानी जो उन्होंने नवीन संस्करण

में पाठ रखे हैं।

कोठारीजी ने हस्तलेख आदि के द्वारा उन पाठों की प्रामाणिकता दर्शाई जिसको देखकर मुझे अति प्रसन्नता हुई कि हमारे इस नवीन संस्करण के पाठ ठीक हैं। ऋषि के हस्तलेखों के अनुसार है। **कोठारीजी अब ऋषि के हस्तलेखों के कार्य में खूब सिद्धहस्त हैं। यह प्रशंसा की बात नहीं प्रत्युत वस्तुस्थिति है। हमें आशा हो गई कि इस शैली से ऋषि ग्रन्थ प्रामाणिक प्रकाशित होते जाएँगे।**

–आचार्य विश्वश्रवाः व्यास, देहली

■ सत्यार्थ प्रकाश के संस्करण के संबंध में जो विभिन्न प्रतियों की तुलना का कार्य **श्री पं. धर्मसिंह जी कोठारी कर रहे हैं उसे स्थालीपुलाक न्याय से मैंने देखा। बड़ी प्रसन्नता हुई। बड़ी लगन और योग्यता से यह कार्य हो रहा है। आलोचनात्मक संस्करण में इससे अवश्य बड़ी सहायता मिल सकेगी।**

–मं.दे. शास्त्री (३१.१०.१९६२)

■ श्री पण्डित धर्मसिंह जी कोठारी के सौजन्य से आज सत्यार्थ प्रकाश के संशोधित संस्करण की पाण्डुलिपि का प्रारूप मैंने देखा। सत्यार्थ प्रकाश की मूल हस्तलिखित प्रति के कुछ पृष्ठ और सत्यार्थ प्रकाश की फोटो प्रतिकृति भी देखी। **श्री कोठारीजी ने सत्यार्थ प्रकाश के मूल, शुद्ध और यथार्थ पाठ को खोज निकालने के लिए बहुत सी शब्द तालिकाएँ प्रमाण–सूचियाँ, पाठ–भेद दर्शक विवरण पत्र और सत्यार्थ प्रकाश के लेखन काल के संस्मरणात्मक विवरण एवं सत्यार्थ प्रकाश में निर्दिष्ट अपने–पराए ग्रन्थों का संग्रह किया है, वह भी देखा। मैंने विस्तार पूर्वक विचार–विमर्श और पूछताछ भी की। उत्तर सन्तोषजनक मिले। सत्यार्थ प्रकाश को विशुद्ध रूप में प्रकाशित करने का जो आयोजन हो रहा है, वह श्रेष्ठ और चिर–प्रतीक्षित है। श्री कोठारीजी का प्रयास तो बहुत ही उत्तम है।** सत्यार्थ प्रकाश और श्रीमती परोपकारिणी सभा के इतिहास का यह नया अध्याय **आर्य जगत् को नई प्रगति प्रदान करेगा और श्री कोठारी जी की गणना ऋषि दयानन्द जी के प्रधान सेवकों में अवश्य ही होगी।**

–जगत्कुमार शास्त्री, दीवान हाल, देहली–६ (२८.११.१९६४)

■ आदरणीय श्री कविराजजी!

सादर नमस्ते

आपसे वार्ता करने का समय अल्प ही मिला था, **सत्यार्थ प्रकाश प्राकृत के पाठों को जितने सूक्ष्म विमर्श के साथ आपने उल्लिखित किया है वह प्रशस्य है।** भविष्य में पाठादि के विषय में मुझसे कोई आवश्यकता पड़े तो मैं सर्वदा तत्पर हूँ।

श्री करपात्रीजी के महाग्रन्थ का उत्तर लिख रहा हूँ पर एकाकी हूँ। इधर स्वास्थ्य भी रोगाक्रान्त ही है। अत: कम समय दे पाता हूँ। साथ ही कॉलेज भी जाना होता है जो जीविकार्थ आवश्यक है।

स्मरण हो आया होगा कि हम लोग सार्वदेशिक सभा की ४.८.१९८० की बैठक में मिले थे। ■

भवदीय

आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र (एम.ए.)

आनन्द मन्दिरम्, कूंचापांडा, बदायूं (उ.प्र.) ४.४.१९८०

ज्ञान-विज्ञान संस्थान, आगरा का वार्षिक समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वितीय जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर दिनाँक २७ फरवरी २०२३ (फाल्गुन, शुक्ल पक्ष, अष्टमी, विक्रम संवत् २०७९) दिन सोमवार को वैदिक ज्ञान विज्ञान संस्थान आगरा का वार्षिक समारोह अत्यंत हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। आगरा नगर के वरिष्ठ आर्य पुरोहित वैदिक प्रवक्ता आचार्य अशोक जी ने यज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यज्ञोपरान्त मथुरा नगरी से पधारे आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय उदयवीर आर्य के सुन्दर भजन हुए। भजनों के बाद महानगर दिल्ली से पधारीं वैदिक विदुषी श्रीमती विमलेश बंसल दर्शनाचार्य का वैदिक शिक्षाओं द्वारा विश्व शांति विषय पर अति प्रभावी प्रवचन हुआ। वैदिक शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में महर्षि दयानन्द के योगदान पर प्रकाश डालते हुए आदर्श परिवार निर्माण पर विचार रखे। वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष एक माह का श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम, रक्तदान शिविर एवं वर्षभर पूर्णिमा अमावस्या को आगरा जनपद के निकटवर्ती क्षेत्रों में वैदिक सत्सङ्ग का आयोजन किया जाता है इस वर्ष जिन्होंने रक्तदान किया उन ३१ रक्तदानियों, श्रावणी वेद प्रचार, पूर्णिमा एवं अमावस्या के ३८ आयोजकों का वार्षिक समारोह के अवसर पर प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। इस पुनीत अवसर पर संस्थान के मुख्य संरक्षक बाबू रोशन लाल गुप्ता के करकमलों द्वारा प्रतिवर्ष की भांति पांच विशेष सम्मान भी प्रदान किये गए। श्रीमती विमलेश बंसल जी को आर्य विद्वत् सम्मान, श्रीमती निशा जिंदल जी को आर्य नेतृत्व सम्मान, श्री बलवंत गुप्ता जी को आर्य उदारमना सम्मान, श्री लोकेश गौतम जी को आर्य समर्पण सम्मान तथा श्री महाशय उदयवीर आर्य जी को कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर भजनोपदेशक सम्मान प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र तनेजा जी द्वारा रक्तदानियों संयोजिका श्रीमती उर्मिला आर्या द्वारा श्रावणी वेद प्रचार आयोजकों तथा श्री दाऊदयाल सिंह पौरुष द्वारा पूर्णिमा अमावस्या सत्सङ्ग आयोजकों का सम्मान किया गया। संरक्षक श्री प्रमोद जिंदल एवं श्री राहुल गुप्ता जी ने ऋषि प्रसाद की सुन्दर व्यवस्था की। श्री गिरीश चंद्र गुप्ता जी ने प्रचार और प्रसार की व्यवस्थाएँ सम्भाली। श्री के बी शर्मा एवं श्री राम शरण जैन ने दान की व्यवस्थाएँ सम्भाली। श्रीमती कान्ता बंसल, श्रीमती पुष्प लता गुप्ता, श्री गोपाल प्रसाद अग्रवाल, श्री ओम प्रकाश शर्मा मेजर, श्री वीरेन्द्र कुमार कनवर, श्रीमती प्रेमा कनवर, श्रीमती नीरजा साहनी आदि ने कार्यक्रम को उत्तम बनाने के लिए अत्यंत पुरुषार्थ किया। आगरा जनपद की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संगठनों के सदस्यों ने कार्यक्रम में सहभागिता प्रदान की। श्री छोटेलाल बंसल, श्री श्याम भोजवानी, श्री के के अग्रवाल, श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता, श्रीमती कंचन गुप्ता,श्रीमती भगवान देवी सिंघल, श्रीमती रामसखी विद्यार्थी, आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। अध्यक्षा श्रीमती मंजु गुप्ता जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संस्थान के प्रकल्पों पर प्रकाश डालते हुए आगामी योजनाओं के विषय में बताया और सभी का आभार व्यक्त किया। शान्ति पाठ के बाद ऋषि प्रसाद की व्यवस्था की गई।

वेदों में विश्व बन्धुत्व की भावना की विवेचना

खुशहालचन्द्र आर्य
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

इस लेख के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ, उससे पहले यह बतलाना आवश्यक है कि ईश्वर ने पूरी सृष्टि रचने के बाद, यानी पशु-पक्षी, कीट-पतंग, पहाड़, समुद्र, नदी-नाले, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश आदि सब रचने के पश्चात् तिब्बत के पठार पर पृथ्वी के अन्दर कृत्रिम गर्भाशय बनाकर अनेक युवा स्त्री-पुरुषों की उत्पत्ति की। साथ ही चार ऋषि जिनकी आत्मा अति श्रेष्ठ व पवित्र थी, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा था। उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, उनका प्रकाश करके उनके मुख से उच्चारित करवाए जिनको उपस्थित सभी युवा स्त्री-पुरुषों ने उस वेद ज्ञान को सुना। उन पुरुषों में ऋषि ब्रह्मा भी थे जिनकी बुद्धि अति तीव्र थी। उसने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाया। इसके बाद यह वेद ज्ञान, पिता अपने पुत्रों को, गुरु अपने शिष्यों को सुनाते रहे और इस प्रकार यह वेद ज्ञान लाखों-करोड़ों वर्षों तक चलता रहा। इसीलिए इस वेद ज्ञान को श्रुति भी कहते हैं। यानी सुनकर दूसरों को सुनाना। तत्पश्चात् लाखों-करोड़ों वर्षों बाद जब कागज, स्याही, कलम आदि का आविष्कार हो गया तब इनको चार पुस्तकों में लिपिबद्ध कर दिया जिनको वेद कहते हैं।

वेद का तात्पर्य ज्ञान है। यह ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आदि में एक संविधान के रूप में मनुष्य-मात्र को दिया। जिस प्रकार सरकारी संविधान से राष्ट्र चलता है, उसी प्रकार यह ज्ञान मनुष्यों के लिए संविधान है। इनमें ईश्वर ने मनुष्य को क्या कर्म करने चाहिये, क्या काम नहीं करने चाहिये, लिखा है। किन कार्यों के करने से मनुष्य अपने जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करता है और अपने जीवन को सुखी व सम्पन्न बनाते हुए अन्यों का जीवन भी सुखी व सम्पन्न बनाता है। जो व्यक्ति वेदानुसार अपने जीवन को चलाता है वह मनुष्यों के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को भली प्रकार करते हुए मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। मोक्ष प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को इस धरती पर भेजता है।

वेदों में ईश्वर ने मनुष्य के जीवन में काम आने वाले सभी विषय के सम्बन्ध में लिखा हुआ है जिनमें विश्व बन्धुत्व की भावना पर विशेष जोर दिया गया है जिससे विश्व में सुख व शान्ति बनी रहे। वेदों में अनेक विश्व बन्धुत्व के मन्त्रों में से कुछ मन्त्र यहाँ प्रस्तुत करते हैं जो इस भाँति है।

मन्त्र : अज्येष्ठा सो अकनिष्ठा स एते सं भ्रातरो वा वृधुः सौभागाय। (ऋग्वेद)
अर्थ : हम सब भाई-भाई हैं। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। सौभाग्य के लिए हम सब परस्पर मिलकर उन्नति करें।

मन्त्र : माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। (अथर्व वेद)
अर्थ : भूमि हमारी माता है और हम सब उसकी सन्तान हैं।

मन्त्र : वसुधैव कुटुम्बकम्।
अर्थ : पूरा विश्व एक परिवार है।

मन्त्र : सर्व भूतेषु चात्माने ततो न विचिकिन्सति।
अर्थ : हे मनुष्य! तू सब प्राणियों में अपनी आत्मा को देख और सबकी आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझ।

मन्त्र : अनुव्रतः पितुः पुत्रः। (अथर्ववेद)
अर्थ : पुत्र, पिता के व्रत (आदर्श) का अनुसरण करने वाला होवे।

मन्त्र : कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अर्थ : पूरे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

मन्त्र : जीवास्थ जीव्यासम। (अथर्ववेद)
अर्थ : स्वयं जीओ और दूसरों को जीने दो।

मन्त्र : सत्येनो तमिता भूमिः। (यजुर्वेद)
अर्थ : यह भूमि सत्य पर टिकी है।

मन्त्र : आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।
अर्थ : जो सब प्राणियों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान देखता है, वही पण्डित (विद्वान्) है।

मन्त्र : तेन त्यक्तेन भुंजीथा, मा गृधः कस्य स्विद्धनम्। (यजुर्वेद)
अर्थ : इस संसार का त्याग भाव से भोग करो, इसमें लिप्त न हो, लालच न करो, यह संसार किसी का नहीं, ईश्वर का है।
(नोट : इस मन्त्र का मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है।)

मन्त्र : अहमनृतात सत्य मुपैमि। (यजुर्वेद)
अर्थ : मैं असत्य से सत्य की ओर चलूँ।

मन्त्र : यत्र विश्व भवत्येक नीडम्। (यजुर्वेद)
अर्थ : जिससे सारा विश्व एक आश्रय वाला होता है।

मन्त्र : मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। (यजुर्वेद)
अर्थ : सब प्राणियों को हम मित्र की दृष्टि से देखें।

मन्त्र : अकर्मा दस्यु रयिनो अमन्तुर न्य व्रतो अमानुषः।
त्वं तस्या मित्र हन्व धर्दा सस्य दम्भयः।। (ऋग्वेद)
अर्थ : जो कर्म नहीं करता वह दस्यु है, उसे कोई सुख न होवे। तुम शत्रुओं के समान उसका वध कर दो अथवा दास के समान उस पर अनुशासन करो।

वचन : आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
(वेदों में विद्वान् भीष्म पितामह का वचन भी वेदों के समान है।)
अर्थ : जो काम आपको अच्छा नहीं लगता, वह काम दूसरों के लिए भी न करो।

मन्त्र : यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्मः। (शतपथ ब्राह्मण)
अर्थ : यज्ञ करना सबसे श्रेष्ठ काम है।

मन्त्र : स्वर्ग कामो यजेत (महर्षि याज्ञवल्क्य, शतपथ ब्राह्मण में लिखा है)
अर्थ : जिसकी स्वर्ग प्राप्ति अर्थात् विशेष सुख की कामना है, वह यज्ञ करे।

मन्त्र : सत्यमेव जयते, नानृतम्।
अर्थ : सत्य की सदैव जीत होती है, झूठ की नहीं।

कुछ वेद-मन्त्र व वेद मन्त्रों के समान ही मन्त्र, अर्थ सहित लिखे हैं। कृपया सुधि पाठकगण विचारें व मनन करें। ■

स्वामी दयानन्द सरस्वती महात्मा ज्योतिराव फूले के विरोधी नहीं थे

✍ आचार्य रामगोपाल सैनी
फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)
चलभाष : ९८८७३९३७१३

महात्मा ज्योतिराव फूले को मानने वाले कुछ लेखक इस प्रकार के लेख लिख रहे हैं जिनमें भारत के सबसे बड़े क्रान्तिकारी समाजसुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती की छवि धूमिल की जा रही है। ये लोग दयानन्द का चित्रण फूले के विरोधी के रूप में कर रहे हैं, यह गलत है। स्वामी दयानन्द ने कभी भी और कहीं भी फूले का विरोध नहीं किया। ये दोनों समकालीन थे किन्तु इन दोनों का कभी टकराव नहीं हुआ। दोनों में कभी विरोध भाव नहीं रहा। दोनों ही महापुरुष धर्म के नाम पर लूट करने वालों के विरोधी थे। दोनों ही जाति प्रथा, अस्पृश्यता, सती प्रथा, विधवा नारियों पर अत्याचार के विरोधी थे। दोनों ही नारी को शिक्षित करने, विधवाओं का पुनर्विवाह करने, अन्य जातीय पण्डितों द्वारा धार्मिक संस्कार करवाने के समर्थक थे।

विरोध की तो बात छोड़िये, महात्मा फूले स्वामी दयानन्द का बहुत सम्मान करते थे। स्वामी दयानन्द उम्र में भी फूले से बड़े थे और उनका कार्यक्षेत्र भी व्यापक था। क्योंकि दयानन्द का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत था जबकि फूले का कार्यक्षेत्र केवल महाराष्ट्र था। अगस्त–सितम्बर सन् १८७५ में स्वामी दयानन्द सरस्वती को पूना में बुलाकर १५ दिन प्रवचन करवाए गए थे। इसी मध्य स्वामी दयानन्द को हाथी पर बैठाकर पूना में ५ सितम्बर १८७५ को मुख्य मार्गों से शोभायात्रा निकाली गई थी। इस शोभायात्रा में हाथी के दोनों ओर उस समय के प्रसिद्ध समाज सुधारक महात्मा ज्योतिराव फूले तथा महादेव गोविन्द रानाडे पैदल चल रहे थे। प्रतिक्रियावादी लोगों ने इस शोभायात्रा को नहीं निकलने देने का चैलेंज दिया था और उन्होंने इसके विरोध में इस जुलूस के विपरीत दिशा में एक जुलूस निकालकर खून–खच्चर करने का प्रयास किया था किन्तु वे लोग अंग्रेज सरकार का भारी पुलिस जाब्ता आ जाने के कारण पुलिस बल द्वारा दूर ही रोक दिये गये और पुलिस बल की सुरक्षा में स्वामी दयानन्द का जुलूस सकुशल निकला। इस शोभायात्रा में महात्मा फूले एवं उनके सत्यशोधक समाज के कार्यकर्ता स्वामी दयानन्द की शोभायात्रा में सहभागी थे।

स्वामी दयानन्द पर कुछ लेखक जो आरोप लगा रहे हैं, वे ये हैं–

१. महात्मा फूले की **'गुलामगिरी'** पुस्तक की काट करने के लिए दयानन्द ने **'सत्यार्थ प्रकाश'** पुस्तक लिखी।

२. महात्मा फूले ने महाराष्ट्र में महिलाओं तथा दलितों के लिए पाठशालाएँ चलाई उनके जवाब में दयानन्द ने डी.ए.वी. पाठशालाएँ चलाईं

३. दयानन्द जाति व्यवस्था के पक्षधर थे।

ये सभी आरोप निराधार हैं। ऐसा लगता है कि इन लेखकों ने स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों एवं सिद्धान्तों का अध्ययन नहीं किया है। यदि इन लोगों को दयानन्द के दर्शन व चिन्तन की सम्यक जानकारी होती तो वे उपर्युक्त आरोप कभी नहीं लगाते।

अब हम दयानन्द पर लगाए जाने वाले आक्षेपों का क्रमशः उत्तर दे रहे हैं

आरोप क्र. १ : स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में कहीं भी ज्योतिराव फूले का अथवा उनके सिद्धान्तों का जिक्र नहीं है। फूले के किसी भी कार्य, विचार अथवा सिद्धान्त का उसमें खण्डन नहीं किया गया है बल्कि फूले ने जिस प्रकार पाखण्ड, आडम्बर एवं अन्धविश्वासों पर प्रहार किया है, उसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में किया है।

आरोप क्र. २ : लेखक लिखते हैं कि फूले की स्कूलों की काट में स्वामी दयानन्द ने गुरुकुल तथा डी.ए.वी. स्कूलें चलाईं। इस बारे में यह स्पष्ट किया जाता है कि स्वामी दयानन्द ने न तो कोई गुरुकुल खोला और न कोई डी.ए.वी. स्कूल चलाया। इतिहास के तथ्यों को जाने बिना बेतुके आरोप लगाना हास्यास्पद है। स्वामी दयानन्द का निधन सन् १८८३ में तथा फूले का सन् १८९० में हुआ था। स्वामी दयानन्द के बाद उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने 'गुरुकुल' तथा स्वामी हंसराज आदि शिष्यों ने डी.ए.वी. स्कूल महात्मा फूले के जीवन के बाद शुरू किये थे। यद्यपि छात्र गुरुकुलों में तथा छात्रा गुरुकुलों में सभी दलित जातियों के छात्र–छात्राओं को बिना किसी भेदभाव के प्रवेश दिया और पढ़ाया जाता था।

आरोप क्र. ३ : स्वामी दयानन्द जन्मना जाति व्यवस्था तथा छुआछूत के विरोधी थे। जिस प्रकार वैदिक काल में किसी भी मनुष्य के वर्ण का निर्धारण उसके गुण, कर्म एवं स्वभाव से होता था, उसी प्रकार की वर्ण व्यवस्था को स्वामी दयानन्द मानते थे। गुरुकुलों में लाखों दलित वर्ग के छात्र–छात्राएँ पढ़ीं। उनको जनेऊ दिलवाया गया तथा वेद भी पढ़ाए गए।

स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज संस्था ब्राह्मणवादी व्यवस्था की विरोधी है तथा पिछड़े एवं दलित वर्गों की हिमायती है। आज भारत भर में पिछड़ी एवं दलित जातियों के हजारों लोग आर्य समाज की बदौलत पण्डित बने हुए हैं और समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त किये हुए हैं। दलित वर्ग के लोगों को जनेऊ देने, वेद पढ़ाने और पण्डित बनाने का महत्वपूर्ण कार्य आर्य समाज ने किया है।

महात्मा फूले के सत्यशोधक समाज की तरह ही आर्य समाज ने भी समाज सुधार का क्रान्तिकारी कार्य किया है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती को बिना समझे उन पर आरोप लगाने वाले लेखक लोगों को चाहिए कि पहले वे लोग स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन करें तथा उनके प्रति अपने पूर्वाग्रह एवं दृष्टि को बदलें। ■

महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर महर्षि दयानन्द के २०० उपकार

(गतांक पृष्ठ ३० से आगे)

आचार्य राहुल देव
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)

१०१) सब जीवो को जीने का अधिकार बताया।
१०२) गौ रक्षा का महत्व बताया।
१०३) गौ करुणानिधि पुस्तक बनाई।
१०४) सर्वप्रथम रेवाड़ी में गौशाला स्थापित कराई।
१०५) गौ रक्षा के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया।
१०६) गौ रक्षा के लिए महारानी विक्टोरिया को पत्र लिखा।
१०७) गौ से कृषि और कृषि से भारत का उत्थान बताया।
१०८) पराधीन भारत में कल कारखाने खोलने की बात कही।
१०९) उद्योग लगाने के लिए सर्वप्रथम प्रयास किया।
११०) स्वदेशी को सर्वोपरि बताया।
१११) स्वदेशी वस्तुओं का महत्व बताया।
११२) भारतीय सभ्यता के स्वाभिमान को जगाया।
११३) उंगलियों की बत्ती बनाकर जलाने पर भी सत्य कहने की बात कही।
११४) बालकों की शिक्षा मौलवी, पादरियों से कराने का निषेध किया।
११५) सर्वमत की एकता के लिए प्रयास किया।
११६) सबको दुराग्रह छोड़कर एक साथ आने के लिए बल दिया।
११७) सर्वधर्म सम्मेलन बुलवाया।
११८) श्राद्ध-तर्पण कर्म जीवित अवस्था में करना चाहिए यह बताया।
११९) मरने के बाद माता-पिता को कुछ नहीं दिया जा सकता यह बताया।
१२०) यज्ञोपवीत संस्कार पुनः प्रचलित किया।
१२१) शूद्रों और स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण का अधिकारी बताया।
१२२) भागवत का खंडन किया।
१२३) अठारह पुराणों को वेद विरुद्ध बताया।
१२४) अवतारवाद पूजा को हानिकारक बताया।
१२५) सत्य के प्रचार के लिए पादरियों मौलवियों से सैकड़ों बार शास्त्रार्थ किया।
१२६) काशी में सबसे बड़ा शास्त्रार्थ करके मूर्ति पूजा को वेद विरुद्ध बताया।
१२७) वेद पाठशाला की स्थापना की।
१२८) गुरुकुल प्रणाली का मार्ग प्रशस्त किया।
१२९) मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया।
१३०) मोक्ष की अवधि बताई।
१३१) ईश्वर के प्रमुख १०० नाम बताये।
१३२) ईश्वर और जीव का भेद बताया।
१३३) नमस्ते को आर्यों का अभिवादन बताया।
१३४) स्वर्ग और नरक की वास्तविक परिभाषा बताई।
१३५) स्वराज्य का सबसे पहले उद्घोष किया।
१३६) १८५७ की क्रान्ति में भूमिका निभाई।
१३७) स्वराज को ही सुराज बताया।
१३८) पराधीन देश में लोकतंत्र की बात कही।
१३९) नमक कर का सर्वप्रथम विरोध किया।
१४०) विदेशी राजा हमारे देश में कभी ना हो यह स्वाभिमान के साथ कहा
१४१) जंगली वस्तुओं पर चुंगी कर का विरोध किया।
१४२) स्टाम्प पेपर का विरोध किया।
१४३) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए वकालत की।
१४४) राजनीति पर गहन प्रकाश डाला।
१४५) राजाओं के लिए भी लोकतंत्र की बात कही।
१४६) धर्म और राजनीति का सुंदर समन्वय बताया।
१४७) सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्भुत ग्रंथ की रचना की।
१४८) प्रथम क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को इंग्लैंड भेजा।
१४९) जीवन में १७ बार घोर विष का पान किया।
१५०) प्रचार करते हुये पत्थर खाये, सांप तक ऊपर फेंका गया।
१५१) क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत रहे।
१५२) न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे आपके शिष्य रहे।
१५३) सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर पंडित रामप्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारी बने।
१५४) १८७५ ई. में आर्यसमाज की स्थापना की।
१५५) किसी व्यक्ति विशेष को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया।
१५६) आर्यसमाज को जनतांत्रिक संगठन बनाया।
१५७) पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय जैसे अनेक स्वतन्त्रता सेनानी प्रदान किए।
१५८) आर्य बाहर से नहीं आए यह घोषणा की।
१५९) आर्य का अर्थ श्रेष्ठ बताया।
१६०) भारत में आर्यों को मूल निवासी बताया।
१६१) आर्य और द्रविड़ के भेद को मिटाया।
१६२) आर्य द्वारा बसाया होने से देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त बताया।
१६३) आर्यसमाज को अपना उत्तराधिकारी बनाया।
१६४) आर्यसमाज जैसा संगठन बनाकर देश को सशक्त सेवाभावी संगठन प्रदान किया।
१६५) आर्य शब्द को जाति वाचक नहीं गुण वाचक शब्द बताया।
१६६) आर्य कोई जाति नहीं अपितु श्रेष्ठ व्यक्तियों का संगठन बताया।
१६७) आर्यसमाज में स्वयं कोई पद नहीं लिया।
१६८) राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया।
१६९) अपनी वेशभूषा पर गर्व करना सिखाया।
१७०) एक देश एक संस्कृति बताया।
१७१) एक देश एक भाषा के महत्व को समझाया।
१७२) हिंदी को आर्य भाषा बताया।
१७३) हिंदी को माथे की बिंदी बताया।
१७४) हिंदी साहित्य के द्वारा क्रान्ति का सूत्रपात किया।
१७५) अपनी भाषा पर गर्व करना सिखाया।

१७६) हिंदी भाषा को सर्वप्रथम आर्य भाषा संबोधित किया।
१७७) हिंदी भाषा को भारत में सर्वसामान्य की भाषा बताया।
१७८) हिंदी भाषा में साहित्य लिखकर हिंदी का मान बढ़ाया।
१७९) हिंदी भाषा को राष्ट्र एकीकरण की भाषा कहा।
१८०) बिना उर्दू शब्दों के हिंदी भाषा में ही अपने सारे ग्रंथों का लेखन कार्य किया।
१८१) जनसामान्य को समझ में आए इसलिए संस्कृत के स्थान पर हिंदी भाषा में व्याख्यान करना निश्चित किया।
१८२) विदेश में जाने का मार्ग प्रशस्त किया।
१८३) विदेश जाने से कोई पाप नहीं लगता ऐसा सिद्ध किया।
१८४) पानी जहाज की यात्रा को आवश्यक बताया।
१८५) विदेशी व्यापार करने की बात बताई
१८६) विदेशी संयंत्र मंगवाने की बात कही।
१८७) कभी कोई संपत्ति नहीं बनाई।
१८८) अपना स्वयं का कोई घर नहीं बनाया।
१८९) किसी प्रलोभन से विचलित नहीं हुए।
१९०) करोड़ों की संपत्ति ठुकराई।
१९१) गुरु के एक बार कहने पर पूरा जीवन समर्पित कर दिया।
१९२) अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया।
१९३) कभी चरित्र को दाग लगने नहीं दिया।
१९४) समाधि को छोड़कर लोगों के दुःख दूर करने का बीड़ा उठाया।
१९५) मरणोपरान्त मेरी समाधि नहीं बनवाना यह बताकर गये।
१९६) मेरी अस्थियां और राख खेत में डालना ऐसा कहा।
१९७) यह भी कहा कि मुझे कभी मत पूजना
१९८) ऐसा कहने वाला मेरे गुरु जैसा और कोई नहीं था।
१९९) बनारस में मूर्ति पूजा का खण्डन न करने पर आपको अवतार घोषित कर देंगे। ऐसे सबसे बड़े प्रलोभन को ठुकराया।
२००) मानव जाति के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

वैसे तो मेरे प्यारे ऋषि के उपकारों को मैं गिना सकूँ यह मेरा सामर्थ्य नहीं। फिर भी मुझे कुछ नया करने की आदत है। आप सभी महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को मेरी तरफ से उनके द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर २०० पुष्पों की माला भेंट है। स्वीकार कीजिए! कवि ने मेरे जैसे पागल ऋषिभक्त के लिये बरसों पहले ही कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं -

गिने जाये मुमकिन है सेहरा के जर्रे।
समुन्दर के कतरे फलक के सितारे।।
दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसान।
न गिनती में आये कभी हमसे सारे।।

आप सभी महानुभावों को महर्षि दयानन्द जयन्ती की बहुत-बहुत शुभकामनायें। ■

मुसलमानों की अदूरदर्शिता

जब मैं संस्कृत के प्राचीन साहित्य का अध्ययन करता हूँ और मुसलमानों के उस प्रयत्न की ओर दृष्टि डालता हूँ जो उन्होंने एक हजार वर्ष से पुरानी वैदिक संस्कृति को मिटाने और नई मुसलमानी संस्कृति को फैलाने में किये तो मुझे मुसलमानों के लिए तथा संसार भर के लिए खेद का भाव उत्पन्न होता है। मुसलमान हिन्दुस्तान में इस देश के निवासियों को अध्यात्म और पहले से उत्तम जीवनचर्या सिखाने आए थे। इस विषय में उनको घोर असफलता मिली। मुसलमानों ने कई शताब्दियों तक शासन किया और इनके मौलवियों तथा प्रचारकों ने इस्लामी संस्कृति को फैलाने और प्राचीन संस्कृति के उन्मूलन में बहुत प्रयत्न किया परन्तु वह सफल नहीं हुए। इसके दो कारण थे। प्रथम तो उन्होंने यह नहीं समझा कि जिनको वे ज्ञान सिखाने के लिए जा रहे हैं वे हमसे अधिक विद्वान्, अधिक सभ्य हैं। यदि वह भारत में सीखने के लिए आते तो यहाँ से बहुत सी विद्याएँ सीखकर इस्लाम के आदि स्रोत अरब को भी अधिक लाभान्वित कर सकते थे। पर उनका नारा था 'काबा से आए दौलते ईमां लिए हुए'। (अर्थात् हम काबे से भक्ति का धन लेकर आए हैं।) गंगा जमुना में रेगिपरेशां लिए हुए। अर्थात् गंगा-यमुना के जल से भरपूर देश में अरब के रेत को ले चलना कोई अर्थ नहीं रखता। अरब के रेतीले मैदानों की शुष्क दृष्टि गंगा, यमुना की हरियाली की क्या तुलना कर सकती है।

हैरत की बात है कि यह आए हैं दूर से, वेदों की सरजमीन के कुरआं लिए हुए।

लोग प्राचीन संस्कृति को भूल गए थे परन्तु जो भी कुछ शेष था वह भी इस्लामी संस्कृति का मुकाबला करने के लिए काफी था।

किये पार थे जिसने सातों समन्दर। गिरा वह दहाने में गंगा में आकर।।

देवकुमार प्रसाद आर्य
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

अग्नि-पथ

सूरज की जीवन-यात्रा को देखो
सम्पूर्ण जीवन ही जिसका है अग्नि-पथ
संकल्पाग्नि के अंगारों से खेल-खेल
रात्रि के गहन अन्धकार को है दूर भगाता
अखिल विश्व को है आलोकित कर जाता
पल भर को भी है विश्राम नहीं पाता
सूरज की जीवन-यात्रा को देखो।
ओजस्विता, तेजस्विता का प्रकाश पुंज वह
प्रचण्ड यज्ञाग्नि में भस्म हो ओज तेज बरसाकर
चर-अचर जगत को है सर्वस्व अर्पण कर देता
आत्म विश्वास, आत्म प्रकाश ही केवल
उसका एक सहारा है
जगत के लिए प्रकाश पुंज बनो देता सन्देश ही न्यारा है
जल-जल कर भी कभी न हिम्मत हारा है
सूरज की जीवन यात्रा को देखो
जल में पड़ती किरणें शीतल जल को
आभासित कर कीचड़ में भी कमल खिलाती है।
लहरें भी उछल-उछल कर
प्रकाश को बाँहों में भर गुण उसी के गाती है
श्वेत हिमाच्छादित पर्वतों पर भी
सोने-चाँदी के ढेरों का अहसास कराता है
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ज्योतिर्मय हो जाता है।

सुश्री आदर्श आर्या
आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९५५७८७३६३३

आरक्षण : एक अनर्थकारी अन्याय

(गतांक पृष्ठ ३४ से आगे)

रामनिवास 'गुणग्राहक'
वैदिक प्रवक्ता, धर्माचार्य, भरतपुर (राज.)
चलभाष : ९०७९०३९०८८, ८७६४२४४१४२

कुछ राजनेता व उनके सुविधाभोगी बुद्धिजीवी तर्क फैंकते हैं कि आरक्षण पिछड़ों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए है। यह एक चोट से टूटकर बिखर जाने वाला कुतर्क है। पता नहीं आज के बुद्धिजीवियों के मन और मस्तिष्क को किस तरह का लकवा मार गया है कि वे धन देकर किसी के पिछड़ेपन को दूर करने का सपना देखते रहते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में जीवन को ऊँचा उठाने का उपाय एकमात्र विद्या–विज्ञान को ही माना जाता है। आज के तकनीक प्रधान युग में विद्या–विज्ञान के क्षेत्र में तेजी से कदम बढ़ाने वाले राष्ट्र समृद्धि के शिखर पर पहुँच जाते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में भारत के प्रबुद्ध राजनेता इस नीति की गम्भीरता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं। जय जवान जय किसान के साथ जय विज्ञान का नारा भारत में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। हमारे समाज शास्त्रियों की समझ में यह बात कब आएगी कि आरक्षण के द्वारा नौकरी और उसमें निरन्तर प्रोन्नति प्रदान करके हम किसी का किञ्चित भी भला नहीं कर रहे। विद्या–विज्ञान से सम्पन्न व्यक्ति जीवन की हर ऊँचाई को छू सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सुविधाएँ देकर पिछड़ों को उच्च शिक्षित करके उन्हें सच्चे अर्थों में राष्ट्र की मुख्यधारा का अग्रगामी बनाया जा सकता है। आरक्षण तो उल्टे उनके बौद्धिक विकास को कुण्ठित करने वाला सिद्ध हो रहा है। जिसे ४०–५० प्रतिशत अंक ही सरकारी नौकरी दिला सकते हैं, वह ७०–८० प्रतिशत अंक लाने के लिए प्रयास क्यों करेगा? चाहे कोई माने या न माने हमारे आरक्षण प्रिय राजनेताओं से अधिक पिछड़ों का कल्याण हमारे आनन्दकुमारजी कर रहे हैं, जो सुपर ३० के माध्यम से समाज के अति पिछड़े परिवार के बच्चों को चुनकर उन्हें प्रशिक्षित करके आई.आई.टी. जैसे उच्च संस्थानों में प्रवेश दिलाकर उन्हें इंजीनियर बना रहे हैं। सुधी पाठक स्वयं विचार करें कि ४०–५० प्रतिशत अंक वालों को नौकरी व प्रोन्नति देना अधिक अच्छा है या उन्हें प्रशिक्षित करके ऐसा योग्य बना देना कि वे देश ही नहीं दुनिया के किसी भी भाग में जाएँ वहीं वे अपनी प्रतिभा के बल पर सम्मानित स्थान प्राप्त करें।

संस्कृत साहित्य में विद्या को धन से ऊँचा स्थान सदा ही प्राप्त रहा है।

'अन्नदानं परं दानं, विद्या दानं ततः परम्।
अन्नेन क्षणिकः तृप्ति यावज्जीवनं विद्यया।।'

अर्थात् अन्न–दान सबसे बड़ा दान है, लेकिन विद्यादान उससे भी बड़ा है, क्योंकि अन्न से क्षणिक तृप्ति होती है और विद्या जीवनभर काम आती है। इसी प्रकार एक अन्य नीतिकार ने लिखा है– **'स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।'** धन की दृष्टि से राजा तो सर्वोपरि होता है, राजा का मान–सम्मान तो उसके अपने देश में ही होता है, लेकिन विद्वान धरती तल पर कहीं भी जाएगा वह सर्वत्र मान–सम्मान का अधिकारी माना जाएगा। रही धन से सामाजिक सम्मान की बात तो धनवान चाहे अवर्ण हो या सवर्ण अगर वह दूसरों की सहायता, सहयोग नहीं करता, किसी के काम नहीं आता, स्वार्थी, लालची और कंजूस है तो सामाजिक स्तर पर उसका मोल आज भी दो कौड़ी का माना जाता है। उलटे देखा यह गया है कि अयोग्य व अपात्र व्यक्ति के पास धन आ जाता है तो उसका स्वभाव बहुधा बिगड़ जाता है, वह घमण्डी, अहंकारी होकर समाज में बिगाड़ ही पैदा करता है। इस प्रकार आरक्षण के बल पर किसी को आगे बढ़ाना, समाज की मुख्य धारा में लाने का सपना वर्तमान समाज–विज्ञान की दृष्टि से पिछड़ी सोच का सपना बना कर रह गया है। जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान अपना प्रभाव दिखाने लगा है, ऐसे में वह दिन दूर नहीं जब दलित कहे जाने वाले वर्ग से ही शिक्षा के क्षेत्र में शासकीय सहयोग देने की माँग उठने लगेगी। क्योंकि मनुष्य को सच्चा सम्मान, जीवन–कल्याण, शिक्षा (विद्या) से ही प्राप्त होता है। किसी के अनुग्रह से प्राप्त प्रतिष्ठा मानव मन में कोई स्वस्थ सोच व स्थायी आनन्द की अनुभूति कभी नहीं देती। उसके हृदय में भय या अहंकार के भाव तनिक कुरेदने पर स्पष्ट दिखने लगते हैं। चाहे भय का भाव हो या अहंकार का इनमें से किसी एक के रहते मनुष्य का जीवन सहज व सरल नहीं रह पाता, उसके हर व्यवहार में ग्लानि या घमण्ड उथल–पुथल मचाते ही रहते हैं।

सामाजिक, व्यक्तिगत स्तर पर आरक्षण के अनर्थकारी प्रभाव को जाँचने–परखने के बाद राष्ट्रीय स्तर पर इसके कुप्रभाव की एक झलक देखते हैं। इस बात को कौन नहीं जानता कि ८०–८५ प्रतिशत अंक पाने वाले प्रतिभावान युवक के स्थान पर ४०–४५ प्रतिशत अंक पाने वाला युवक किसी काम को करेगा तो उस कार्य की गुणवत्ता गिरेगी ही। अगर प्रशासनिक पदों पर पहुँचे ऐसे प्रोन्नति प्राप्त युवकों की कार्यक्षमता का आकलन करें तो स्थिति और दयनीय हो जाती है। विज्ञान, चिकित्सा व तकनीकी क्षेत्र में ऐसा आरक्षण कैसे कीर्तिमान स्थापित करेगा, यह सोचना भी भयाक्रान्त कर देता है। हमारे आरक्षण समर्थकों का उपचार आरक्षण की सुविधा प्राप्त कर बने हुए डॉक्टरों–वैद्यों से कराना अनिवार्य कर दें तो देश में आरक्षण का समर्थक एक भी न मिले। आरक्षण के कारण हमारे देश से प्रतिभा पलायन इतना बढ़ गया है कि देश के नीति निर्धारक इसको लेकर चिन्तित दिखने लगे हैं। इतना ही नहीं, देश की आर्थिक प्रगति की गति को आरक्षण के कारण होने वाले नुकसान को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियाँ भी हमें चेतावनी देने लगी हैं। देखा यह भी गया है कि सरकारी संस्थानों में एक व्यक्ति अपने वर्षों के परिश्रम व अनुभव के चलते सुचारू ढंग से काम कर रहा था, अचानक आरक्षण की सीढ़ी पर सवार होकर एक कनिष्ठ व्यक्ति उसका अधिकारी बनकर पदस्थापित हो जाता है। ऐसी स्थिति में जहाँ कार्य व्यवस्था की गुणवत्ता

प्रभावित होती है वहीं कई ऐसी दुविधाएँ भी उत्पन्न हो जाती हैं जिनके बारे में कुछ भी बोलना या लिखना नई दुविधाएँ खड़ी कर सकता है। ऐसे ही कई अवांछित अनुभवों के चलते निजी संस्थान आरक्षण को स्वीकार करने से दूर भाग रहे हैं। आज की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा छोटे से बड़े तक सभी क्षेत्रों में इतनी बढ़ गई है कि किसी भी क्षेत्र में आरक्षण या अन्य ऐसी ही अवांछित परिस्थिति के कारण किसी भी क्षेत्र में हमारी उत्पादन क्षमता या गुणवत्ता में गिरावट आती है तो विदेशी यहाँ तक भारत के साथ खुला व आन्तरिक द्वेष रखने वाले देशों की निजी व सरकारी कम्पनियाँ हमारे बाजार पर एकाधिकार जमाने के सपने देखने लगती हैं।

इस प्रकार हम निष्पक्ष होकर न्याय दृष्टि से विचार करें तो आरक्षण हर दृष्टि से, हर स्तर पर घाटे का सौदा बनकर रह गया है। अगर इसके लाभों पर भी विचार करके देखें तो नि:सन्देह लाखों युवकों व उनके परिवारों को इससे आर्थिक लाभ भी मिला ही होगा, लेकिन वहाँ भी एक चिन्तनीय स्थिति देखी जा रही है। आरक्षण के प्रावधानकर्ताओं के मन–मस्तिष्क में सम्भवत: मुख्य रूप से यही भावना रही होगी कि इससे पिछड़े–अति पिछड़े परिवारों को नौकरी मिल जाएगी और उनका जीवन संकटों व समस्याओं से मुक्त हो जाएगा। यह सोच निश्चित रूप से मानवीय है। ऐसा करना प्रत्येक राष्ट्र व राष्ट्र के कर्णधारों का राष्ट्रीय कर्तव्य है। आज अगर हम न्याय दृष्टि से देखें तो उनका वह सपना आज भी अधूरा ही दिखता है। कड़वा सच यह है कि जितने पिछड़ों ने आरक्षण का आर्थिक लाभ उठाया है उससे कई गुना अधिक पिछड़े और अति पिछड़े आज भी भयंकर अभावों में कष्टपूर्ण दिन बिता रहे हैं। कारण कि एक बार आरक्षण का लाभ प्राप्त कथित पिछड़े या राजनीतिक स्तर पर अपना प्रभाव बना चुके लोगों के परिवारों या उनके आगे–पीछे घूमने वालों ने ही आरक्षण से प्राप्त सुविधाओं पर एकाधिकार जैसा बना रखा है। कई बार क्रीमीलेयर का नाम देकर उन्हें समाज की मुख्य धारा में आ चुके मानकर आरक्षण की सुविधा से मुक्त करने के प्रयास भी हुए हैं, मगर ऐसा कर पाना कितना कठिन है, यह देश कई बार देख चुका है। घर के बड़ों ने एक बालक को चलना सिखाने के लिए एक वॉकर ला दिया। वॉकर के सहारे बालक चलना सीख गया, उसके बिना भी सरपट दौड़ने लगा तो परिवार के बड़ों ने सोचा चलो अब यह वॉकर छोटे बच्चे को दे दें। वह भी इसके सहारे आराम से चलना सीख लेगा। यह विचार कर जब उन्होंने वॉकर लेकर दूसरे छोटे बच्चे को दिलाने का प्रयास किया तो बड़ा बालक आँखें दिखाने लगा। उसे समझाया कि यह छोटे बालकों के लिए सुविधा के रूप में दिया जाता है। अब तुम बिना इसके चलने में समर्थ हो, इसलिए इसे छोटे भाई को दे दो। इतना सुनकर वह सुविधा भोगी बालक बिगड़ गया। रोने–चिल्लाने लगा। उसने रो–रो कर सारा घर (देश) सिर पर उठा लिया। लोकतन्त्र की दुर्बलता के कारण लाख चाहते हुए भी शासन को ऐसी अनुचित माँगों के सामने भी झुकना पड़ता है जिनके पीछे लम्बा–चौड़ा भीड़ तन्त्र खड़ा हो। अनेक प्रकार की कहीं–कहीं परस्पर विरोधी विविधताओं से भरे, विचित्र प्रकार की निर्मूल आस्थाओं का अखाड़ा बना दिये गये भारत देश के पाप की पराकाष्ठा को प्राप्त हो चुके स्वार्थ में आकण्ठ डूबे राजनेता अपनी मूर्खतावश वोट बैंक के लालच में पड़कर कई प्रकार के कच्चे प्रलोभन दे बैठते हैं जिनको पूरा करने में देश को अपनी गर्दन अपने ऐसे ही बिगड़ैल बच्चों के रक्त पिपासु नाखून वाले हाथों में फँसानी पड़ती है। देश के ऐसे ही कई बिगड़ैल बच्चे जब–तब मेरे प्यारे–दुलारे भारत वर्ष को अपने नाखूनों से नोच–नोच कर नौ–नौ आँसू रुलाते हैं और हम राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर भी अपने इन निर्बुद्धि बालकों को न तो समझा पाते हैं और न इनके प्रति दण्ड व्यवस्था लागू कर पाते हैं।

मेरे देश–बन्धुओं! सच मानो, हमारे हृदय में किसी के प्रति नाममात्र का भी कोई दुर्भाव नहीं है। हाँ, जब राष्ट्र की बड़ी–बड़ी समस्याओं से कोई बालकपन जैसी खिलवाड़ करता है, आरक्षण आदि के नाम पर कोरी राजनीतिक पैंतरेबाजी की जाती है, जन्मगत जाति–पाति के आधार पर ऊँच–नीच का भेदभाव पैदा करके सम्मान–बड़प्पन व किसी प्रकार की सुविधा को जन्मसिद्ध अधिकार समझकर सामाजिक समरसता व राष्ट्रीय अखण्डता को टुकड़ों में बाँटने का सामाजिक व राष्ट्रीय पाप किया जाता है तो उनको दर्पण दिखाना प्रत्येक देशभक्त भारतीय का राष्ट्रीय कर्तव्य हो जाता है। इस जातिवादी ऊँच–नीच व भेदभाव की विषाक्त विचारधारा ने राष्ट्र को बहुत गहरे घाव दिये हैं। देश का भूत तथा कथित ऊँचे कहलाने वाले जन्माभिमानी ब्राह्मणों के अन्याय से गहरे घाव खाए हुए था तो वर्तमान कथित रूप से दलित–पिछड़े व निम्न कहलाने वालों के वैसे ही कृत्यों से वैसी ही स्थिति से जूझ रहा है। पहले देश की अधिकांश प्रतिभा को सिर ही नहीं उठाने दिया जाता था, उसे विद्या व शिक्षा से ही वंचित कर दिया जाता था। लेकिन आज एक विकसित प्रतिभा, शिक्षित युवा का तिरस्कार कर दिया जाता है। **प्रतिभा के साथ न्याय तब भी नहीं था, आज भी नहीं है। तब भी मुट्ठी भर लोग धर्म ग्रन्थों की मनमानी व्याख्या करके सामाजिक प्रतिष्ठा के बल पर यह अन्याय करते थे, अब भी मुट्ठी भर लोग राष्ट्र के संविधान की मनमानी व्याख्या करके राजनीतिक प्रतिष्ठा (वोट बैंक) के बल पर यह अन्याय कर रहे हैं।** कोई भी आरक्षण समर्थक इस आरक्षण को ब्राह्मणों द्वारा किये गये अत्याचारों से अच्छा व न्याय पूर्ण सिद्ध करने का बौद्धिक साहस नहीं कर सकता। अन्तर इतना है कि पहले यह अन्याय जन्माभिमानी कथित ब्राह्मण करते थे, और आज जन्म से शूद्र निम्न व दलित कहलाने वाले करते हैं। ऐसा लगता है और कई बार तो कुछ बड़बोले कथित दलित नेता व बुद्धिजीवी आवेशवश ऐसा लिख व बोल भी जाते हैं कि यह आरक्षण ब्राह्मणों द्वारा सदियों तक किये गये अमानवीय अत्याचारों का प्रतिशोध है। यह तो इतिहासों में वर्णित कबीलों के आपसी वैर के चलते **'खून का बदला खून'** जैसी क्रूर परम्परा जैसा हो गया। क्या मानवता का इतिहास ऐसी रक्त पिपासु प्रवृत्तियों से लहूलुहान होता रहकर खून के आँसुओं से लिखा जाता रहेगा? क्या आज का सभ्य, शिक्षित व विज्ञानवादी मानव भी ऐसी पिशाची प्रवृत्तियों से मुक्त होने के लिए अपने हृदय की सद्भावनाओं व मस्तिष्क के मानवतावादी उदार विचारों को वाणी और व्यवहार के माध्यम से धराधाम पर साकार नहीं होने देगा? ■

(शेष भाग आगामी अंक में)

कहेगा फिर से एक स्वर में विश्व सारा विश्वगुरु भारत देश हमारा प्यारा

आचार्य सोमेन्द्रश्री
संस्थापक : दिव्य ज्योति अनुसंधान सेवा संस्थान
मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ९४१०८१६७२४

आँखों में भविष्य की कल्पनाएँ, बाजुओं में नवीन रूधिर से भरी ऊर्जा मुट्ठियों में काल के प्रवाह को रोक देने की क्षमता, तनी भृकुटि पर आक्रोश की खींची रेखाएँ, होंठों पर खेलती मोहक मुस्कान, मन में आकाश को छूने वाली तरंगें, अनुभव विहीन मस्तिष्क में विश्वास पूरित ऊहा, कुछ गुनगुनाहट, कुछ खिलखिलाहट, कुछ तरंग, कुछ उमंग, कुछ मोहक सपने, कुछ विद्वेष से भरी खीझ, इन्द्रधनुषी रंगों में खोई डूबी कुछ कल्पनाएँ, कुछ दीवानगी भरे कदम, यदि इन सबको मिलाकर एक शब्द में कहा जाए तो वह है– युवा अवस्था।

मादकता से पूरित अलमस्त जवानी,
युवा अवस्था जीवन का सबसे मूल्यवान क्षण है।

'शबनम की तरह खूबसूरत परन्तु तुहिन बिन्दू सा ही क्षणिक'। युवा शरीर में नवीन ऊर्जा शक्ति का स्रोत इठलाता रहता है। उसमें सदा नूतन बिजलियाँ कौंधती रहती हैं। इसीलिए युवा कदमों को रोक पाना या दिशा दे पाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। युवाओं की फड़कती शक्ति को सही मार्ग पर लाकर ही देश के भवन की भित्ति को सुदृढ़ किया जा सकता है। युवा स्वर जहाँ मादक और मोहक होता है वहीं वह विध्वंसक और विनाशक भी होता है। युवा जहाँ अनुसरण करने वाला दीवाना होता है वहीं वह परम्पराओं और मर्यादाओं का तोड़ने वाले विद्रोही भी होता है। आज का युवक पथभ्रष्ट, आत्मग्लानि से खीझता, तोड़फोड़ और विध्वंस से दहकता, नशों की लतों में डूबता, जीवन की समस्याओं से भागता, जमाने भर से शिकायत करता, कुण्ठाओं से भरा, अनुशासन और शीलव्रत को भंग करता नजर आ रहा है। आज वह एक दोराहे पर मूक–दर्शक बना खड़ा है। जहाँ उसे राह नजर नहीं आ रही है। अश्लीलता की आग में उसका मन और मस्तिष्क झुलस रहा है। तरह–तरह के दुर्व्यसनों से उसका नैतिक पतन हुआ जा रहा है। आज आवश्यकता है उसे नैतिकता, संयम, अनुशासन और कर्तव्य बोध कराने की। नव भारत के निर्माण करने के लिए उन चरित्रवान बलिदानी वीरों की आवश्यकता है जो अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए सहर्ष कह सकें–

'वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम्' अर्थात् हम तुझ पर बलिदान करने वाले हों, आन–बान–शान के प्रतीक चरित्र के तप से प्रदीप्त श्रम की बूँदों से अभिषिक्त युवाओं से ही इस राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। हम विस्मृति के गर्त से अपनी महान् संस्कृति को पुनर्जीवित करें। हम अपने ज्ञानी–विज्ञानी ऋषि–मुनियों की संस्कृति को जिसमें भौतिक सुख के साथ–साथ आध्यात्मिक आनन्द की संयुक्त धारा है। उस भागीरथी को पुन: प्रवाहित करें। आज भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, अज्ञान, अन्ध परम्परा से दुराचार अभाव का दानव फिर जाग उठा है। उससे इस देश को बचाना होगा। आज का युवा तन ढाँकने से ज्यादा ऊपरी दिखावे पर खर्च करता है। वह भौतिकवादी बनकर ऊपरी दिखावे को अत्यधिक महत्व देने लगा है। और उसकी प्राप्ति के लिए अनुचित ढंग से धन प्राप्त करता है। जिससे वह गलत मार्ग का राही बन जाता है। विलासिता और मादकता का जीवन यापन करने के लिए वह किसी भी हद को पार कर सकता है। लेकिन यह अनुचित कार्य युवाओं को नहीं करना चाहिए। अपितु मादकता का जीवन त्याग कर हम कठोर युवा बनने का प्रयास करें। जैसा कहा गया है–

पत्थर सी हो मांसपेशियाँ लौह से भुजदण्ड अभय।
नस–नस में हो आग सी, तभी जवानी पाती जय।।

स्वामी रामतीर्थजी ने कहा था– 'मेरे भारत के होनहार युवकों! भारत का भविष्य ही तुम्हारा भविष्य है और इसके निर्माण का दायित्व तुम्हारे कन्धों पर है। उठो जागो, अपने देशवासियों को जगाओ। सूर्योदय से पूर्व ही अपने कर्तव्य का निर्धारण कर लो, अपने कर्मपथ पर अग्रसर हो जाओ। एक क्षण भी वृथा मत गँवाओ। यदि तुम आलस्य या प्रमाद में डूबे रहे तो सूर्य पश्चिम को चला जाएगा तब तुम्हारे लिए कुछ भी न हो सकेगा।'

उठो! अतीत को वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालो और साहस पूर्वक अपने पवित्र संकल्प से शक्तिशाली वर्तमान को उज्ज्वल भविष्य की दौड़ में नियोजित करो। मेरे देश के भावी कर्णधारों, आगे बढ़ो। पुरानी अकर्मण्यता पर विजय प्राप्त करो। जहाँ परिवर्तन की आवश्यकता है वहाँ परिवर्तन करो और जहाँ गति की आवश्यकता है वहाँ गति लाओ। निर्बाध गति से लक्ष्य की ओर बढ़ते जाओ। जब तक सफलता तुम्हारे चरण न चूम ले और विजयश्री आपके गले का हार न बन जाए। तब तक रुकने का नाम न लो। हमें अपने विगत के महान् आदर्शों के अनुसार अपने जीवन को ढालना होगा। हमें वर्तमान समय के कायरता मुक्त विचारों को त्यागकर मातृभूमि के हित में राष्ट्रीय गौरव से ओतप्रोत आत्मविश्वास और समर्पण के भव्य भावों को अपने श्वास–प्रश्वास में बसाए हुए सच्चे जीवन्त युवक बनना होगा।

हमारे आदर्श हैं वे पूर्व पीढ़ी के लोग जिन्होंने देश की आजादी व समाज सुधार एवं देश को आगे बढ़ाने में योगदान दिया, वे भी युवक थे। जिन्होंने फाँसी के फन्दों को देखकर मस्ती भरे गीत गाए थे, जिन्होंने राष्ट्र यज्ञ में अपने तन की समिधा की आहुति दी, उन्होंने आजादी की पुरवा हवा हमारे लिए बहाई जिसमें हम सुखपूर्वक साँस ले सकें। मित्रों आज फिर देश की एकता और अखण्डता पर चोट पड़ रही है। आज फिर भारत माता के शरीर पर घाव उकेरे जा रहे हैं। उन घावों को देश के नवयुवक

मरहम बनकर भरें। उसके लिए हमें उन महापुरुषों को अपना आदर्श बनाना होगा, जो देश के लिए अपना सब कुछ अर्पित कर गए। वर्तमान में ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो देश से साम्प्रदायिकता की आग को मिटा सके। हमसे नाराज भाइयों को हृदय से लगाकर मुख्य धारा में जोड़ सकें। लेकिन कुछ स्वार्थी तत्व इस पवित्र कार्य में बाधा उत्पन्न करने के लिए तैयार खड़े हैं। परन्तु युवा शक्ति के सामने उनकी गन्दी मंशा कभी पूरी नहीं हो सकेगी। देश की उन्नति में युवा शक्ति का होना बहुत ही जरूरी है। युवाओं को अपना लक्ष्य निर्धारित कर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने के लिए दूरदृष्टि रखकर दृढ़ संकल्प करना चाहिये। वह कठोर परिश्रम के साथ पूर्ण अनुशासन अपनाकर चरित्र से सुसज्जित होकर ही आदर्श युवक कहला सकता है।

'युवा उम्र से नहीं होता अपितु मन से होता है। उसके अन्दर कार्य करने की क्षमता कितनी है उससे युवाशक्ति का परिचय होता है।' लेकिन वर्तमान में युवाशक्ति गलत संगति में पड़कर अपनी जवानी को नष्ट कर रही है। उसे सही मार्ग पर लगाकर उसका सदुपयोग करना चाहिये। अपने प्राचीन सद्ग्रन्थों, साधु–महात्माओं व समाज सुधारकों से प्रेरणा लें। सच्चे अर्थों में युवा कहलाने के अधिकारी बनें। देश की उन्नति में सहायक बनकर भारत को फिर से विश्वगुरु का दर्जा दिलाए जिससे पूरा विश्व एक स्वर में कह सके–

कहेगा फिर से एक स्वर में विश्व सारा।
विश्वगुरु भारत देश है हमारा प्यारा।। ■

सात दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

बीना, जिला : सागर , मध्यप्रदेश में श्री सुरेश सैनी, श्रीमती साधना सैनी और आपके परिवारजनों तथा मित्रमण्डली द्वारा १३ से १९ फरवरी तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक आयोजित किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा कन्या गुरुकुल भुसावर राजस्थान की आचार्य सुश्री प्रियंका शास्त्री और मन्त्र पाठकर्ता सुश्री सुमन शास्त्री और करुणा शास्त्री थी। बीना क्षेत्र आर्य समाज की गतिविधियों से शून्य वैदिक प्रचार–प्रसार विहीन क्षेत्र है। उपर्युक्त वेदपारायण का आयोजन ज्ञात दृष्टि में प्रथम बार हुआ है। वेदनिष्ठ श्रीमान् सुरेश सैनी वर्ष २०१८ में गंजबासौदा में यजुर्वेद और सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन अपने निज शक्ति सामर्थ्य से करवा चुके हैं। उपर्युक्त आयोजन पूर्वी गणेश वार्ड में किया गया जहाँ के निवासियों द्वारा भरपूर सहयोग समर्थन करते हुए आयोजन की सराहना की। उपरोक्त कार्यक्रम में गायत्री परिवार विदिशा और बीना के कई परिजनों ने भाग लिया। आर्य समाज कुरवाई से राममुनी आर्य, सिरोंज से शिवमुनी, आर्य मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री ओमप्रकाश आर्य, गंजबासौदा आर्य समाज से शिवचरण पांचाल, भगवतदत जिज्ञासु, दशरथ शर्मा व अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता पधारे।

सुश्री प्रियंका शास्त्री द्वारा परिवार निर्माण, भ्रातृ प्रेम और ईश्वर उपासना और देश आराधना पर वेद के अनुसार प्रकाश डाला। उपरोक्त कार्यक्रम को सफल बनाने में अमरेश सैनी, डॉ प्रदीप वाल्मीक, नरेश सैनी, अवधेश सैनी, अजय सैनी, पंकज सैनी, प्रेम रोहित, सुरेश वर्मा, सत्येन्द्र वर्मा, राजेश वर्मा, रामकिशन सैनी, नविन बंसल, रामकृष्ण रघुवंशी का सराहनीय योगदान रहा। उपर्युक्त आयोजन में बीना के परिजनों के साथ मण्डी बमोरा, कुरवाई, गंजबासोदा ,विदिशा, भोपाल, इटारसी, नर्मदापुरम, बनापुरा, उज्जैन, इन्दौर, सागर, खुरई और छत्तीसगढ़ कोरबा अन्य अनेक स्थानों से परिजन पधारे। दिनांक १२ को भव्य शोभायात्रा और समापन दिवस दिनांक १९ को लगभग १५०० भक्तों की भोजन प्रसादी (ऋषि भंडारा) की व्यवस्था की गई इसके अतिरिक्त अन्य दिनों में बाहर से पधारने वाले समस्त आगंतुक महानुभाव एवं विद्वान महानुभाव के भोजन विश्राम की उत्कृष्ट व्यवस्था सैनी परिवार की ओर से की गई। वैदिक संसार परिवार सैनी जी एवं सैनी जी के समस्त परिजनों के सुख शांति, समृद्धि युक्त उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घायु जीवन की कामना करता है।

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

गतांक पृष्ठ ३५ से आगे

संकलन एवं सम्पादन
चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'
१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

व्यंजन वर्ण : (२८) 'श'

छप्पय(२):श्री श्रीपति शुभ शक्तिमान श्रेपिय शुचिधारी।
श्रुति श्रुति श्रोता श्रेष्ठ श्लाघ्य संवउसु शकारि।।
शंवर शायी शक्ति शिरोमणि शोभाशोमित।
शक्तिमान श्रीमान् शरण शंकर ले शोधित।।
दरबारी लाल श्रय श्याम शुध शुभग शुभयता शक्तिधर।
बनिशंका शठता शत्रुता श्राप शुष्कता शमनकर।।

अर्थ : 'श' हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान प्रधानतया तालू है। अत: इसे तालव्य 'श' कहते हैं। यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है इसलिए यह उष्म भी कहलाता है।

लक्ष्मी उनके पति विष्णुजी शुभ, शक्तिमान शुचिधारी व पर अवलम्ब है। वे वैदिक साहित्य वेद निगम, उपनिषद आदि के ज्ञान के श्रेष्ठ सुनने वाले हैं। वे प्रशंसा प्राप्त पुण्यात्मा, कल्याणकारी, जल के ऊपर शयनकर्ता, शोभा सम्पन्न और शक्ति शिरोमणि हैं। ये शक्तिमान श्रीमान् शिवशंकर जी की शरण लें। उनके सान्निध्यता का सेवन करें। हाँ, शुद्धि प्राप्ति तो पहले ही है। दरबारीलाल कहते हैं कि शंकरजी के सान्निध्य सेवन से वे शुभ, सौभाग्यशाली शक्तिधारी और कल्याणकारी बन जाएँगे। सन्देह, सूखापन, रसहीनता और स्नेहहीनता दूर भाग जाएगी। ■

धर्म सरिता (भाग-७)

रमेशचन्द्र भाट
कवि, लेखक, समाजसेवी एवं
से.नि. तकनीकी अधिकारी, परमाणु ऊर्जा विभाग
पसन्द नगर, कोटड़ा, अजमेर (राजस्थान)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

जैन मत : ३०१७ वर्ष पूर्व वैशाली (वर्तमान बिहार का हाजीपुर जिला) के लिच्छवी वंश में राजकुमार वर्धमान का जन्म हुआ। गौतम बुद्ध की तरह इन्होंने भी युवावस्था में राजपाट छोड़कर १२ वर्षों तक कठोर तपस्या की। इस दौरान वे अहिंसा के पथ से बिल्कुल नहीं भटके व खानपान का भी बहुत संयम रख अपनी इन्द्रियों को सम्पूर्ण रूप से अपने वश में कर लिया। उन्हें परम ज्ञान की प्राप्ति हो चुकी थी इसलिए उन्हें महावीर और जिन (विजयी) के नाम से जाना जाने लगा। जिन 'जि' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है जीतना। 'जिन' अर्थात् 'जीतने वाला'। जिसने स्वयं को जीत लिया उसे जितेन्द्रिय कहते हैं। जैन का मतलब कर्मो का नाश करने वाले 'जिन' भगवान के अनुयायी।

जैन मत भी बौद्धों के समान भारत की श्रमण परम्परा से निकला है। इसमें धर्म ज्ञान प्रसार के लिए समय–समय पर अनेक महापुरुषों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्हें तीर्थंकर कहा गया है। इनके २४ तीर्थंकरों में ऋषभदेवजी प्रथम व महावीर अन्तिम तीर्थंकर हैं। २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भी एक क्षत्रिय थे। उनके मुख्य सिद्धान्त थे– सदैव सच बोलना, अहिंसा, चोरी ना करना और धन का त्याग कर देना। वर्धमान महावीर से ही जैन मत का समाज में प्रचलित होना माना जाता है। इन्होंने पार्श्वनाथजी के सिद्धान्तों में पाँचवाँ सिद्धान्त **'पवित्रता से जीवन बिताना'** जोड़ दिया। जैन मत के अनुसार धर्म वस्तु का स्वभाव समझाता है। इसलिए जब से सृष्टि है, धर्म भी है और जब तक सृष्टि रहेगी धर्म भी रहेगा। बुद्ध की भाँति महावीर स्वामी ने शरीर और मन की पवित्रता, अहिंसा और मोक्ष को जीवन का अन्तिम उद्देश्य माना पर उनका मोक्ष बुद्ध के निर्वाण से भिन्न है। पुद्गल कर्म यानी कि जो कर्म संसार से बाँधने वाले हैं ऐसे कर्मों से मुक्त होकर जीव (आत्मा) का सिद्ध हो जाना जैन मत में मोक्ष माना जाता है। मोक्ष के उपरान्त आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप (अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त शक्ति) में आ जाती है। ऐसी आत्मा को सिद्ध कहते हैं और सिद्ध ही परमात्मा है जबकि बौद्ध मत में पुनर्जन्म से मुक्ति को निर्वाण माना गया है।

जैन मत में मोक्ष प्राप्ति हर जीव के लिए उच्चतम लक्ष्य माना गया है। तत्वार्थ सूत्र १.१ में लिखा है– **'सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग:'** सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान व सम्यक् चारित्र से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। महावीर के अनुसार मोक्ष प्राप्त करने के लिए स्वयं के आचरण, ज्ञान और विश्वास को शुद्ध करना चाहिये और पाँच प्रतिज्ञाओं (अणुव्रत) का पालन अवश्य करना चाहिये। जैन मत में तप की भी बहुत महिमा है। उपवास को भी एक तप के रूप में मानते हैं। इनके अनुसार कोई भी मनुष्य बिना ध्यान, अनशन और तप किये अन्दर से शुद्ध नहीं हो सकता। यदि आत्मा की मुक्ति चाहो तो ध्यान, अनशन और तप करना ही होगा। महावीर ने पूर्ण अहिंसा पर जोर दिया और तब से **'अहिंसा परमो धर्मः'** जैन मत का एक प्रमुख सिद्धान्त माना जाता है।

गुजरात के राजा कुमारपाल ने आदर्श जैन राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। प्राणी हिंसा, शिकार, मांस भक्षण आदि को रोकने व यज्ञ के अवसर पर पशु हिंसा के बदले ब्राह्मण पुजारियों को अनाज होम करने का आदेश दिया। जैन मत के अनुसार पञ्च अणुव्रतों का पालन करना चाहिये जो हैं– अहिंसा अणुव्रत, सत्य अणुव्रत, अस्तेय अणुव्रत, अपरिग्रह अणुव्रत व ब्रह्मचर्य अणुव्रत। जो कि पतंजलि योग दर्शन के अष्टांग योग के पाँच यम ही हैं। लगभग ३०० ई.पू. जैन मत दिगम्बर (मूर्तियाँ बिना वस्त्र के) और श्वेताम्बर (मूर्तियाँ श्वेत वस्त्र धारी) में विभाजित हो गया। कई राजाओं ने जैन मत को अपनाया और उसका प्रचार भी किया। इन राजाओं में प्रमुख है मगध के राजा बिम्बिसार, अजातशत्रु, पाटलिपुत्र में चन्द्रगुप्त मौर्य व अशोक के पौत्र सम्प्रति। इस मत के नियम कठिन होने के कारण यह साधारण जन में नहीं फैल पाया।

इनके अनुयाइयों ने अपने तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनाकर उन्हें पूजना शुरू कर दिया। जहाँ वेदों में निराकार परमेश्वर की आराधना का विधान था अब पत्थर की मूर्तियों का पूजन शुरू हो गया। सात्विक मूर्तियों व मन्दिरों के शान्त वातावरण ने लोगों को आकर्षित किया व आमजन का इनकी तरफ रूझान बढ़ा जिससे इनके मन्दिरों में दान के रूप में बहुत धन आने लगा।

(**क्रमशः :** पौराणिक मत व अन्य मतों का उदय) ■

वैदिक संसार के प्रकाशन के सम्बन्ध में
घोषणा फार्म–४ (नियम ८ देखिए)

१.	प्रकाशन का स्थान	१२/३, संविद नगर, इन्दौर (मप्र)
२.	पत्र का नाम	वैदिक संसार
३.	प्रकाशन अवधि	प्रतिमाह
४.	मुद्रक का नाम	इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँअर मंडली, इन्दौर
	क्या भारतीय नागरिक हैं?	हाँ
५.	सम्पादक का नाम	गजेश शास्त्री
	क्या भारतीय नागरिक हैं?	हाँ
६.	प्रकाशक का नाम	सुखदेव शर्मा
	क्या भारतीय नागरिक हैं?	हाँ
७.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	सुखदेव शर्मा १२/३, संविद नगर, इन्दौर

सुखदेव शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : मार्च, २०२३ **सुखदेव शर्मा (प्रकाशक)**

गतांक पृष्ठ ३३ से आगे

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

ई. चन्द्रप्रकाश महाजन
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

१५. ऋग्वेद भाष्य (सन् १८७७ ई.)

ऋग्वेद वह ज्ञान है जिसमें पदार्थों के गुणों का और धर्मों का वर्णन होता है। ऋषि दयानन्द ने जिस वैदिक धर्म की व्याख्या सत्यार्थप्रकाश के पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में की थी, उसका मुख्य आधार वेद ही है। ऋषि दयानन्द का मानना था कि **''पाँच सहस्त्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई मत नहीं था। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से, अविद्यान्धकार के भूगोल में विस्तृत होने-से, मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया।''**

आर्यजाति के कल्याण व पुनरुत्थान के लिए ऋषि दयानन्द वेदों के प्राचीन शुद्धस्वरुप का प्रकट होना आवश्यक समझते थे, इसके लिए उन्होंने आर्ष-पद्धति से वेदभाष्य करने का संकल्प लिया। यदि ऋषि को बीच में ही विष न दिया गया होता तो वे अपने जीवनकाल में न केवल सम्पूर्ण ऋग्वेद का अपितु सामवेद और अथर्ववेद का भाष्य भी लिख जाते। चारों वेदों की भूमिका को समाप्त और जगदीश्वर को अच्छी प्रकार प्रणाम करके सम्पूर्ण ज्ञान के देने वाले ऋग्वेद के भाष्य को आरम्भ स्वामी जी ने किया। स्वामी जी के पत्र २१ अगस्त १८८३ जो मुंशी समर्थन जी को लिखा उसमें स्पष्ट है: ऋग्वेद का चौथा अष्टक भी पूरा हो गया है, पांचवें का एक अध्याय कल पूरा होगा और छठा मण्डल आज पूरा हो गया है। ऋग्वेद भाष्य एक वर्ष में पूरा हो जाएगा और एक डेढ़ वर्ष में अथर्व वेद और सामवेद भी पूर्ण हो जायेंगे। ऋषि दयानन्द अपने जीवन काल में इसे समाप्त नहीं कर सके। महर्षि ने इसे केवल संस्कृत भाष्य में रचा था।

इस भाष्य को करने से पूर्व स्वामी जी ने वेदभाष्य के नमूने का एक अंश प्रकाशित किया था। जिसमें गुजराती और मराठी अनुवाद भी था। स्वामीजी ने स्पष्ट रुप से घोषित किया था - **''मैं सारे वेदों का इसी शैली में भाष्य करुँगा। यदि किसी को इस पर आपत्ति हो तो पहले ही सूचित कर दें ताकि मैं उसका खण्डन करके ही भाष्य करुँ।''**

स्वामी जी ने वेदभाष्य करते समय प्रमुखता निम्न बातों को स्वीकार किया है-

(१) वेद ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरप्रदत्त और नित्य हैं।

(२) इसमें सत्य विद्याओं का बीज विद्यमान है।

(३) वेद में किसी व्यक्ति - विशेष का इतिहास या किसी प्रकार की कपोलकल्पित गाथायें नहीं है।

(४) वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से तर्क आदि से रहित नहीं, बल्कि तर्क संगत और स्वयंसिद्ध सत्य का आधार है।

(५) वेद स्वतः प्रमाण है, इसके प्रमाण के लिए प्रमाणान्तर की आवश्यकता नहीं।

(६) वेद के सभी शब्द यौगिक हैं।

(७) सभी वेद मन्त्रों का अर्थ आधियाज्ञिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं में हो सकता है।

(८) वेद मन्त्रों का अर्थ करते समय व्यत्यय मानना आवश्यक है क्योंकि वेद से व्याकरण का प्रादुर्भाव हुआ न कि व्याकरण से वेद का।

(९) ऋषि मन्त्रों के कर्ता नहीं अपितु द्रष्टा हैं।

(१०) वेद मन्त्रों का प्रतिपाद्य विषय ही देवता है, वह नियत नहीं, अपितु परिवर्तित भी हो सकता है।

(११) छन्द का प्रयोग गायत्री आदि छन्दों के लिए है। छन्दः नाम इसका इसलिए है कि इन्हीं से विश्व की समस्त वस्तुएं ओर उनका ज्ञान बंधा है। विश्व की प्रत्येक वस्तु की परिधि की इयत्ता छन्द से बंधी है। मन्त्र उसका नाम इसलिए है कि वह माननीय है और ज्ञान का आधार है।

(१२) स्वर ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत और उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि है जिससे उच्चारण पर बल पड़ता है और अर्थ में भी उपयोग है।

(१३) वेद नाम से चारों वेदों की चार संहिता में ही व्यवहृत होती है। शेष शाखायें और ब्राह्मण ग्रन्थ आदि वेदों के व्याख्यान हैं। देव दयानन्द जी का भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनों में उपलब्ध है। **(क्रमशः)** ■

प्रकाशक के नाम पत्र

आदरणीय सुखदेवजी शर्मा
सादर नमस्ते।

आपके द्वारा प्रकाशित वैदिक संसार पत्रिका मिली। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी अंक को सचित्र आवरण पृष्ठ बहुत ही उत्तम प्रकाशित किया एवं आपके द्वारा सम्पादकीय में भी सजीव वर्णन पढ़कर साक्षात् अनुभव हुआ। वैदिक संसार पत्रिका आर्य जगत् में वैदिक धर्म का डंका बजा रही है। वैदिक सिद्धान्तों से सबके मन–मस्तिष्क को सुख पहुँचाकर आह्लादित कर रही है।

महर्षि दयानन्द के द्विजन्मशताब्दी उत्सव के प्रारम्भ पर आपको बहुत–बहुत शुभकामना स्वीकार करें। परमात्मा आपको शताधिक वय प्रदान करे। आप इसी उत्साह एवं पुरुषार्थ से वैदिक संसार को ऊँचाइयाँ प्रदान करते रहें।

इस अवसर पर मैं अपनी दो लघु काव्य रचनाएँ महर्षि दयानन्द के सम्मान में श्रद्धान्जलि रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। प्रकाशित कर अनुग्रहीत करें। (पृष्ठ ४१ पर पढ़ें– सं.)

अम्बालाल विश्वकर्मार्य
विश्वकर्मा प्रतिष्ठान, पिपल्यामण्डी, मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ८९८९५३२४१३

सत्यार्थ प्रकाश कणिका

एकादश समुल्लास : आर्यावर्तीय मत खण्डन मण्डन विषय

गतांक पृष्ठ २८ से आगे

देवनारायण सोनी
शिव शक्ति नगर, बंगाली चौराहे के पास, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष : ९८२६०७६९३३

पाँच हजार वर्षों के पूर्व वेद मत से कोई भिन्न दूसरा मत नहीं था। सब महाभारत के युद्ध के कारण अवनति से बुद्धिभ्रम होकर मत चले हैं। मुख्य ये हैं- (१) पुराणी (२) जैनी (३) किरानी (ईसाई), (४) कुरानी। इन मतों की अच्छी बातों के साथ (मण्डन), मिथ्या (झूठ) का खण्डन किया है। मेरा (स्वा. दयानन्द) कर्म किसी की हानि व विरोध करने में नहीं है किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है। तीन सौ वर्ष पर्यन्त आर्यावर्त में जैनियों का राज्य रहा। वेदमत कम हो गया। पाषाणादि मूर्तिपूजा जैनियों से प्रचलित हुई।

शंकराचार्य ने शैवमत का कुछ खण्डन किया और वाम मार्ग का भी खण्डन किया। दो जैनी जो ऊपर से कथन मात्र वेद मत के मानने वाले, भीतर से जैन मत के मानने वाले कट्टर थे। उन्होंने कपट से शंकराचार्य को विषयुक्त वस्तु खिलाई। शरीर में फोड़े-फुन्सी होकर छः महीने में मृत्यु को प्राप्त हो गए। (जीव व ब्रह्म एक नहीं वेदों के अनुसार जीव और ब्रह्मा के वैधर्म्य होने से जीव और ब्रह्मा, एक न कभी थे, न हैं और न कभी होंगे।) बाईस सौ वर्ष पहले शंकराचार्य उज्जैन आए। राजा सुधन्वा तथा जैनियों से शास्त्रार्थ किये। वेदमत का प्रतिपादन किया। जैन हार गए।

शंकराचार्य के ३०० वर्ष पश्चात् उज्जैन नगरी में विक्रमादित्य, पश्चात् भर्तृहरि राजा, ५०० वर्ष पश्चात् राजा भोज, इन्होंने संस्कृत व्याकरण, काव्यादि अलंकार का प्रचार किया। शंकराचार्य को शिव का अवतार मान लिया गया। बहुत से शंकराचार्य के अनुयायी, संन्यासी, शैवमत में प्रवृत्त हो गए और वाममार्ग में भी प्रवृत्त हो गए। शंकराचार्य का उद्देश्य वेदमत फैलाने का था, नष्ट हो गया। (इसी को स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रकाशित किया।)

वाममार्गी (देवी उपासक) और शैवमत (महादेव उपासक) ने मिलकर भग-शिवलिंग का स्थापन किया जिसको क्रमशः जलाधारी और लिंग कहने लगे और उसकी पूजा करने लगे। राजा भोज के पश्चात् जैनी लोग मन्दिर बनाकर मूर्ति स्थापना कर दर्शन-पर्शन करने लगे। जैन धर्म की लोकप्रियता से घबराकर हिन्दुओं ने भी मन्दिर बनाकर मूर्ति स्थापना का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

व्यासजी के नाम से झूठे ग्रन्थ बने। राजा भोज के समय व्यासजी के नाम से मार्कण्डेय और शिव पुराण बना लिया। महाभारत के ४००० श्लोकों को बढ़ाकर १० हजार श्लोकों का कर दिया गया। राजा भोज ने ऐसे पण्डितों के हाथ कटवा दिये थे। राजाज्ञा दी कि ऋषि-महर्षि के नाम से ग्रन्थ न बनावें। इसी प्रकार ऋषि-मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बना लिये। इनमें वर्णित रामानुज सम्प्रदाय आदि की बातें सृष्टि नियम के विरुद्ध है।

जैनियों के चौबीस तीर्थंकर के सदृश चौबीस अवतार, मन्दिर, मूर्तियाँ आदि बनाई। आदि पुराण, उत्तर पुराण जो जैनियों के ग्रन्थ हैं वैसे ही १८ पुराण बनाए। राजा भोज के डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् वैष्णव मत चला। शठकोप योगी कंजर जाति में उत्पन्न हुआ। तिलक, चक्रांकित, शास्त्र विरुद्ध मनमानी बातें चलाई। पश्चात् मुनि वाहन चाण्डाल वर्ण, यावनाच्चार्य यवन कुलोत्पन्न हुए। यमुनाचार्य नाम रखकर पश्चात् रामानुज ब्राह्मण कुल में उत्पन्न चक्रांकित हुआ। रामानुज ने शंकराचार्य की टीके से विरुद्ध मत चला शंकराचार्य की निन्दा की। जीव, ब्रह्म, माया तीनों नित्य है, का सिद्धान्त चलाया। जीव व ब्रह्म एक नहीं है।

मूर्ति पूजा : साकार में मन स्थिर होता है निराकार में नहीं। इसलिए मूर्ति पूजा करनी है। इसका उत्तर (१ से १६ तक गिनाकर) मूर्ति पूजा से हानि एवं दोष वर्णित किये हैं। माता, पिता, आचार्य, अतिथि, पाँचवाँ स्त्री के लिए पति, पति के लिए पत्नी स्वपूजनीय है। (पृ. ३१२-३१५)।

चमत्कार : चमत्कार नाम की कोई अवधारणा नहीं होती है। मुसलमानों द्वारा मन्दिर व मूर्ति तोड़ी जा रही थी तब त्रिपुरासुर आदि बड़े-बड़े असुरों को नष्ट करने वाले महादेव एवं विष्णु सहायता करने क्यों नहीं आए? काशी में पाषाण लिंग को कूप में डाल दिया, वेणीमाधव को ब्राह्मण के घर में छिपा दिया, काशी में काल भैरव के डर से यमदूत नहीं जाते तो मन्दिर का (विश्वनाथ) आदि की रक्षा क्यों न हो सकी? इस प्रकार के सभी चमत्कार असम्भव है। विद्या, सृष्टि नियम, एवं विज्ञान के विरुद्ध हैं। जल का घृत, मिट्टी की शक्कर तथा रोली को कंकू, गोबर का नारियल बनाना, आकाश से केसर वर्षाना, बाँझ स्त्री पुत्रीवती हो गई आदि वेद विरुद्ध, झूठ, प्रकृति नियम से विरुद्ध है। (सृष्टि नियम अर्थात् वैज्ञानिक नियम के विरुद्ध है।)

तीर्थ : मनुष्यजन जो वेदादि शास्त्र सत्भाषण, धर्म लक्षण युक्त साधु को अन्नादि पदार्थ देकर उनसे विद्या लेनी तथा मनुष्य जिस कर्म को करके दुःख से तरे उसका नाम 'तीर्थ' है क्योंकि ये दुःखों से तैराते हैं।

गुरु : माता-पिता, आचार्य, अतिथि, विद्वान् ये ही गुरु हैं। गुरु के पाँव धोना, गुरु कैसा भी पाप करे तो भी अश्रद्धा न करनी, सन्त गुरु के दर्शन अश्वमेध का फल देते हैं, यह सब गुरुडम व पूर्ण झूठ है। गुरु क्रोधी, लोभी, मोही तथा कामी हो तो सर्वथा छोड़ देवें। गुरु ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा परब्रह्म कभी नहीं हो सकता। यह पोपलीला है। उपर्युक्त पाँचों की सेवा शुश्रूषा अवश्य करनी चाहिये।

भागवत : बोपदेव का बनाया है जिसके भाई जयदेव ने गीत गोविन्द बनाया है। ये श्लोक अपने बनाए हिमाद्री नामक ग्रन्थ में लिखे हैं कि 'श्रीमद् भागवत्' मैंने (बोपदेव) बनाया। ये श्लोक पृ. ३३५ पर वर्णित है।

(श्लोक ११ से १५ प्रथम स्कंध भागवत्) भागवत स्वयं कह रही है।

श्रीकृष्ण व ज्योतिर्लिंग : श्रीकृष्ण का इतिहास व चरित्र महाभारत में अत्युत्तम है। वे आप्त पुरुष के सदृश थे। कोई भी अधर्म का आचरण जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त बुरा काम कुछ भी नहीं किया। भागवत वालों ने उनको, दूध-दही, माखन चोर, कुब्जादासी से समागम, स्त्रियों से रासमंडल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष लगाए हैं। राधा का नाम तो महाभारत एवं भागवत में भी नहीं है।

शिव पुराण में १२ ज्योतिर्लिंग लिखे हैं। यह कथा असम्भव है। नाम धरा ज्योतिर्लिंग जिनमें प्रकाश (ज्योति) लेशमात्र भी नहीं है।

श्राद्ध तर्पण : श्राद्ध तर्पण, पिण्डदान उन मरे हुए जीवों तक नहीं पहुँचता है किन्तु मृतकों के प्रतिनिधि पोपजी के घर, उदर, हाथ में पहुँचता

है। वैतरणी नदी के लिए गोदान लेते हैं। यह गाय वैतरणी नहीं जाती, पोपजी के घर ही रहती है। किसकी पूँछ पकड़कर तैरेगा? (दृष्टान्त स्वरूप जाट कथा दी गई है।) गरुड़ पुराण भी झूठा है। यमराज राजा, चित्रगुप्त मन्त्री, उनके गण जीव को पकड़कर ले जाते हैं, नरक–स्वर्ग में डाल देते हैं, मिथ्या झूठ है। यम लोक के लोगों का न्याय कैसे होता है यह वेद विरुद्ध व विज्ञान के विरुद्ध है।

महर्षि के अन्य मत-विचार

एकादशी व्रत से पाप कम होना, स्वर्ग में जाना यह भी झूठ ही है। गर्भवती व सद्योविवाहिता स्त्री, बालक, रोगी कदापि व्रत न करें। अजीर्ण हो, क्षुधा न लगे तो शर्बत दूध पीकर उपवास रखें।

रामलीला–रासलीला–राधाकृष्ण का रूप धर नाचना, राम–सीता का रूप धर उनसे भीख मँगवाना, याचना करवाना, पुजारी द्वारा भेंट राशि लेकर इन महान राजा आदर्श महापुरुष एवं सती–साध्वी महारानी का उपहास उड़ाना है। इनके नाम से प्रसादी भण्डारा चलाते हैं। यह महापुरुषों का अपमान है।

वाममार्गी : वाममार्गी मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण का प्रयोग करते हैं। तान्त्रिक क्रियाएँ करते, मद्य–मांस का सेवन करते हैं। यह ठग विद्या है। इसमें एक चौली मार्गी, दूसरा बीज मार्गी, अघोरी साधु वेश में मृत मनुष्य का मांस खाता है। इनको मुक्ति का साधन मानते हैं। गुप्तेन्द्रिय की पूजा करते हैं।

वैष्णव : ये नारायण को छोड़ किसी को नहीं मानते। तिलक को विष्णु का निवास मानते हैं। वैकुंठ लोक विष्णु का निवास मानते हैं। वैष्णव व शैव मत में आपस में विरोध है। महादेव के लिंग का दर्शन नहीं करते। यह सब वेद विरुद्ध है। कल्पित 'परिकाल' वैष्णव भक्त की कथा, भक्त माल की कथा (ये कथा असत्य, अवैज्ञानिक, वेद विरुद्ध व सृष्टि नियम के विपरीत है। वैष्णवों में कई मतभेद एवं विचार हैं। रामानन्दी, नीमावत, माधव, गौद, रामप्रसाद इनके कथन भी विलक्षण एवं भिन्न हैं। भिन्न–भिन्न पूजा, तिलक का चलन है।

कबीर पन्थी : पाषाणादि मूर्ति पूजा छोड़ पलंग, गद्दी, तकिये, खड़ाऊ, ज्योति अर्थात् दीप पूजना। कबीर सा. का फूलों से उत्पन्न होना, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का जन्म नहीं था तब भी कबीर सा. थे 'सुरती कान बन्द कर ध्वनि शब्द सुनने को' ध्यान बताना कण्ठी बाँधना, यह वेद विरुद्ध है, दिखावा है।

सत्यार्थ प्रकाश में वेद सम्मत सभी बातों का समर्थन किया है। कबीरजी की पाषाण पूजा निषेध, मूर्तिपूजा विरोध, निराकार निर्गुण उपासना आदि उत्तम है। नानकजी का 'ओ३म् ' सत्य नाम है बताना उसकी एवं वेद की प्रशंसा करना उत्तम है। नानकजी पंजाब में हुए थे। पंजाब में संस्कृत विद्या रहित मुसलमानों से पीड़ित लोगों की रक्षा की एवं बचाया। नानकजी ने भक्ति विशेष (ईश्वर) विषयक पुस्तक लिखी थी। वे उत्तम थी। परन्तु उनके बाद उदासी, निर्मल, अकाली, सूरत, हसाई ये एक–दूसरे से मतभेद रखते हैं। वेद विरुद्ध बोलते हैं।

दादू पंथ : वेदादि शास्त्रों को छोड़ दादूराम, दादूराम भजने में मुक्ति मानने लगे।

रामस्नेही : वेदोक्त धर्म छोड़ राम–राम पुकारना, उसी में ज्ञान, ध्यान व मुक्ति मानते हैं। रामचरण साधु हुआ, साधारण अनपढ़ मनुष्य था, ने यह मत चलाया।

गोकुलिये गुसाई : यह मत तैलंग देश से चला। एक तैलंगी लक्ष्मण भट ब्राह्मण, अपने माता–पिता–स्त्री छोड़ काशी बस गया, संन्यास ले लिया। वल्लभ सम्प्रदायी गोसाई लोग हैं। 'पुष्टि मार्ग' कहते हैं अर्थात् खाने–पीने, पुष्ट होने, सब स्त्रियों के संग यथेष्ट भोग विलास को पुष्टिमार्ग कहते हैं। ८४ वैष्णव बनाए ब्रह्म सम्बन्ध, समर्पण के दो मन्त्र बना लिये। इनका मत भी वेद विरुद्ध है। सब मतों में दोष एवं अपना मत गुणों वाला बताते हैं। कृष्ण गोपियों को ही प्रिय थे ऐसा इनका मत है। गुसाई लोग स्वयं को श्रीकृष्ण मानकर सबके स्वामी बनते हैं। शिष्य–शिष्याओं को ब्रह्म सम्बन्ध कराते हैं।

स्वामीनारायण मत : इसी प्रकार स्वामीनारायण मत भी गुसाई मत की लीला सदृश है। एक सहजानंद नामक अयोध्या के समीप ग्राम में जन्म हुआ, उनका चलाया है। इनका भी श्रीकृष्ण शरणं मम गोसाई जैसा मन्त्र है। गुजरात काठियावाड़, कच्छ, भुज में शिष्य बनाकर अपने को नारायण का अवतार और सिद्ध हूँ ऐसा करके प्रचारित किया था।

माधव मत : यह भी अन्य मत जैसा है। चक्रांकित होते हैं। रामानुज एक बार चक्रांकित होते हैं और माधव वर्ष में दो बार चक्रांकित होते हैं। श्रीकृष्ण का शरीर काला है, श्याम है तो ये काला तिलक लगाते हैं।

लिंगांकित मत : चक्रांकित जैसा ही होता है। पाषाण का एक लिंग बनाकर चाँदी या सोने से मड़वाकर गले में डालते हैं। जब पानी भी पीते हैं उसको बताकर पीते हैं। मन्त्र शैव के तुल्य रहता है।

ब्रह्मसमाज प्रार्थना समाज : कुछ–कुछ बातें अच्छी हैं। सर्वांश में अच्छा नहीं है। ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाया। पाषाण–मूर्ति पूजा का विरोध किया। परन्तु स्वदेश देश–भक्ति न्यून है। ईसाई धर्म के आचरण खान–पान से मिलते–जुलते सिद्धान्त अपना लिए। किसी ऋषि महर्षि, वेदादिक–धर्म मान्यता को नहीं मानते। अंग्रेज, यवन के खान–पान, भाषा, इंग्लिश–भाषा सहित संस्कृत भाषा रहित उपदेश करने लगे। वेदों को महत्व नहीं देते हैं।

अन्त में इस समुल्लास में आर्यावर्तीय देशीय राजवंश श्रीमान युधिष्ठिर से लेकर जीवनसिंह से यशपाल से शहाबुद्दीन गौरी तक के इतिहास का वर्णन है। (विदित हो, स्वामीजी १ पीढ़ी, २ फिर राजा, ३ काल वर्ष, ४ मास, ५ दिन तक वर्णन प्रेषित किया है। उनका इतिहास सम्बन्धी ज्ञान विस्तृत था।

यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि महाराजा स्वायंभुव मनु से लेकर महाराजा युधिष्ठिर पर्यन्त का इतिहास महाभारतादि ग्रन्थों में लिखा है। (विस्तृत वर्णन मूलग्रन्थ के पृष्ठ २७३–३९४ में वर्णित है)।

विशेष टिप्पणी

मूर्ति पूजा का परिणाम– भारत के कुल मन्दिरों में २०लाख टन सोना (गोल्ड) जमा है। यानी दो अरब किलो। इसका मूल्य २५ लाख रुपये प्रति किलो से ५ हजार खरब होता है। इस राशि को यदि १२५ करोड़ जो भारत की जनसंख्या में वितरित कर दिया जाए तो प्रत्येक भारतीय को १.६ किलो सोना अर्थात् चार लाख रुपये प्रति मनुष्य को प्राप्त हो सकता है। इससे दो वर्ष तक का मुफ्त भोजन प्राप्त किया जा सकता है। सोचिये, विचार कीजिये। (जी–न्यूज चैनल से साभार)

गुरुडम– देश में गुरुडम के नाम पर कई आश्रम व संस्थाएँ चल रही हैं और कई बाबा और गुरु करोड़ों का व्यवसाय, व्यापार धर्म के नाम पर कर रहे हैं। आश्रम एवं अखाड़ों में अकूत सम्पत्ति चल–अचल रूप में विद्यमान है। इनका दुरुपयोग होकर राष्ट्र व हिन्दू धर्म की बदनामी हो रही है। ■

देते हैं भगवान को धोखा व्यक्ति को क्या छोड़ेंगे?

स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती
८/५४, तेजेन्द्र नगर भाग-७,
चाँदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात
चलभाष : ८१५५०५५२६०

उपर्युक्त शीर्षक एक बहुत पुरानी किसी हिन्दी फिल्म का है। जिसको कोई फकीर सामाजिक कुरीतियों और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार से समाज पर पड़ रहे कुसंस्कारों से परेशान होकर उपरोक्त शीर्षक को गाने के रूप में गाता है।

उपर्युक्त गाना गुजरात राज्य से प्रकाशित दिव्य भास्कर में प्रकाशित समाचार अम्बाजी के भण्डारे में चढ़ाए गए, चाँदी के चढ़ावे में (जैसे कि चाँदी के छत्र, यंत्र, माता जी के नेत्र, माताजी के पैरों की छाप आदि) ११३ किलो चाँदी में से ९० प्रतिशत चाँदी नकली निकली। पूरी तरह से चरितार्थ होता है। बताया जाता है कि उपरोक्त सभी सामान गुजरात के आबू पर्वत पर स्थित प्रसिद्ध अम्बाजी के बाजार में खुले आम धड़ल्ले से बिकता है और वर्षों से बिकता चला आ रहा है। यह बात आँख के अन्धे गाँठ के पूरे माई के भक्त भी जानते हैं और लालची, निकम्मे, भ्रष्ट अधिकारी भी जानते हैं। मगर तेरी भी चुप, मेरी भी चुप वाली नीति सभी को लाभदायक है, इसीलिए सभी को चुप रहने में ही अपनी भलाई दिखाई देती है, यहाँ तक कि माताजी भी चुप रहती है, सोचती है कि असली न सही नकली ही सही। भंगार के भाव से कुछ न कुछ तो मिल ही जाएगा। (पण्डे-पुजारियों को) क्योंकि वे भी तो स्वयं नकली पाषाण की मूर्ति ही तो हैं।

यह आवश्यक नहीं कि उपरोक्त यह नकली सामान आबू रोड के अम्बा जी के स्थानीय बाजारों में ही बनता हो और बेचा जाता हो, यह बनाने और बेचने का कारोबार अंतरराष्ट्रीय स्तर कर धड़ल्ले से चल रहा है। भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में जहाँ कहीं भी मन्दिर है, अज्ञानी, मूर्ख, अन्धे भक्त हैं, वहाँ-वहाँ पर ऐसे कारोबार अच्छी तरह से फल-फूल रहे हैं। एक समाचार पत्र के अनुसार अभी भी देश के विभिन्न भागों में गिलेट में से चाँदी के नाम से चाँदी के सिक्के बना-बनाकर सामान्यजन को धोखा दिया जा रहा है। ऐसे सिक्के देश के अलग-अलग प्रांतों और शहरों में बनाए जा रहे हैं, जिनको ग्रामीण विस्तारों में बेच कर अनजान लोगों को धोखा दिया जा रहा है। जिनमें प्रमुख-प्रमुख नाम इस प्रकार हैं- दक्षिण भारत, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात आदि। सुनने में तो यहाँ तक आता है कि जो पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, ऐसे पदार्थों को प्रसाद आदि में भी मिलाकर यानी भगवान के प्रसाद में भी मिलावट कर मंदिरों में देवी-देवताओं को भोग लगाने के पश्चात् इसी भोग को प्रसाद के रूप में या तो भक्तों को बेचा जाता है अथवा बाँट दिया जाता है। जिसको खाकर कोई मरे या जिये, किसी को क्या पड़ी है। (पण्डे-पुजारियों को या प्रसाद बनाने वालों को और स्वयं भगवान या माताजी को भी)।

कुछ समाज सुधारक व्यक्ति यदि उपर्युक्त पाखंड का विरोध कर, समाज और कुसंस्कारों को सुधारने की बात करते भी हैं तो ऐसे प्रचारकों को पाखंडी लोग, जिनको भी कभी न कभी चाटने को कुछ प्रसाद रूप में मिल ही जाता होगा, ऐसे कुतर्क रूप प्रमाण देते हैं कि एक बार को तो समझदार व्यक्ति को भी सिर हिलाने को मजबूर होना पड़ता है।

लेखक ने एक गाँठ के पूरे आँख के अंधे माई भक्त से जो अम्बाजी मंदिर से दर्शन करके लौटा ही था और मेरे पड़ोस में ही रहता है। मैंने उससे प्रश्नोत्तरी के रूप में कुछ प्रश्न पूछे जो निम्न प्रकार हैं।

प्रश्न : भाई साहब अम्बा माता के दर्शन करके कब आए? उन्होंने प्रतिउत्तर दिया कि आज प्रात: ही आया हूँ। मैंने कहा क्या आपने आज का समाचार पत्र पढ़ा? उन्होंने कहा जी अभी नहीं पढ़ा क्यों क्या बात है? मैंने समाचार पत्र का वह भाग उनको पढ़ने के लिए दिया, जिस पर उपरोक्त समाचार था कि माताजी के ऊपर चढ़ाए गए ११३ किलो चाँदी में से बनाए गए सामान में से ९० प्रतिशत चाँदी नकली निकली।

उत्तर : माई भक्त ने प्रतिउत्तर में कहा भाई साहब हमें क्या जो कैसा करेगा वैसा भरेगा।

प्रश्न : भाई साहब क्या आपको नहीं लगता कि ये व्यापारी लोग भगवान (माताजी) के साथ-साथ आपको भी चूना लगाते हैं? दाम असली माल के लेते हैं और सामान नकली पकड़ाते हैं।

उत्तर : भाई साहब आप बात तो सही कह रहे हैं, मगर हम जैसे सामान्य लोग कर ही क्या सकते हैं?

प्रश्न : आप सभी मिलकर प्रशासनिक दंडाधिकारियों से शिकायत तो कर ही सकते हैं। वैसे माताजी की पत्थर की जड़ मूर्ति तो किसी की फरियाद सुनती ही नहीं है तो किसी का भला-बुरा कुछ कर ही नहीं सकती, मगर आप तो चेतन सत्ता हैं, आप तो यह शिकायत का कार्य कर ही सकते हैं।

उत्तर : भाई साहब शिकायत करके भी क्या फायदा, क्योंकि प्रशासन के सभी दंडाधिकारी तो इन व्यापारियों के जरखरीद गुलाम ही तो हैं। सभी प्रशासनिक अधिकारियों को नीचे से लेकर ऊपर तक हफ्ता स्वत: ही बिना माँगे पहुँच ही जाता है। (कुछ अपवादों को छोड़कर) और ये सभी दंडाधिकारी भी तो धर्मभीरू ही हैं, तो हम सामान्य मानव की बात कौन सुनेगा?

प्रश्न : कम से कम एक बार शिकायत करके तो देखो?

उत्तर : माना कि शिकायत कर भी दी तो कोर्ट-कचहरी, पुलिस स्टेशन के धक्के खाने पड़ेंगे। जबकि ये व्यापारी वर्ग सभी दंडाधिकारियों को घर बैठे ही हफ्ता पहुँचा देते हैं तो दंडाधिकारी तो हमको ही परेशान करेंगे, क्योंकि इनको आर्थिक हानि हमारे ही कारण तो होगी। माना कि केस दर्ज हो भी गया तो निर्णय कब तक आएगा, कोई नहीं जानता कि कौन मरेगा, कौन जियेगा?

प्रश्न : तो फिर ऐसे मंदिरों में जाना ही क्यों नहीं छोड़ देते, जहाँ पर ऐसी धोखाधड़ी, बेईमानी, पाखंड चलता हो।

उत्तर : ऐसा करने से हम धर्म का पालन नहीं कर सकते।

प्रश्न : धर्म से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : परमात्मा को मानना और उसमें श्रद्धा रखना।

प्रश्न : परमात्मा को कैसे माना जाता है?

उत्तर : मंदिरों में जाना, दर्शन करना, भोग लगाना, प्रसाद ग्रहण करना, कुछ धन का अर्पण करना (जैसे बहुमूल्य धातुयें, सोना, चाँदी, हीरा,

जवाहारात आदि) कुछ पुजारी को दक्षिणा देना आदि-आदि क्रियाएँ करना परमात्मा को मानना ही तो है।

प्रश्न : यह तो धन का दुरुपयोग हो गया न कि सदुपयोग। (ऐसे मंदिरों में जाने से न तो धर्म का पालन होता है और न ही परमात्मा के प्रति आस्था और न ही परमात्मा की प्राप्ति।

उत्तर : मंदिरों में जाने से मन को शांति तो मिलती है।

प्रश्न : क्या इस क्षणिक मन की शांति से पाप कर्मो से मुक्ति मिल जाती है?

उत्तर : हाँ मान्यताएँ तो कुछ ऐसी हैं, परमात्मा की शरण में जाने से पापों के फलों से मुक्ति मिल जाती है। इस बात को सभी धर्म वाले मानते हैं।

प्रश्न : यह तो एक प्रकार से भेड़चाल हो गई कि एक भेड़ गलत रास्ते पर चल कर यदि कुएं में गिरेगी तो सभी भेड़ कुएं में ही गिरेंगी। तो फिर भेड़ों में और मनुष्यों में अंतर ही क्या रह गया?

उत्तर : भाई साहब आप बात तो सही कह रहे हैं, मगर क्या करें समाज के साथ रहना ही पड़ता है।

प्रश्न : तो क्या आपने मेरी बात मान ली कि नासमझ समाज एक प्रकार से भेड़ों का ही समूह है?

उत्तर : हाँ भाई साहब, यह बात स्वीकार करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

माई भक्त ने पुन: प्रश्न किया कि-

भाई साहब यह बात तो सही है कि मंदिरों में जाने से, देवी-देवताओं की कृपा सभी पर बरसती है। जैसे कि चौला-चूड़ी बेचने वालों पर, मिठाई और प्रसाद बेचने वालों पर, अन्य विभिन्न प्रकार के सामान बेचने वालों पर, टैक्सी वाले, बस वाले, रिक्शा-टेम्पोवाले, चाय-नास्ता बेचने वाले आदि सभी की कमाई होती है, बस इसी बात को ध्यान में रखकर यह क्यों न मान लिया जाए कि सभी पर देवी-देवता की कृपा बरसती है। इस प्रकार से सोचने में हानि ही क्या है?

उत्तर : हाँ हानि होती है, महापुरुषों का कहना है कि यदि जड़ वस्तु की पूजा करोगे तो बुद्धि जड़ हो जाएगी और यदि चेतन की पूजा करोगे तो बुद्धि प्रखर हो जाएगी।

प्रश्न : भाई साहब मैं आपकी बात समझा नहीं, कृपा कर उपर्युक्त बात को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर : इसमें नासमझी की तो कोई बात ही नहीं है। जिस किसी भी मंदिर में आप जाते हैं, वहाँ की पत्थर की मूर्ति न तो आपकी प्रार्थना सुनती है, न ही आपकी प्रार्थना पर अपनी कोई प्रतिक्रिया ही देती है, जैसे कि आशीर्वाद देना या कूपित होकर श्राप देना आदि-आदि। न खाती है न पीती है, फिर भी आप मिठाइयों का भोग पर भोग लगाए ही जाते हैं और यह भोग, प्रसाद पंडे-पुजारियों के पेट में जाता है, बाकी बचे हुए को मूर्ख भक्तों को बेच दिया जाता है। उपरोक्त प्रकार से जब कोई मूर्ति कोई प्रतिक्रिया ही नहीं करती। यहाँ तक कि अपने ऊपर अन्य जीव-जन्तुओं द्वारा मल-मूत्र त्याग करने पर भी अपना बचाव उनसे नहीं कर सकती। आए दिन ये भी समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि अमुक मंदिर में से मूर्ति चोरी हो गई। सोने-चाँदी के आभूषण चोरी हो गए। दानपेटी को चोर उठाकर ले गए। जो मूर्ति स्वयं को चोरों से नहीं बचा सकती तो वह पाषाण की मूर्ति हमारी रक्षा क्या करेगी? ऐसी मूर्तियों को चुराकर तस्कर लोग विदेशों में ऊँची कीमत पर बेचकर मनमाना धन कमाते हैं। कुछ दिन पूर्व एक ऐसी ही चुराई गई अन्नपूर्णा की मूर्ति विदेश से भी मोदीजी ने मंगवाई जिसकी स्थापना काशी कारिडोर में की गई है। तारीख २२ मार्च २०२२ के अहमदाबाद से प्रकाशित दिव्य भास्कर के गुजराती अंक में चुराई गई मूर्ति के चित्र के साथ छपा है कि ऑस्ट्रेलिया ने भारत से चोरी की गई २९ मूर्तियाँ भारत को वापस भेजी है। जो १००० साल पुरानी हैं। ये मूर्तियाँ राजस्थान, पश्चिम बंगाल, गुजरात, हिमाचल आदि प्रांतों से चोरी कर चोरों ने विदेशों में ऊँची कीमत पर बेची होगी। यदि पत्थर से बनी इन मूर्तियों में कोई चेतन सत्ता होती तो ये चोरों से अपनी रक्षा क्यों न कर सकी? आए दिन समाचार पत्रों में खबरें आती रहती हैं कि अमुक प्रांत में, अमुक शहर में मंदिरों में से धनादि की या मूर्तियों की चोरी हो गई।

उदाहरण- (१) (झारखंड में सुरक्षा कर्मी सोते रहे और चोर (भगवान बुद्ध की दो दुर्लभ मूर्तियाँ चुरा कर ले गए)

उदाहरण- (२) गुजरात प्रांत के अहमदाबाद शहर में एक दवाखाने के पास से गणपतिजी की मूर्ति की चोरी हो गई। जिसका मूल्य ३० हजार रुपए था। तो ऐसी जड़ मूर्तियों की सेवा-पूजा करना या उनमें आस्था रखने से क्या लाभ जो चोर आदि से अपनी भी रक्षा न कर सके, तो वह हमारी रक्षा क्या करेगी? तो ऐसी जड़ मूर्ति की पूजा करने से अर्थात् मानने से हमारी बुद्धि भी क्रिया शून्य क्यों नहीं हो जाएगी? अर्थात् हो ही जाएगी।

प्रश्न : तो क्या करें?

उत्तर : जो चेतन रूप में परमात्मा ने मूर्तियाँ बनाकर हमारे सामने, माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी के रूप में रखी हैं, उन्हीं की जीवित रहने तक सेवा करनी चाहिए और दु:खी विभिन्न प्राणियों की भी सेवा करनी चाहिए। इसी को चेतन की पूजा कहते हैं। यदि इनकी सेवा करोगे तो ये ही आपको आशीर्वाद देंगे। तो हम संतानों को लाभ मिलेगा। ये जीवित मूर्तियाँ ही आपकी प्रार्थना सुनेंगी। आपसे बात करेंगी, इन्हीं को खिलाओ क्योंकि ये खाती हैं, ऐसा करने से ही आपका कल्याण होगा। मंदिरों में तो केवल व्यापारी, भिखारी और पुजारी का ही भला होता है और भक्तों की तो केवल जेब ही हल्की होती है। दूसरे शब्दों में यदि कहा जाए कि जहाँ कहीं पर मंदिर हैं वहाँ पर सब दो नंबर का ही धंधा होता है। अर्थात् यह कहने में भी कोई अतिश्योक्ति नहीं, कुछ अपवादों को छोड़कर कि अधिकतर मूर्तिपूजक और पंडे-पुजारी दो नंबरी ही तो हैं। क्योंकि उन्हें बचपन से ही यही सिखाया जाता है कि चाहे कितने भी पाप कर्म करो, मंदिर में जाकर पत्थर की मूर्ति को नमन करो, प्रसाद चढ़ाओ तो सभी कुकर्म क्षमा हो जाएँगे। जबकि इस प्रकार की धारणा मिथ्या है। जबकि किए गए शुभ या अशुभ कर्मों का फल तो मिलता ही है। परमात्मा कभी भी पाप कर्मो को क्षमा नहीं करता है।

प्रश्न : तो परमात्मा को किस प्रकार मानें?

उत्तर : जिस प्रकार वेदों में परमात्मा ने मनुष्य जीवन को चलाने के लिए जो आदेश दिए हैं या नियम बनाए हैं। उन रास्तों पर चलना चाहिए। अर्थात् पहले वेदों का अध्ययन करना चाहिए। तब ही सही रास्ते का ज्ञान प्राप्त होगा।

भक्त ने नमन करते हुए प्रसन्न चित्त होकर कहा, भाई साहब अब आपकी बात पूरी तरह से मेरी समझ में आ गई कि

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहाड़।
जाते ये चाकी फली, पीस खाय संसार।। (संत कबीर) ■

ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं, सर्वव्यापक शक्ति है

पं. उम्मेदसिंह विशारद

गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

ईश्वर का स्वरूप

महाभारत काल के बाद विश्व में एकमात्र महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ही ऐसे महापुरुष थे। जिन्होंने संसार को ईश्वर का सत्य आभास कराया। उन्होंने बताया कि ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है, अपितु सर्वव्यापक चैतन्य स्वरूप महाशक्ति है। ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड में दृश्य और अदृश्य रूप में दिखाई देता है।

ईश्वर की सिद्धि में अनेक युक्तियाँ दी जाती हैं, जैसे सृष्टि में सृजनात्मक चेतन शक्ति का होना, सृष्टि में क्रम तथा नियमबद्धता का होना, सृष्टि में प्रयोजन अथवा उद्देश्य का होना, सृष्टि की विविधता में एक सूत्रता का होना, सृष्टि में विशालता का होना, अस्थायित्व में स्थायित्व का होना ये सब लक्षण जड़ जगत्, वनस्पति जगत् तथा प्राणी जगत् में सर्वत्र पाए जाते हैं। जिनके आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विश्वगत चेतन शक्ति की सत्ता माने बिना यह सब होना सम्भव नहीं है। जिस शक्ति के कारण सृष्टि में ये लक्षण पाए जाते हैं वही शक्ति ईश्वर है।

अदृश्य ही सत्य है

संसार के पदार्थों को दो भागों में बाँटा जा सकता है- दृश्य तथा अदृश्य। दृश्य हमें दिखते हैं अदृश्य नहीं दिखते हैं। न दिखने के कई कारण है कि वे इतने सूक्ष्म होते हैं कि उनको इन्द्रियाँ देख नहीं सकती। इसका परिणाम यह होता है कि हम दृश्य को ही सत्य समझते हैं। परन्तु वास्तविक दृष्टि से देखा जाए तो अदृश्य ही सत्य है। अदृश्य न हो तो दृश्य रह ही नहीं सकता। अन्तिम सत्य वृक्ष देखने में तो सत्य है किन्तु नाशवान है और बीज नाशवान नहीं है तो वही बीज सत्य है। ऐसे ही सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ विनाश को प्राप्त होते हैं। किन्तु उनके अन्दर अदृश्य शक्ति जो सदैव सत्य रहती है, कभी भी विनाश को प्राप्त नहीं होती है।

सृष्टि में प्रयोजन का उद्देश्य

सृष्टि में प्रत्येक वस्तु का प्रयोजन है तथा किसी उद्देश्य हेतु उसका निर्माण हुआ है। प्रत्येक पदार्थ के प्रयोजन होने का उद्देश्य सिद्ध करता है कि उसके निर्माण के पीछे कोई चेतन शक्ति है और वही शक्ति वस्तु का निर्माण करती है। सृष्टि में सभी घटनाएँ या चक्र जो चल रहा है। उसके सभी कार्य एक निश्चित प्रयोजन से बंधे हुए हैं क्या इतना भारी प्लानिंग बिना प्लानर के हो सकती है? बिना चेतन शक्ति के कुछ भी नहीं हो सकता है।

ईश्वर द्वारा सृष्टिक्रम तथा नियमबद्धता

ईश्वर ने सृष्टिक्रम की रचना अद्भुत की है और सूर्य, चन्द्रमा, तारे व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है व स्थिर किए हुए हैं। एक झलक देखिए।

सूर्य पृथ्वी से नौ करोड़ चालीस मील दूर है। चन्द्रमा पृथ्वी से दो लाख चालीस हजार मील दूर है और निरन्तर बिना सहारे के अपनी धूरी पर घूमते रहते हैं। आश्चर्य है इनकी दूरी घटती–बढ़ती नहीं है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा १७ दिन ७ घण्टे ५६ मिनट १२ सेकंड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धूरी पर २३ घण्टे ५६ मिनट ९ सेकंड में घूमती है और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा १ सेकंड में १८ मील की दूरी तय करती है। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जाए और एक कण के विस्फोट से अनन्त प्रकृति में आग लग सकती है यह सम्पूर्ण व्यवस्था ईश्वर ने की हुई है उसी के कारण सब क्रियावान है।

ईश्वर द्वारा सृष्टि में सृजनात्मक चेतन शक्ति

ईश्वर की व्यवस्था से सृष्टि में प्रत्येक पदार्थ का विकास व विनाश निश्चित हो रहा है। जड़ की हर गति कालान्तर में समाप्त हो जाती है। इस गति को देने वाली कोई शक्ति है। इस गति को देने वाली कोई चेतन शक्ति होनी चाहिए वह जड़ नहीं हो सकती, उस रचना या सृजन करने वाली शक्ति का नाम ही ईश्वर है।

ईश्वर द्वारा प्राणी जगत् में सृजनात्मक चेतन शक्ति

यह चेतन शक्ति ईश्वर द्वारा प्राणी जगत् में उद्भूत हो रही है। प्राणी में ईश्वरीय चेतना और वैयक्तिक चेतना दोनों मौजूद हैं। इनमें वैयक्तिक चेतन सबमें मौजूद रहता है। वह आत्मा है, जो कर्मकर्ता तथा फल भोगता है, चेतन शक्ति वह है जो न कर्म करती है न फल भोगती है क्योंकि विकास बिना ईश्वर के नहीं हो सकता। चेतन शक्ति ही ईश्वर है।

वनस्पति तथा वृक्ष जगत् में क्रम तथा नियमबद्धता

वनस्पतियों तथा वृक्षों की वृद्धि के भी नियम हैं। बीज से अंकुर व अंकुर से फूल, फल फिर उसमें बीज उसी चक्कर में चल देता है। ये नियम टूटता नहीं है। इस विकास को चेतन शक्ति चला रही है, इसलिए यह ईश्वर की शक्ति है।

ईश्वर द्वारा जड़ जगत् में सृजनात्मक चेतन शक्ति

अंतरिक्ष में अनगिनत तारे हैं। जैसे हमारे सौर मण्डल में गति है, वैसे उनमें भी गति के विकास की प्रक्रिया चल रही है, यह सब अग्नि के पुंज हैं, पृथ्वी भी किसी समय इसी प्रकार अग्निमय थी। जड़ जगत् की इतनी गति, इतना विकास चेतन शक्ति के बिना नहीं हो सकता। एक छोटा सा तिनका भी चेतन शक्ति के बिना नहीं हिल सकता। जैसे हवा को कौन चला रहा है, अर्थात् जगत् का प्रत्येक पदार्थ चेतन शक्ति से गतिशील है, जो जड़ में गति दे रहा है वही ईश्वर है।

ईश्वर को व्यक्ति समझने की अज्ञानता, सोचिए और समझिए

अधिकांश मतों व कथित धर्मों में ईश्वर को महामानव ही माना गया है। स्वर्ग-नरक की कल्पना भी ईश्वर को मनुष्य मानने के कारण है। ईश्वर मनुष्य जैसा होगा तो किसी विशेष स्थान में रहता होना चाहिए और वह स्तुति करने से खुश और गाली देने से नाराज होता होगा। यदि वह स्थान विशेष में रहेगा तो सर्वव्यापी नहीं होगा। उसकी जन्म और मृत्यु भी होगी। इसलिए ईश्वर व्यक्ति विशेष नहीं, शक्ति विशेष है। ईश्वर अजन्मा सर्व

शक्तिमान है।

ईश्वर के कार्य मनुष्य रूपी मान्य भगवान नहीं कर सकता है

संसार की मान्यताओं को देख आश्चर्य होता है कि अधिक पढ़ा लिखा व ऊँचे पदों पर बैठा व्यक्ति भी जड़ और चेतन व ईश्वर और अल्प शक्ति वाले मनुष्य में अपने पूर्व दुराग्रहों की मान्यताओं के कारण भेद नहीं कर पा रहा है।

१. ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता है और मनुष्य रूपी मान्य भगवान ईश्वर की रचना में रहता है।

२. ईश्वर सारे जीवों को पालन हेतु भोग सामग्री देता है और मनुष्य रूपी भगवान उस परमेश्वर के प्रदत्त सामर्थ्य में जीवन जीता है।

३. ईश्वर कर्मफल दाता है और मनुष्य रूपी भगवान कर्म करके ईश्वर की व्यवस्था में रहता है।

४. ईश्वर सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करता है और मनुष्य रूपी भगवान ईश्वर की व्यवस्था में रहता है।

५. ईश्वर अजन्मा और अविनाशी है और मनुष्य रूपी भगवान जन्मा व एकदेशी नाशवान है।

६. ईश्वर सृष्टिक्रम द्वारा ऋतुएँ व अन्य वनस्पति देता है और मनुष्य रूपी भगवान इसी व्यवस्था में जीता और मरता है।

७. ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक है और मनुष्य रूपी भगवान एकदेशीय, अल्पशक्ति वाला व आकार वाला होता है।

सोचिए विचारिये।

ईश्वर का अवतारवाद कल्पना पर आधारित है

जनसाधारण का विचार है ईश्वर स्वयं अवतार धारण करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। यह मान्यता महा अज्ञान है, क्योंकि ईश्वर अजन्मा, अव्यय, निराकार, सृष्टिकर्ता है। वह साकार कैसे हो सकता है? यह अलग बात है, मोक्ष से लौटकर मुक्त आत्माएँ सृष्टि के मानवों में सन्तुलन बनाने के लिए अधर्म का नाश करने के लिए जन्म लेती हैं। संसार में मानवों का जन्म दो प्रकार का होता है। एक कर्म बद्ध जीवन, दूसरा कर्म बन्धन मुक्त जीवन, जैसे श्री कृष्ण कर्मबन्ध मुक्त जीव है और अर्जुन कर्म बद्ध जीवन। कर्म मुक्त जीव अधर्म का नाश करने के लिए जन्म लेते हैं। अन्तर यह है दोनों में कर्म मुक्त जीवन स्वेच्छा से और कर्म बन्ध कर्मफल भोग हेतु जन्मते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने कहा था वेदों की ओर लौटो और ईश्वर को समझो

वेद सृष्टि का संविधान ग्रन्थ है, जिस प्रकार ईश्वर ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में प्रत्येक पदार्थ प्राणी मात्र के लिए बनाए हैं। उसी प्रकार संसार में आध्यात्मिक व्यवहारिक सन्तुलन सत्यता बनाने हेतु वेदों की शिक्षाएँ भी प्रदान की हैं, क्योंकि वेद विज्ञान समस्त वेदों में किसी भी प्रकार का धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास नहीं है। वेद सार्वभौम, सार्वकालिक हैं वेद की शिक्षाओं से मानव समाज में आपसी स्नेह परस्पर विरोध रहित चाल चलन एक ईश्वर पूजा, एक धर्म, एक संस्कार, एक सभ्यता, एक संस्कृति बनी रहती है। आर्य समाज पूर्ण रूप से वेदों की शिक्षाओं पर चल व चला रहा है। इसलिए आर्य समाज राष्ट्र को सर्वोपरि मानता है। आर्य समाज मानता है कि ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है, सर्वव्यापक चेतन शक्ति है। ■

ऋषि दयानन्द के उपकार

ऋषि दयानन्द के उपकार कितने? हम बता नहीं सकते।
उनकी मधुर वेदवाणी को, हम भुला नहीं सकते।।
जब पाप अधिक हो जाता है, मानवता खो जाती है,
संकट मोचन बनकर जग में, महान् आत्मा आती है।
सत्य प्रकाश फैलाकर फिर, स्वयं अदृश्य हो जाती है,
सत्य सनातन मर्यादा यह, युगों से चली आती है।
दयानन्द भी इस भू पर आए, ऋण उनका हम चुका नहीं सकते।
उनकी मधुर वेद वाणी को हम भुला नहीं सकते।।१।।
पर्वत घाटी वन उपवन, खोज लिया था जग सारा,
सत्य ज्ञान पाने की खातिर, फिरता था मारा-मारा।
सन्त महात्मा भी भटके थे, छाया हुआ था अन्धियारा,
अज्ञानता सर्वत्र फैली थी, कहीं नहीं था उजियारा।
कैसे आए यमुना तट मथुरा में, हम बता नहीं सकते।
उनकी मधुर वाणी को हम भुला नहीं सकते।।२।।
छत्तीस वर्ष की वय थी, और यौवन था भरपूर,
शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचर्य का, चेहरे पर था नूर।
तीन वर्ष में गुरु विरजानन्द से, ज्ञान लिया भरपूर,
जोशी अमरलाल का भोजन आवास में सहयोग रहा भरपूर।
गुरु पूर्णानन्द ने भेजा मथुरा में, एहसान हम जता नहीं सकते।
उनकी मधुर वेदवाणी को हम भुला नहीं सकते।।३।।
गुरु प्रेरणा लेकर ऋषिवर ने, जीवन अपना वार दिया,
स्थान-स्थान पर जाकर के हर मानव का उपकार किया।
सत्य विद्या को सत्य माना और सत्य का सदा व्यवहार किया,
पाखण्ड पताका फहराकर, गुरुडम का संहार किया।।
कितने जख्म मिले यहाँ उनको, हम बता नहीं सकते।
उनकी मधुर वेद वाणी को हम भुला नहीं सकते।।४।।

✍ **देशराज आर्य**
पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

अब तो चेत प्राणी

देखा है हमने खाली हाथ जाते संसार से,
न एक इंच भूमि, न एक रुपैया साथ ले जा सका।
अब तो चेत प्राणी,
भोगों को त्याग, वैरागी बन।
लोभ त्याग, संतोषी बन।
दान कर दानी बन।
धोखा छोड़, नेकी पर चल।
असत्य छोड़, सत्य मार्ग पर चल।
अज्ञान छोड़, विवेकी बन।
जन-जन का प्यारा बन, प्रभु का दुलारा बन।
तभी सफल होगी, तेरी ये साधना और संसार में आना।।

✍ **नरसिंह सोनी**
बीकानेर

बलात्कार के कारण और निवारण

आचार्य विश्वामित्रार्य दर्शनाचार्य
उपदेशक : मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल (म.प्र.)
चलभाष : ८८३९११३९७४०

वैसे देखा जाये तो पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षण होता है, इस प्रकार की घटनाएं होती रही हैं, आज भी हो रही है। यहाँ तक की स्त्री के लिये बड़े-बड़े युद्ध भी हुए हैं और हो रहे हैं। रेडियो, टेलीविजन, सामाचार पत्र भी इस प्रकार की घटनाओं को बढ़ावा दे रहें हैं, दूरदर्शन में नग्न चित्र व चलचित्रों में दिखाये जाये वाले दृश्य कामुकता को निमंत्रण देते हैं। हर मनुष्य के दिमाग में यदि स्वाभाविक रूप से ही कामवासना है तो नग्न चित्र निश्चित रूप से अग्नि में पेट्रोल का काम कर रहें हैं। हर मनुष्य के दिमाग में काम की अग्नि विद्यमान है, जिस अग्नि को फिल्म अभिनेता व अभिनेत्री हवा दे रहें हैं और वह अग्नि सामूहिक बलात्कार के रूप में धधक कर सामने आ रही हैं।

जहाँ गुड़ होगा वहाँ मक्खियाँ तो आयेंगी ही। स्त्री का शरीर गुड़ सदृश है। यदि शरीर को ठीक ढंग से ढंका नहीं गया तो मक्खी रूपी युवक गुड़ रूपी युवती को खाने को दौड़ पड़ते हैं। आज पाश्चात्य संस्कृति में फैशन के कारण कपड़े शरीर को ढंकते नहीं बल्कि, शरीर को और आकर्षित बनाते हैं जो युवकों के लिये आपत्ति का कारण बन जाता है।

वर्तमान परिवेश में ब्रह्मचर्य की शिक्षा का अभाव होने के कारण बालक एवं बालिकाओं को चरित्र, ब्रह्मचर्य की शिक्षा न मिल पाने के कारण भी बुरे कर्मों की ओर बालक और बालिकाएं दोनों ही पतन के रास्ते पर चल रहे हैं। यदि बचपन से ही चरित्र और ब्रह्मचर्य के ज्ञान अग्नि प्राप्त हो जाए तो निश्चय ही कामातूर जघन्य अपराध से बचा जा सकता है।

बलात्कार का निवारण : विचार ही मनुष्य को महान् बनाते हैं तथा विचार ही मनुष्य को पतित बनाते हैं। जो कोई भी गलत कार्य होते हैं, वे पहले मन में आते हैं। मन में सदैव अच्छे विचार ही हों ऐसी स्थिति बनाना बहुत मुश्किल है। अच्छे लोगों की संगति, अच्छे खान पान, अच्छे कपड़े, अच्छे साहित्य, अच्छे चित्र, व्यायाम, आसन व प्राणायाम का अभ्यास विचारों को अच्छे बनाते हैं। सहशिक्षा, स्त्रियों के सम्पर्क में रहना, उनसे हँसी-मजाक करना कामुकता के विचार को बढ़ावा देते हैं।

जब कोई युवक किसी युवती को देखता है तब क्या सोचता है? वह लड़की बहुत ही सुन्दर है, मेरे योग्य है, चन्द्रमा को फाड़कर निकली है, इसके शरीर के अंग मधु से बने हैं, इसका स्पर्श करने से स्वर्ग जैसा सुख मिलेगा। इन्हीं विचारों को बार-बार सोचता है और काम (सेक्स) की अग्नि में जलने लगता है, जिसके कारण लोग युवती न मिलने पर आत्महत्या करते हैं। कई लोग बलात्कार करते हैं। परन्तु वही युवक यदि मनुष्य शरीर के वास्तविक स्वरूप पर विचार करें तो निश्चित से घृणा उत्पन्न हो जाती है। जैसा कि योगशास्त्र के अन्दर महर्षि व्यास जी मानव शरीर के विषय में लिखते हैं

स्थानाद्बीजादुपष्टम्भान्निस्यन्दान्निधनादपि ।
कायमाधेयशौचत्वात् पण्डिता ह्यशुचिं विदुः ।।

१. स्थानात् – यह शरीर गर्भाशय तथा योनि से उत्पन्न हुआ है, इस लिए शरीर पवित्र नहीं हैं और न ही यह सम्पर्क करने योग्य है। जैसा कि एक बोरी में सारी गंदगी को भरकर एक ऊपर से सुन्दर पॉलिथीन में लपेट दी जाये यह शरीर भी वैसा ही है।

२. बीजात् – यह शरीर रज और वीर्य से उत्पन्न हुआ है यह कभी शुद्ध व पवित्र नहीं हो सकता।

३. उपष्टम्भात् – यह शरीर हड्डी, मांस, त्वचा, मेद, वीर्य, रक्तादि से बना है। इनमें से कोई भी पदार्थ देखने, छूने योग्य नहीं हैं।

४. निःस्यन्दन– आँख, कान, नाक, मुंह, मुत्रेन्दिय और गुदा इन्द्रिय के द्वारा निरन्तर मल मूत्र, पसीना निकलते रहते हैं जिससे शरीर अत्यंत दुर्गंधमय हो जाता है। यदि इन सबको सोचा जाये तो मनुष्य के शरीर के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाता है।

५. निधनादपि– यह मनुष्य का शरीर बूढ़ा और नष्ट भी हो जाता है। कोई इसे छूना नहीं चाहता। मृत्यु के बाद तुरन्त घर से श्मशान ले जाते हैं। अतः शरीर के प्रति आकर्षित होने की आवश्कता नहीं।

साफ-सफाई ही इस शरीर का आधार है। यदि धोते-पोंछते रहें तो शरीर की गंदगी ओझल रहती है। साफ-सफाई न करने से गन्दा व अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। आयुर्वेद में कहा गया है कि **'शरीरं व्याधिमन्दिरम्'** अर्थात् यह शरीर रोगों का घर है ।

'शौचात्स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः' जब मनुष्य होने वाले विकारों को देखकर बाह्य, आन्तरिक शुद्धि कर लेता है तब मनुष्य का अपने शरीर के प्रति तथा दूसरे के शरीर के प्रति आकर्षण तथा सम्पर्क समाप्त हो जाता है।

अतः ऋषि-मुनियों ने इस शरीर को अपवित्र कहा है। यदि मनुष्य इसके वास्तविक स्वरूप पर विचार करें तो काम (सेक्स) के विचार शिथिल हो जायेंगे। जिससे लोगों को बलात्कार आदि जैसे जघन्य अपराधों से बचाया जा सकता है।

आईए! हम सब मिलकर हमारे आसपास होने वाले बलात्कार जैसे जघन्य कुकृत्यों को रोकें, इनके खिलाफ आवाज उठायें तथा अपनी माँ-बहनों को सुरक्षा प्रदान करें। **'मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्'** अपनी माँ-बहनों के समान दूसरों को समझें और दूसरों की वस्तुओं को मिट्टी के ढेले के समान समझें तभी बलात्कार जैसे जघन्य पापों से बचा जा सकता है। ■

कथनी और करनी में अन्तर ही पतन और विनाश का कारण

मोहनलाल दशौरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

आदमी बाहर से और, अन्दर से और होता है।
बाहर से साहुकार, और अन्दर से चोर होता है।।

नेता–अभिनेता, मन्त्री–सन्त्री, अफसर–नौकर, साधु–सन्त तथा हर खास व आम के दो रूप होते हैं। ऊपर बाहर सज्जनता, सेवा, ईमानदारी और अन्दर कृत्य स्वार्थ और बेईमानी से भरे हुए। नेता, अफसर, मन्त्री–सन्त्री, सेवक–नौकरशाह, जनहित, देशहित व ईमानदारी की शपथ लेकर अपना काम आरम्भ करते हैं और मौका मिलने पर अपने अधिकारों, योग्यता, पॉवर व पद का दुरुपयोग कर लाखों–करोड़ों के मालिक बन जाते हैं। गबन, घोटाला, भ्रष्टाचार, हवाला व अकूत सम्पत्ति। उदाहरण छापे पड़ने पर बैंक, बिस्तर, लॉकर्स, करोड़ों रुपये उगलते हैं। साधु–सन्त साधना का ढोंग–नाटक कर साधनों में डूबे रहते हैं। उनके सुख साधन, ऐशो–आराम व भव्य रईसों की सी जीवन शैली से कहीं भी मालूम नहीं पड़ता है कि वे त्याग–तप की मूर्ति हैं। अनेक जन सेवा, राष्ट्र निर्माण, चरित्र निर्माण संस्थाएँ जन सेवा, राष्ट्र सेवा, मानव धर्म, प्रचार–प्रसार के नाम से पंजीयन हो जाती है और विघटनकारी, देशद्रोह के कार्यों में लिप्त पकड़ी जाती है। कट्टरवाद, आतंकवाद, अलगाववाद व हिंसक रूप में उजागर होती है। शिक्षा और संस्कार के नाम पर मदरसे, शाखाएँ जहर परोसते हैं। यानी हर पार्टी, संस्था, भोग–विभोग, धर्म–मजहब, सेवा संस्थान ऊपर से सृजनात्मक बनती है और अन्दर से विघटनकारी रूप प्रकट होता है। परिणाम पोल खुलने पर सामने आता है।

जो नेता–अभिनेता, मन्त्री–सन्त्री, अफसर–नौकर, साधु–सन्त कथनी–करनी में एक हैं, अपनी सेवा में नेक और ईमानदार हैं, वास्तव में जनहित, राष्ट्रहित व लोक कल्याणकारी धर्म व समाज सेवा में पूर्ण समय व जीवन दे रहे हैं, उनको नमन करता हूँ। हमारी रक्षा, हमारी सुरक्षा, हमारा सुखी जीवन, हमारा समाज व विकसित राष्ट्र उन्हीं ईमानदार, सच्चे, वफादार सेवकों, नेताओं, अधिकारियों, सन्तों–ऋषियों व भक्तों के कन्धों पर टिका हुआ और सुरक्षित है। परन्तु कट्टरवादी, आतंकवादी तथा अलगाववादी विध्वंसक ताकतों से सभी भयभीत व असुरक्षित हैं। हम देख रहे हैं, सुन रहे हैं, पढ़ रहे हैं। कई आन्तरिक तत्वों का सम्बन्ध विदेशी विघटनकारी समूहों से होकर लाखों–करोड़ों का फण्ड मनी लांड्रिंग के तार जुड़े हुए हैं। ये देश में छिपे देशद्रोही, गद्दार, भारत की एकता व अखण्डता पर प्रहार करने की योजनाएँ बनाते पकड़े जा रहे हैं। अपनी नापाक इरादों, हरकतों से बाज नहीं आ रहे हैं। पड़ोसी मृत समान देश भी हमारी शासन व्यवस्था पर उंगली उठा रहा, जहर उगल रहा है। अपनी तो सुलझती नहीं, दूसरों को दोषी बताकर देख लेने के मंसूबे बाँध रहा है। आपसी सद्भाव व भाईचारा कैसा हो? रूस–यूक्रेन युद्ध, ईरान–इराक युद्ध, चीन–कोरिया युद्ध यानी रूस, चीन, अमेरिका आदि बड़े–बड़े राष्ट्र एक–दूसरे पर चढ़ने को उतारू हैं। करोड़ों–अरबों की बर्बादी व लाखों सैनिकों का अन्त तथा पर्यावरण का सत्यानाश बढ़ता जा रहा है। इन बड़े–बड़े आकाओं की करतूतों से जो अपने आपको भगवान से भी ऊपर भाग्य विधाता साबित करने की होड़ या पागलपन। आखिर हम व विश्व का भविष्य सुखी सम्पन्न होगा या सम्पूर्ण विनाशकारी आज देश हो या विदेश कोई भी रक्षित सुरक्षित नहीं। न शान्ति न सुख। जीवन के आनन्द का तो सवाल ही नहीं। हर एक राष्ट्र बारूद के ढेर पर बैठा है। हर इन्सान तनावग्रस्त व असुरक्षित है।

सड़क शानदार, गाड़ी न्यू बेस्ट मॉडल। ड्रायवर ट्रेंड यंग। हम सज–धज कर बैठे हैं। गाड़ी फुल स्पीड से दौड़ रही है। परन्तु जाएँगे कहाँ, पहुँचेंगे कैसे, मंजिल किसी को मालूम नहीं। तो यात्रा कैसी रहेगी? हर देश का रक्षा बजट नए–नए आधुनिक अस्त्र–शस्त्र, युद्ध साधन बढ़ते जा रहे हैं। जनता गरीब, बेरोजगार, कुपोषण, भुखमरी की शिकार, बीमारियों, वायरस और प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त। नेता–आका–साधु–सन्त मस्त। हालत सभी की खस्ता। जब हालत ऐसी चिन्ताजनक, अनजाने भविष्य का क्या होगा? जब तक देश–विदेश, संसार–समाज अर्थ प्रधान, भौतिक भोगवादी संस्कृति में लिप्त रहेगा, आध्यात्मिक नैतिक चरित्रात्मक बदलाव नहीं होगा। ईश्वर/मानव धर्म को नहीं अपनाया जाएगा तब तक मानव समाज विश्व पतन की ओर ही बढ़ता जाएगा। प्रलय, रसातल, विनाश, कटु सत्य है। चिन्ता–चिन्तन का विषय है। ■

जय हो भारत! जय हो!

न थकेंगे
न हारेंगे
न टूटेंगे
न बिखरेंगे
अद्वितीय भारत, अतुलनीय भारत!
अभिनंदनीय भारत, आपकी जय हो!
संकट से बड़ा संकल्प
प्रबल आत्मविश्वास
अदम्य साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति
सामूहिक सहयोग की भावना से
भारत जीतेगा, जरूर जीतेगा!
आत्मनिर्भरता व
स्वदेशी मन्त्र से
नये भारत का निर्माण होगा!
सनातनी उद्घोष
'वसुधैव कुटुम्बकम्' भावना से
भारत विश्व का नेतृत्व करेगा
जय हो भारत! जय हो!

ओमप्रकाश बटवाल
स्टेशन रोड, मल्हारगढ़,
जिला : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५१०६५९४

पाप से मुक्ति के नाम पर लूट

भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल

डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'
चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

यह शीर्षक अपने आप ही आज के गुरुओं की कहानी बयान कर रहा है, क्योंकि हमारे देश में पहले कभी भी किसी गुरु को सद्गुरु नहीं कहा जाता था, बल्कि सद्गुरु नाम होता ही नहीं था, हाँ गुरु अवश्य हुआ करते थे जो हमें वेदादि सत्य विद्या का उपदेश दिया करते थे, लेकिन अब तो गुरु के नाम पर सद्गुरुओं की बाढ़ सी आ गई है, जिसे देखो बस वही सद्गुरु बन जाता है चाहे वेद पढ़े हो या न पढ़े हों। वर्तमान स्थिति में तो गुरु बनना भी एक पेशा ही बन गया है जिससे कमाई भी तगड़ी होती है और नाम भी खूब होता है। आज सर्वत्र मुखौटों का बोलबाला है उसके पीछे की असलियत दिखती नहीं है। सब वस्तुएँ नकली, वचनों में मिलावट और मिलावट भी इस प्रकार से कर दी जाती है कि अच्छा पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी धोखा खा जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि हीरे और काँच के अन्तर को पहचानना भी कठिन होता जा रहा है इसलिए अत्यंत सावधानी की आवश्यकता है। प्राचीन काल में गऊ आदि पशुओं से प्राप्त दूध को जमाकर दही बनाकर खूब मथने पर जो द्रव्य प्राप्त होता था उसे मक्खन और मक्खन को गर्म करने पर जो बनता था उसे घृत कहा जाता था लेकिन जबसे भारत सरकार अंग्रेजों की गुप्त योजना का शिकार हुई और अपने दूध देने वाले पशुओं को हजारों कत्लखानों में कटवाकर माँस का निर्यात करने लगी तो भारत में भी घी, दूध की कमी हो गई है, जिसके परिणाम स्वरूप इसकी पूर्ति करने के लिए वनस्पति घी, डालडा आदि की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ खुलवा दी गई है। आज आलम ये है कि इस घी के व्यापार में अनेक प्रकार के नकली घी बाजार में आ गए हैं तभी से असली घी के आगे 'शुद्ध' विशेषण लगाकर शुद्ध घी के नाम से बेचा जाने लगा। अब बताइए! क्या कोई नकली घी बेचने वाला व्यक्ति या मिलावटी घी बेचने वाला व्यक्ति अपनी दुकान पर अशुद्ध घी का बोर्ड लगाकर व्यापार करेगा? कभी नहीं। अब तो मिलावटी घी के व्यापारी भी शुद्ध घी का बोर्ड लगाकर बेचने लगे हैं। क्या यह सब जानने के बाद घी का खरीददार बिना जाँच-पड़ताल किए ही घी खरीद लेगा? हरगिज नहीं। ठीक इसी प्रकार आज के गुरुओं की स्थिति है जो गुरु शब्द से पहले 'सद्' शब्द लगाकर सद्गुरु नाम से अपना उच्चारण करवाने लगे हैं। वास्तव में गुरु कैसा होना चाहिए? यह किसी ने भी जानने व समझने का प्रयास ही नहीं किया जिसके कारण अब आम आदमी को ये पता ही नहीं लगता है कि कौनसा गुरु सच्चा है, कौनसा झूठा है। वर्तमान में आसाराम बापू और निर्मल बाबा, कबीरपंथी रामपाल दास, सत्सांई बाबा और डेरा सच्चा सौदा के बाबा राम-रहीम आदि के विषय में भारत के मीडिया द्वारा विभिन्न चैनलों पर दिखाई गई इनके काले कारनामों से प्राप्त दुर्गति का चित्रण और पुलिस विभाग द्वारा इनके आश्रमों की की गई छानबीन से और इन पर चलाए गए मुकदमों से त्रस्त होकर भारतीय जनमानस का वो अधिकांश वर्ग जो इन गुरुओं आदि का पक्षधर बन गया। जो हिन्दुओं में अन्धविश्वास एवं अन्धश्रद्धा के कारण सत्य सनातन वैदिक मार्ग से भटके हुए हैं और राम-कृष्ण जैसे शासकों और चाणक्य जैसे महान् राजनीतिज्ञ और ऋषि-मुनियों के रास्ते से काफी भटक चुके हैं। अत: इन सब विवादों को देखते हुए वास्तविक गुरु के स्वरूप का दिग्दर्शन कराने के लिए और सद्गुरु के नाम से व्यवसाय चलाने वालों का भण्डाफोड़ करने के लिए हमारी समीक्षात्मक लेखनी को विवश होना पड़ा।

प्राचीन काल से ही हमारे देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का विधान रहा है। गुरुकुल वह स्थान होता था जहाँ गुरु का सान्निध्य पाकर बालक अपने जीवन को एक नई दिशा प्रदान करते थे। जहाँ बौद्धिक विकास के साथ-साथ उसकी अध्यात्मिक एवं शारीरिक उन्नति भी होती थी। किशोरावस्था में उसे गुरुजन भले-बुरे की पहचान कराते थे लेकिन आज आधुनिकता की अन्धी दौड़ में वह शिक्षा प्रणाली कहीं खो गई है और उसका स्थान स्कूलों ने ले लिया है और वर्तमान में जो थोड़े बहुत गुरुकुल आर्य संस्थाओं के प्रयास से चल रहे हैं उनमें भी अब सरकारी मान्यता प्राप्ति के चक्कर में पाश्चात्य परिवेश की गन्ध आने लगी है। अन्यत्र स्कूली शिक्षा के कारण अध्यात्म व शारीरिक विकास से विद्यार्थियों का सम्पर्क नाममात्र का रह गया है। केवल आजीविका हेतु ही ज्ञानार्जन कराया जाता है और बाद में जब प्रमाण पत्र लिए आजीविका हेतु भटकता-भटकता थक जाता है तो अधिकांश भारतीय नौजवान अपने लाभ के लिए न जाने कितने ही गलत रास्तों पर चल पड़ता है और जीवन के अन्तिम पड़ाव तक पहुँचते-पहुँचते मानसिक परेशानियों के चलते इतना थक जाता है, इतना भयभीत हो जाता है कि चाहकर भी उसे कहीं चैन नहीं मिलता। तब चाहता है बदलाव, ठहराव अपनी जिन्दगी में और तब शासकीय दु:खों से तंग आकर भटकता है शान्ति की खोज में और इंसान के इन्हीं जज्बातों का फायदा उठाते हैं ये आज के सद्गुरु जिन्होंने गुरु के स्थान पर स्वयं के नाम के समक्ष सद्गुरु लिखवाया है क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि भारत के लोग अन्धविश्वास की बेड़ियों में इस प्रकार जकड़े हुए हैं कि पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी वैदिक शिक्षा न मिलने से धर्म के नाम पर अज्ञानी बने रहते हैं। उनके मन में धर्म के प्रति गहरी आस्था भरी हुई है जिसे चाहकर भी वे नकार नहीं सकते। वैदिक साहित्य को छोड़कर अन्य सभी भागवतादि पुराणों में उनके भगवान और भगवद् अवतारों की इतनी महत्ता को सद्गुरु के बताए गपोड़ों के माध्यम से जानते हैं तो भक्तजन मानसिक रूप से गुलाम हो जाते हैं और उन कल्पित गपोड़ों को सत्य मान लेते हैं। उनके अन्त:करण में इन भगवान और भगवद् अवतारों

की महत्ता इतनी गहरी बैठी हुई है कि वे सन्त-महात्माओं को तो सहज ही भगवान् मान लेते हैं, इन सद्गुरु नामक पाखण्डियों को पता है कि भारत में गुरु का मिलना अत्यन्त कठिन है, लेकिन चेला तो यह समझता है कि उसे सद्गुरु के रूप में मानो मसीहा ही मिल गया है जो उनके छोटे-मोटे दु:ख व परेशानियाँ तो चुटकी बजाते ही दूर कर देगा। आपने अक्सर देखा होगा कि इन सद्गुरुओं के जाल में सर्वप्रथम हमारी भोली-भाली बुजुर्ग माताएँ फँसती हैं और ये सद्गुरु उन्हें इस प्रकार बरगलाते हैं कि वे अपने साथ-साथ अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी वहाँ उनके पास ले जाने लगती हैं और क्योंकि आज हमारे देश के भविष्य हमारे बच्चों को अध्यात्मिक शिक्षा से (पाठ्यक्रम में न होने के कारण) कोई लेना-देना नहीं है इसलिए वे बच्चे शिक्षित होने के बावजूद अपने गृहस्थ जीवन में अशान्तता को कम करने और शान्ति प्राप्त करने के लिए स्वेच्छा से इन गुरुओं के जाल में फँस जाते हैं। वे समझते हैं कि सद्गुरु सब दु:खों का हरण कर लेते हैं अत: उनके लिए हुए दुष्कर्मों के पाप का भार भी इन गुरुओं के ही सिर पर आएगा। ऐसा इनके ये सद्गुरु ही इन्हें बताते हैं ताकि उनके भक्तजनों की संख्या इतनी बढ़ जाए कि जरूरत पड़ने पर वे उसकी ढाल बन सकें। ये अपने भक्तों को शब्दों की बाजीगरी में ऐसा उलझाते हैं कि निकलना नामुमकिन-सा लगता है। इनके शब्दों की बाजीगरी और आँकड़ों की जादूगरी में बहुत बल है जिसका इस्तेमाल कर ये भोली-भाली जनता को बहुत आसानी से लुभा और बरगला सकते हैं और आशावादी होने के कारण जनता उनके जाल में फँस भी जाती है और ठगी जाती है। बार-बार जनता ये उम्मीद लगाती है कि राष्ट्रहित की बात सोचने वाला कोई रहनुमा एक न एक दिन अवश्य आएगा जिसकी नीयत में खोट नहीं होगा, वह हमें निराश नहीं करेगा, वह देश और देशवासियों का उद्धार करेगा और इसी उम्मीद में जनता हर बार किसी ढोंगी के जाल में फँसकर उसे उपरोक्त रहनुमा समझकर पलकों पर बिठा लेती है, लेकिन हर बार उसकी उम्मीद टूटती है। फिर नया सवेरा, नई उम्मीद के साथ शुरू होता है वस्तुत: जो व्यक्ति नया मत चलाता है वह गीता के दो श्लोक लेकर भगवान या भगवद् अवतार बनने का ढोंग करने लगता है। ये दो श्लोक इस प्रकार हैं :-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधुनांविनाशय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

अर्थात् (१) साधुओं की रक्षा के लिए (२) दुष्टों के विनाश के लिए, (३) धर्म की स्थापना के लिए मैं युग-युग में जन्म लेता हूँ।'' बस यही मूल की भूल है। पाखण्डियों को यहीं से प्रेरणा मिली, क्योंकि आम जनता के दिमाग में भी उपरोक्त भ्रान्ति से ईश्वर को अवतारवादी मानने लगते हैं और कृष्ण के रूप में कोई न कोई अवश्य आएगा ऐसी अवधारणा करने लगते हैं। इसी के कारण अनेक सद्गुरुओं की बाढ़ आ गई है और जनता की यही उम्मीदें इन सद्गुरु का रूप धरे बाजीगरों, ठगों और सौदागरों की सबसे बड़ी ताकत है। ये बाजीगर उस ईश्वर की सामर्थ्य को भूल जाते हैं। जनता से पाए हुए प्रेम और अन्धश्रद्धा के वशीभूत ये स्वयं को परमात्मा समझने की भूल कर बैठते हैं और ईश्वरीय न्याय व कर्मफल व्यवस्था को अनदेखा कर गुप्त रूप से लोगों को लूटने के नित नए साधन खोजते रहते हैं। ये अच्छी तरह जानते हैं कि **''किया हुआ अधर्म कभी निष्फल नहीं होता अर्थात् अपने किए हुए कर्म का फल तो देर–सवेर भोगना ही पड़ता है''** लेकिन ये लोकैषणा और वितैषणा के रोगी स्वयं तो ईश्वर व ईश्वरीय व्यवस्था को अनदेखा कर अपने अनुयायियों को भी भगवान (ईश्वर) की भक्ति में न लगाकर अपनी भक्ति में लगाते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि आपने सुन रखा है कि **''गुरु बिन मुक्ति नहीं''** बस आप दौड़ पड़ते हैं गुरु बनाने को, इसीलिए तो अक्सर सुनने में आता है कि मैं तो अमुक गुरु का भक्त हूँ मैंने तो फलां गुरु का नाम ले रखा है उसका नाम मात्र लेने से ही मुक्ति हो जाती है। उसके स्मरण मात्र से ही अनेक दु:ख समाप्त हो जाते हैं आदि–आदि। अब जरा विचार करने की बात है कि जिस मुक्ति व शान्ति की खोज में व्यक्ति इन सद्गुरुओं के पास जाता है क्या वह है इनके पास? यदि होती तो ये अपने भक्तों की भीड़ बढ़ाने में न लगे होते। क्योंकि ये भी जगत् में रहने वाले जीव हैं जिन्होंने इस पुण्यमयी धरा पर जन्म लिया है और जिनका जन्म होता है वे कर्म बन्धन से रहित कैसे हो सकते हैं? केवल ईश्वर ही ऐसा है जो जन्म व मृत्यु के बन्धन से रहित है, निराकार है, घट–घट वासी है, सर्वत्र व्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, सृष्टिकर्ता और संहारकर्ता है। क्या ये सभी गुण अपने आपको भगवान कहलाने वाले किसी भी गुरु में घटते हैं? असम्भव। इन सद्गुरुओं को भी संसार में रहते हुए अपने कर्मानुसार सुख–दु:ख रूपी फल भोगना ही पड़ता है। एक बात और विचार करने की है कि जब लोकैषणा और वित्तैषणा से ये ढोंगी स्वयं ही नहीं मुक्त हो पाए इन्हें पाने के लिए व्याकुल रहते हैं। अर्थ लाभ हेतु ही कईयों ने तो धर्म को अपना व्यवसाय बना रखा है तभी तो इनके सत्संगों की कीमत लाखों में है **ये लोगों को लच्छेदार भाषणों के माध्यम से मोह–माया से मुक्त रहने का उपदेश देकर स्वयं उनकी माया पर कब्जा जमा लेते हैं** एवं लग्जरी बुलेटप्रूफ गाड़ियों में कमाण्डो को साथ लेकर चलते हैं कि क्या संत ऐसे ही होते हैं? जो ऐशो आराम में आकण्ठ तक डूबे हों? तो बताओ जरा जब ये स्वयं ही इन ऐषणाओं से मुक्त नहीं हो पाए हैं तो आपको कैसे मोक्ष प्राप्त करा सकते हैं? कैसे आपको सांसारिक बन्धनों से छुड़ा सकते हैं? लेकिन फिर भी आप अपने पारिवारिक झंझटों से निजात पाने के लिए एक उम्मीद लिए इन सद्गुरुओं के पास जाते हैं और ये आप भूल जाते हैं कि जिन पारिवारिक झंझटों को छोड़कर मुक्ति के लिए आप इन सद्गुरुओं के पास आए थे उन झंझटों से तो मुक्त हो पाए नहीं बल्कि इन गुरु घंटालों की सेवा में ही अटक कर रह गए। यहाँ तक कि सद्गुरु की सेवा कार्यो के लिए आपको गुरु की विशेष कृपा का पात्र बनने का सौभाग्य मिलेगा ऐसा लालच दिया जाता है। मेरे विचार से गुरु की कृपा तो मिलेगी या नहीं उसका तो पता नहीं? परन्तु यदि आप ईश्वर के प्रति इतनी ही श्रद्धा से शान्तिपूर्वक अपनी गृहस्थी को संवारें तो आपका परिवार आपकी मृत्यु के पश्चात भी आपको श्रद्धांजलि अवश्य देगा सदैव आपको याद करेगा, सदा आपका ऋणी रहेगा। ■

(शेष भाग आगामी अंक में)

श्रेष्ठ कर्म करो और भले बनो- भर्तृहरि वैराग्य शतक

शिवनारायण उपाध्याय
१३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४-२५०१७८५

संस्कृत भाषा के महान् कवियों में श्री भर्तृहरि का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने संस्कृत भाषा में व्याकरण, संगीत, शृंगार शतक, नीति शतक और वैराग्य शतक के रूप में बहुमूल्य ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने वैराग्य शतक में मनुष्य की कई समस्याओं का हल प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही उन्होंने मनुष्यों को श्रेष्ठ कर्मों को करने की प्रेरणा भी दी है। हम वैराग्य शतक के आधार पर यह देखेंगे कि भर्तृहरि ने मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करने को किस प्रकार प्रेरित किया है।

कर्म की महत्ता का वर्णन करते हुए भर्तृहरि लिखते हैं-

ब्रह्मा येन कुलालवन्निपमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे विष्णुर्येन
दशावतार गहने क्षिप्तो महासंकटे।
सूर्यो भाम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे।।

-भर्तृ. नीति ९६

अर्थ- हम देवताओं को नमस्कार करते हैं परन्तु वे भी तो ब्रह्मा के वश में है। अच्छा तो फिर ब्रह्मा से अपनी वेदना कहें उसकी वन्दना करें परन्तु वे तो निश्चित कर्म का फल देते हैं। विष्णु की वन्दना करें परन्तु उन्होंने तो स्वयं कर्म फल के आधार पर १० अवतार धारण किए हैं, दस बार जन्म लेकर विष्णु ने तो महान् संकटों का सामना किया है वे हमारी क्या सहायता करेंगे? भगवान् शंकर ललाट पर चन्द्रमा को धारण करके भी नित्य भिक्षाटन करके जीवन व्यतीत करते हैं वे हमारी क्या सहायता करेंगे? सूर्य से प्रार्थना करना भी व्यर्थ है वह तो स्वयं निरन्तर आकाश में गमन करता रहता है। सूर्य स्वयं ही कर्म के बन्धन में है। तो फिर हम कर्म को ही क्यों नमस्कार नहीं करें जिसने सभी को बन्धक बना रखा है। अर्थात् हम श्रेष्ठ कर्म ही निरन्तर करते रहेंगे।

वने रणे शत्रुजलाग्नि मध्ये महार्णवे पर्वत मस्तके वा।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि।।

-भर्तृ. नीति/९८

पूर्व जन्म के शुभ कर्म ही मनुष्य को बड़े भयंकर जंगल में, रण क्षेत्र में, शत्रु, जल और अग्नि के बीच महासमुद्र में, पर्वत की चोटी पर, सुप्तावस्था में, असावधानी की स्थिति में, सुप्तावस्था में,विपत्ति के आने पर रक्षा करते हैं।

कार्य आरम्भ करने से पूर्व मनुष्य को उस कर्म के परिणाम पर चिन्तन अवश्य करना चाहिए।

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यमादौ परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्य नुल्यो विपाकः।।

-भर्तृ. नीति/१००

अर्थ- विद्वान् मनुष्य को कोई अच्छा या बुरा कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व उसके परिणाम के विषय में अवश्य सोचना चाहिए क्योंकि शीघ्रता से आरम्भ किए गए कर्मों का परिणाम आजीवन अग्नि के समान दाहक होता है। अतः कैसा भी कार्य करें परन्तु उसके अन्तिम परिणाम के विषय में पर्याप्त चिन्तन पहले करें। हम ऐसे कर्म ही करें जिससे सामान्य जन का कल्याण होवे।

प्राणाघातान्निर्वृतः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं
काले शक्त्या प्रदानं युवति जनकथा मूकभावः परेषाभ्।
तृष्णास्त्रोतो विभङ्गो गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा
सामान्यं सर्व शास्त्रष्वनुपहतविधिः श्रेयषामेष पन्था।।

-भर्तृ. नीति/२६

अर्थ- जीव हिंसा से अलग रहना अथवा अहिंसा को धारण करना, दूसरे किसी के धन का अपहरण नहीं करना, संयमित जीवन व्यतीत करना, सदैव सत्य वचन ही बोलना, समय के अनुरूप किसी श्रेष्ठ व्यक्ति को दान देना, पराई स्त्री की चर्चा से बचना, लोभ नहीं करना, गुरु के प्रति विनम्रता का व्यवहार करना, सभी प्राणियों पर दया करना यही सब शास्त्रों द्वारा बताया गया उचित मार्ग है। इसी में सामान्य जन का कल्याण निहित है।

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला न स्नानं
न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते क्षीयन्ते
खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

अर्थ- हे मनुष्यो! न तो केयूर, न चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार, न स्नान, न चन्दन आदि का लेप, न फूल, न संवारे हुए केश पाश ही मनुष्य को अलङ्कृत करते हैं। परन्तु यह एक वाणी जो परिष्कृत रूप से धारण की जाती है वही मनुष्य को अच्छे प्रकार से सजा देती है क्योंकि अन्य सब बहुमूल्य अलंकार तो नष्ट हो जाते हैं। परन्तु वाणी रूप अलंकार तो मनुष्य का स्थाई आभूषण है। वाणी रूप आभूषण ही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है।

याचक को बिना याचना के दान देना पुरुष की महानता है।

त्वमेव चातकाधारोऽसीति केषा न गोचरः
किमम्भोदवरास्माकं कार्पण्योक्ति प्रतीक्षसे।।

-भर्तृ. नीति/५०

कवि चातक के द्वारा मेघ को सम्बोधन करके कहलाता है- हे मेघ! आप ही हम चातकों के जीवन आधार हो यह किसे ज्ञात नहीं है अर्थात् सभी लोग इन्हें जानते हैं तब फिर हमारे दीन-हीन वचनों की प्रतीक्षा क्यों कर रहे हैं? अर्थात् किसी भी महान् व्यक्ति को अपने आश्रित जन की सहायता के लिये प्रार्थना की प्रतीक्षा करना अनुचित है। श्रेष्ठ दानदाता उसे कहा जाता है जो बिना याचना के याचक को अभीष्ट दान दे देता है। उसी में दाता की महानता है।

प्रदान्नं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमविधिः प्रियं कृत्वा
मौनं सदसि कथनं चाप्युपकृतेः।
अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभिभवसाराः भवगन्धाः परकथाः।
सतां केनोदृष्टिं विषमभसिधाराव्रतमिदम्।।

-भर्तृ. नीति/६४

अर्थ- गुप्तदान करना, अपने घर पर आए हुए अतिथि का तत्परतापूर्वक सम्मान करना, दूसरों पर उपकार करके शान्त रहना, समाज में किसी को न कहना, धन प्राप्त करके भी गर्व न करना, सज्जन पुरुषों के लिए तलवार की धार पर चलने के समान कठिन व्रत है।

वाञ्छासज्जनसंगमे परगुणे प्रीतिर्गुरौ नम्रता विद्यायां
व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकापवादाद भयम्।
मुक्तिः शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्ग मुक्ति खले एते येषु।
वसन्ति निर्मल गुणास्तेभ्यो नरेभ्यो नमः।।

-भर्तृ. नीति/६२

अर्थ- सज्जन पुरुषों के समागम में अच्छाः दूसरों के गुणों से प्रीति, गुरु के प्रति नम्रता, विद्या ग्रहण करने में रुचि, अपनी पत्नी से ही रति क्रिया, लोक निन्दा से भय, भगवान् शिव की भक्ति, आत्म दमन की शक्ति, दुष्ट पुरुषों की संगति का त्याग ये सब गुण जिन लोगों में विद्यमान है उन श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्रणाम करता हूँ। इतिशम्। ■

बंग भूमि बांग्लादेश से आर्यों के नाम एक पाती

आर्य समाज मन्दिर, दयागंज
ढाका, ४.३.२०२३ शनि.

समा. आर्य प्रवर, सादर नमस्ते। ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु।

इंडिगो के वायुयान ६ई१८६१ से २० फरवरी को नई दिल्ली से रवाना होकर दोपहर ३:४५ पर हम ढाका पहुँचे। ये हमारी पन्द्रहवीं विदेश यात्रा है। इसके पूर्व भारत के २९ प्रान्तों और विश्व के छह महाद्वीपों के लगभग १५ देशों में हम वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके हैं।

२ मार्च २०२३ को सायं ५:३० बजे भारत के महामहिम राजदूत श्री प्रणव वर्मा जी इंडियन हाई कमिशनर से ढाका स्थित उनके कार्यालय में एक शिष्टमंडल के साथ जाकर मुलाकात की। अंग्रेजी, हिन्दी, बांग्ला भाषा का आर्य वैदिक साहित्य भेंट किया। आर्य समाज के आनुषांगिक संगठन अग्निवीर बांग्लादेश के बारे में जानकारी दी व स्थानीय आर्य युवकों के प्रति सहयोग पूर्ण स्नेह बनाए रखने का आग्रह किया।

१९४७ में धर्म के नाम पर बँटवारे में बंगभूमि को भी दो भागों में बाँटकर पाकिस्तान से मिला दिया गया। १९५५ में इस भाग को पाक नेताओं ने पूर्वी पाकिस्तान नाम देकर सौतेला व दयनीय व्यवहार करना प्रारम्भ किया तो मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में स्वतन्त्रता आन्दोलन मुखर हो उठा। १९७० में पाक सेना ने ३० लाख निरपराध बंगाली लोगों का कत्लेआम मचा दिया। २ लाख महिलाओं का शील भंग हुआ। इनमें हिन्दू ही ज्यादा थे। १० लाख शरणार्थी भारत पहुँचे, तब भारत को हस्तक्षेप करना पड़ा। ३ दिसम्बर १९७१ को युद्ध प्रारम्भ हो गया। अन्तत: ९३००० पाक सेना का भारतीय सेना के समक्ष ऐतिहासिक आत्म समर्पण हुआ।

उदारतापूर्वक भारत ने इनको अलग–अलग कैम्प में रखा अन्यथा बंग जनता इनको जीवित ही न छोड़ती। भारत ने इस आकस्मिक युद्ध में विजय प्राप्त की व १६ दिसम्बर १९७१ में विश्व के क्षितिज में नए देश बांग्लादेश का उदय हुआ। केवल साढ़े तीन वर्ष के भीतर आतंकियों ने देश के जनक व राष्ट्रपति मुजीबुर्रहमान को गोली मार कर पूरे परिवार को समाप्त कर दिया। दो बेटियाँ जर्मनी में थी सो बच गईं अन्यथा अनर्थ हो जाता। १५ साल के अल्प काल में ८ राष्ट्रपति बने। वर्षों तक अस्थिरता रही। अब उनकी बेटी शेख हसीना जी इस देश की प्रधानमन्त्री हैं। प. बंगाल मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा व आसाम इन ५ राज्यों के साथ बर्मा देश के साथ बंगाल की खाड़ी का स्पर्श बांग्लादेश की सीमाएँ करती हैं। म.प्र. के कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा १४८४६० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल का ये छोटा सा देश है। इसकी जनसंख्या १८ करोड़ है जिसमें मुस्लिम ९० प्रश, हिन्दू ८ प्रश अर्थात् डेढ़ करोड़ व १ प्रश में बौद्ध व ईसाई हैं। २५ हजार लोग आर्य समाज से प्रभावित हैं। आर्य समाज के पूरे देश में ४५ मन्दिर व कुल १५० के लगभग शाखाएँ हैं। जाकिर नाइक व ब्राह्मण से मुस्लिम बने ब्रदर राहुल दोनों ने सैकड़ों युवक–युवतियों को अपने कुतर्कों से मुस्लिम बनाया। भारत के अग्निवीर संगठन ने इनका सोशल मीडिया से यथोचित उत्तर दिया तो डॉ. निलय आर्य समाज से प्रभावित हुए व इन्होंने २०१२ में यहाँ अग्निवीर बांग्लादेश की स्थापना की जिसमें २०० डॉक्टर, १५० इंजीनियर, ५० पुलिस अधिकारी, सी.ए, प्रोफेसर, व विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्र हैं। agniveerbangla.org एवं back2thevedas इन दो वेबसाइट के माध्यम से सैकड़ों हिन्दुओं को विधर्मी होने से ये संगठन बचा चुका है। जाकिर नाईक व ब्रदर राहुल की बोलती इन आर्यों ने बन्द कर दी है। बड़ी संख्या में आर्य साहित्य का ये बंगाली भाषा में अनुवाद कर चुके हैं। इनमें ३० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पूरे देश में इन्होंने हमारे ८–१० कार्यक्रम रखे थे जिसमें २२६ उच्च शिक्षित युवक–युवतियों के यज्ञोपवीत व वेदारम्भ आदि संस्कार करवाने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। लव जिहाद, हिन्दू मन्दिरों को तोड़ना, देवी–देवताओं पर अश्लील कमेंट अत्रत्य मौलवी करते रहते हैं। देश में ८ डिवीजन व ६४ जिले हैं। उच्च व्यापार में मुस्लिम पार्टनर रखना मजबूरी है अन्यथा सरकारी समस्याएँ आती हैं। प्रजा ९९ प्रश मांसाहारी है। ढाकेश्वरी मन्दिर, रमना काली मन्दिर, सबसे बड़ा समुद्री तट कोक्सेस बाजार, सेंट मेरीन आईलैंड, रुक्मिणक्ष कांतज्यू मन्दिर, चन्द्रनाथ मन्दिर, इस्कान के बहुत सारे मन्दिर, म्यूजियम आदि पर्यटक व दर्शनीय स्थल हैं। यहाँ की मुद्रा टका है जो भारत के १०० में १२० रु. के बराबर है। जो युवतियाँ हिन्दू लड़कों से विवाह कर घर वापसी करना चाहती है उनकी शुद्धि आर्य अग्निवीर करते हैं। कोई स्थायी विद्वान् मिले तो यहाँ एक गुरुकुल खोलना चाहते हैं। विमान बांग्लादेश एयरलाइन्स के वायुयान से हम ५ मार्च को दिल्ली पहुँचेंगे। अप्रैल में नेपाल के कार्यक्रम के बाद ही आपसे चर्चा हो सकेगी। मंजिल बहुत अफसाने बहुत राह जिंदगी में इम्तेहान बहुत हैं। मत करो गिला उसका जो मिला नहीं इस दुनिया में। खुश रहने के बहाने बहुत हैं। गृह मन्दिर में सभी को नमस्ते कहें।

आपका ही-

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
चलभाष : ७९८७३७२३०५

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्विजन्मशताब्दी वर्ष एवं आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी, जरैल के अट्ठाइसवें वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा का भव्य आयोजन

सनातन धर्म-संस्कृति के समस्त निष्ठावान माननीय बन्धुओं एवं माननीया मातृशक्ति सादर नमस्ते।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जिला आर्य समाज मधुबनी , दयानन्द जनकल्याण आश्रम , जरैल , सूर्यकला लीलाकान्त स्मृति न्यास, रैमा तथा प्राचीन मिथिला (बिहार) भारत आर्यावर्त के तत्वावधान में आप सभी के सहयोग से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०८० तदनुसार दिनांक २२ मार्च २०२३ को अपराह्न काल दयानन्द जनकल्याण आश्रम, जरैल, प्रखण्ड बेनीपट्टी , जिला : मधुबनी, बिहार से सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा प्रारम्भ होगी जो बिहार राज्य के सभी जिलों, अनुमण्डलों एवं प्रखण्डों तक जाएगी। उपयुक्त अवसर पर सभी जिला पदाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, जिला शिक्षा पदाधिकारी, अनुमण्डल पदाधिकारी, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अंचल पदाधिकारियों सहित सभी थाना प्रभारियों को भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सूर्यकला लीलाकान्त स्मृति फाउण्डेशन, रैमा के सौजन्य से भेंट किया जाएगा।

किस जिले में यात्रा कब से कब तक

१ जिला मधुबनी दिनांक २२ मार्च से १३ अप्रैल २०२३ तक।
२ जिला सीतामढ़ी दिनांक १४ से ३० अप्रैल २०२३ तक।
३ जिला शिवहर दिनांक १ से ५ मई २०२३ तक ।
४ जिला पूर्वी चम्पारण दिनांक ६ मई से १ जून २०२३ तक ।
५ जिला पश्चिमी चम्पारण दिनांक २ से १९ जून २०२३ तक।
६ जिला गोपालगंज दिनांक २० जून से ३ जुलाई २०२३ तक।
७ जिला सिवान दिनांक ४ से २२ जुलाई २०२३ तक।
८ जिला सारण दिनांक २३ जुलाई से ११ अगस्त २०२३ तक।
९ जिला वैशाली दिनांक १२ से २७ अगस्त २०२३ तक।
१० जिला मुजफ्फरपुर दिनांक २८ अगस्त से १२ नवम्बर २०२३ तक।
११ जिला दरभंगा दिनांक १३ से ३० नवम्बर २०२३ तक।
१२ जिला समस्तीपुर दिनांक १ से २० अक्टूबर२०२३ तक ।
१३ जिला बेगूसराय दिनांक २१अक्टू. से ७ नवम्बर २०२३ तक।
१४ जिला खगड़िया दिनांक ८ से १४ नवम्बर २०२३ तक।
१५ जिला मधेपुरा दिनांक १५ से २७ नवम्बर २०२३ तक।
१६ जिला सहरसा दिनांक २८ नवम्बर से ७ दिसम्बर २०२३ तक।
१७ जिला सुपौल दिनांक ८ से १८ दिसम्बर २०२३ तक।
१८ जिला अररिया दिनांक १९ से २७ दिसम्बर २०२३ तक।
१९ जिला किशनगंज दिनांक २८ दिस.२०२३ से ३ जन. २०२४ तक।
२० जिला पूर्णियां दिनांक ४ से १७ जन. २०२४ तक
२१ जिला कटिहार दिनांक १८ जन. से २ फर. २०२४ तक
२२ जिला भागलपुर दिनांक ३ से १८ फर. २०२४ तक ।
२३ जिला मुंगेर दिनांक १९ से २७ फर. २०२४ तक।
२४ जिला बांका दिनांक २८ फर. से ९ मार्च २०२४ तक।
२५ जिला जमुई दिनांक १० से १९ मार्च २०२४ तक।
२६ जिला लक्खीसराय दिनांक २० से २६ मार्च २०२४ तक।
२७ जिला शेखपुरा दिनांक २७ मार्च से १ अप्रैल २०२४ तक।
२८ जिला नालन्दा दिनांक २ से २१ अप्रैल २०२४ तक।
२९ जिला नवादा दिनांक २२ अप्रैल से ५ मई २०२४ तक।
३० जिला गया दिनांक ६ से २९ मई २०२४ तक।
३१ जिला औरंगाबाद दिनांक ३० मई से ८ जून २०२४ तक।
३२ जिला रोहतास दिनांक ९ से २७ जून २०२४ तक।
३३ जिला भभुआ कैमूर दिनांक २८ जून से ८ जुलाई २०२४ तक
३४ जिला बक्सर दिनांक ९ से १९ जुलाई २०२४ तक।
३५ जिला भोजपुर दिनांक २० जुलाई से २ अगस्त २०२४ तक।
३६ जिला अरवल दिनांक ३ से ८ अगस्त २०२४ तक ।
३७ जिला जहांनाबाद दिनांक ९ से १४ अगस्त २०२४ तक।
३८ जिला पटना दिनांक १५ अगस्त से ८ सितम्बर २०२४ तक।

उपर्युक्त सभी कार्यक्रमों में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। सपरिवार गुरुकुल अवश्य पधारें। साथ ही अपने-अपने जिले के अपने-अपने प्रखण्डों में भी सपरिवार, बन्धु-बान्धवों, मित्रों सहित अवश्य पधारने की कृपा करें। किन्हीं अपरिहार्य कारणों से जैसे चुनाव, बाढ़, प्राकृतिक आपदा, घटना-दुर्घटना आदि के कारण उपर्युक्त यात्रा कार्यक्रम में आंशिक अथवा पूर्ण परिर्वतन, स्थगन, निरस्तीकरण भी किया जा सकता है। ऐसा होने पर सम्बन्धित स्थानों पर सूचना प्रदान की जाएगी। यदि उपर्युक्त समय में परिर्वतन करना आवश्यक हुआ तो परिवर्तित स्थानों के कार्यक्रम कब होंगे इसकी सूचना भी पूर्व से प्रदान कर दी जाएगी। उक्त यात्रा कार्यक्रमों को सफल बनाने में आप तन-मन-धन सभी प्रकार से हमारा सहयोग करने की कृपा करें।

दयानन्द जनकल्याण आश्रम के नाम भारतीय स्टेट बैंक अरेर शाखा में खाता है जिसकी संख्या ३४९५९५२५५६२ तथा IFSC कोड SBIN ०००६१६३ एवं गुरुकुल दयानन्द वाणी के नाम पंजाब नैशनल बैंक बेनीपट्टी शाखा में खाता है जिसकी संख्या ०५८६००२१००००२९४१ तथा IFSC कोड PUNB ००५८६०० है।

प्रखण्डवार विस्तृत यात्रा कार्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत है। अपने-अपने जिले के विभिन्न प्रखण्डों का विवरण इस कार्यक्रम सूची से देखकर अपने-अपने प्रखण्डों के किसी विशेष ग्राम अथवा स्थान का चयन किया जाकर जहाँ कार्यक्रम किया जा सकता हो हमसे सम्पर्क अवश्य करें।

प्रखण्डवार यात्रा का विवरण इस प्रकार है

यह यात्रा बिहार राज्य के मधुबनी जिले के बेनीपट्टी प्रखण्ड के जरैल ग्राम में अवस्थित आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी से नववर्ष चैत्र शुक्लपक्ष, प्रतिपदा तिथि, सम्वत् २०८० तदनुसार दिनांक २२ मार्च २०२३ को प्रारम्भ होकर बेनीपट्टी प्रखण्ड कार्यालय एवं अनुमण्डल कार्यालय होते हुए बिस्फी प्रखण्ड के केरवार ग्राम तक जाएगी। भजन, प्रवचन, भोजन एवं रात्रि विश्राम के पश्चात् दिनांक २३ मार्च बृहस्पतिवार को प्रात:काल संध्या, योग, व्यायाम, हवन, भजन एवं प्रवचन के पश्चात् भोजनोपरान्त बिस्फी प्रखण्ड कार्यालय होते हुए रहिका प्रखण्ड के मलंगिया ग्राम तक जाएगी।

दिनांक २४ मार्च शुक्रवार को मधुबनी जिला कार्यालय एवं रहिका प्रखण्ड कार्यालय होते हुए राजनगर प्रखण्ड के बड़हरा ग्राम तक जाएगी।

दिनांक २५ मार्च शनिवार को राजनगर प्रखण्ड कार्यालय, फिर

खजौली प्रखण्ड कार्यालय होते हुए छपराढ़ी ग्राम अवस्थित आर्य वानप्रस्थ साधक आश्रम तक जाएगी।

दिनांक २६ मार्च रविवार को जयनगर प्रखण्ड के दुल्लीपट्टी ग्राम तक जाएगी।

दिनांक २७ मार्च सोमवार को यह यात्रा जयनगर आर्य पुस्तकालय एवं जयनगर प्रखण्ड कार्यालय होते हुए लदनियां प्रखण्ड के पथलगाढ़ा ग्राम तक जाएगी।

दिनांक २८ मार्च मंगलवार को लदनियां प्रखण्ड कार्यालय होते हुए बाबू बरही प्रखण्ड के मरुकिया ग्राम तक जाएगी।

दिनांक २९ मार्च बुधवार को बाबूबरही प्रखण्ड कार्यालय होते हुए खुटौना प्रखण्ड कार्यालय और झांझपट्टी ग्राम तक जाएगी।

दिनांक ३० मार्च बृहस्पतिवार को लौकही प्रखण्ड कार्यालय होते हुए कचनरवा ग्राम तक जाएगी।

दिनांक ३१ मार्च शुक्रवार को फुलपरास प्रखण्ड के मुरली ग्राम तक जाएगी।

दिनांक १ अप्रैल शनिवार को फुलपरास प्रखण्ड कार्यालय एवं घोघरडीहा प्रखण्ड कार्यालय होते हुए निहमा सरौती ग्राम तक जाएगी ।

दिनांक २ अप्रैल रविवार को मधेपुर प्रखण्ड के भगता ग्राम और दिनांक ३ अप्रैल सोमवार को मधेपुर प्रखण्ड कार्यालय फिर लखनौर प्रखण्ड कार्यालय होते हुए बेलही ग्राम तक जाएगी। दिनांक ४ अप्रैल मंगलवार को झंझारपुर प्रखण्ड कार्यालय होते हुए कर्णपुर ग्राम तक जाएगी। दिनांक ५ अप्रैल बुधवार को आंध्राठाढ़ी प्रखण्ड कार्यालय होते हुए पस्टन ग्राम तक जाएगी। दिनांक ६ अप्रैल बृहस्पतिवार को पंडौल प्रखण्ड कार्यालय होते हुए गन्धवार ग्राम तक जाएगी । दिनांक ७ , शुक्रवार से ९ अप्रैल रविवार तक आर्य समाज मधुबनी में रहेगी।

दिनांक १० अप्रैल सोमवार को कलुआही प्रखण्ड कार्यालय होते हुए इसी प्रखण्ड के बलुआटोल ग्राम तक जाएगी।

दिनांक ११अप्रैल मंगलवार को बासोपट्टी प्रखण्ड कार्यालय होते हुए छतौनी ग्राम तक जाएगी। दिनांक १२ अप्रैल बुधवार को हरलाखी प्रखण्ड कार्यालय होते हुए गंगौर ग्राम तक जाएगी। दिनांक १३ अप्रैल बृहस्पतिवार को मधवापुर प्रखण्ड के बिहारी ग्राम तक जाएगी।

दिनांक १४ अप्रैल शुक्रवार को यह सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा मधवापुर प्रखण्ड कार्यालय होते हुए सीतामढ़ी जिला में प्रवेश करेगी।

दिनांक १४ अप्रैल को चरौत, दिनांक १५ अप्रैल शनिवार को सुरसंड, १६ अप्रैल रविवार को सोनवरसा, १७ अप्रैल सोमवार को परिहार, १८ अप्रैल मंगलवार को बथनाहा, १९ अप्रैल बुधवार को मेजरगंज, २० अप्रैल बृहस्पतिवार को सुप्पी, २१ शुक्रवार को बैरगनियां, २२ अप्रैल शनिवार को रीगा, २३ अप्रैल रविवार को डुमरा सीतामढ़ी, २४ अप्रैल सोमवार को बाजपट्टी, २५ अप्रैल मंगलवार को पुपरी, २६ अप्रैल बुधवार को नानपुर, २७ अप्रैल बृहस्पतिवार को बोखड़ा, २८ अप्रैल शुक्रवार को रुन्नीसैदपुर, २९ अप्रैल शनिवार को बेलसंड, ३० अप्रैल रविवार को परसौनी प्रखण्ड में प्रवेश करेगी।

दिनांक १ मई सोमवार को यह सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा शिवहर जिला के शिवहर प्रखण्ड में प्रवेश करेगी। २ मई मंगलवार को पूर्णहिया, ३ मई बुधवार को पिपराढ़ी, ४ मई बृहस्पतिवार को तरियानी तथा ५ मई शुक्रवार को डुमरी कटसरी प्रखण्ड में जाएगी।

दिनांक ६ मई शनिवार को यह सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा पूर्वी चम्पारण जिला के पताही प्रखण्ड में प्रवेश करेगी। ७ मई रविवार को पकड़ी दयाल, ८ मई सोमवार को फेनहारा, ९ मई मंगलवार को मधुबन, १० मई बुधवार को तेतरिया, ११ मई बृहस्पतिवार को मेहसी, १२ मई शुक्रवार को चकिया, १३ मई शनिवार को पिपराकोठी, १४ मई रविवार को कोटवा, १५ मई सोमवार को कल्याणपुर , १६ मई मंगलवार को केसरिया, १७ मई बुधवार को संग्रामपुर, १८ मई बृहस्पतिवार को अरेराज, १९ मई शुक्रवार को पहाड़पुर, २० मई शनिवार को मोतिहारी, २१ मई रविवार को हरिसिद्धि , २२ मई सोमवार को तुरकौलिया, २३ मई मंगलवार को बंजरिया, २४ मई बुधवार को चिरैया, २५ मई बृहस्पतिवार को ढाका, २६ मई शुक्रवार को घोड़ासहन, २७ मई शनिवार को बनकटवा, २८ मई रविवार को छौड़ादानों, २९ मई सोमवार को आदापुर, ३० मई मंगलवार को रक्सौल, ३१ मई बुधवार को रमगढ़वा इस प्रकार यात्रा आगे बढ़ते हुए (सम्पूर्ण यात्रा कार्यक्रम निर्धारित है जिसे पत्रिका के आगामी अंकों में समय-समय पर प्रकाशित किया जाएगा तथा इच्छुक सज्जनों को सम्पर्क करने पर व्हाट्सएप पर भी भेजा जाएगा) दिनांक ६ सितम्बर २०२४ शुक्रवार को बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना मुनेश्वरानन्द भवन मछुआटोली पहुंचकर यात्रा का समापन दिनांक ६, शुक्रवार से ८ सितम्बर २०२४ रविवार तक बिहार राज्य के समस्त जिलों के सभी प्रखण्डों से पधारे हुए आर्यों के त्रिदिवसीय आर्य महासम्मेलन के रूप में होगा।

आप सभी आर्य महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि अपने-अपने जिले व प्रखण्डों में इस सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा को सफल बनाने का पूर्ण प्रयत्न कर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वप्न **वेदों की ओर लौटो** को सार्थकता प्रदान करने की दिशा में योगदान देते हुए महर्षि की दो सौ वीं जन्म जयन्ती पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि प्रदान करने के इस स्वर्णिम अवसर का लाभ प्राप्त करें। आपसे अनुरोध है कि अपने-अपने प्रखण्डों में जो-जो समय निश्चित किया गया है उन-उन तिथियों तथा उन तिथियों के निकटवर्ती तिथियों में अन्य कोई भी आयोजन अथवा कार्यक्रम की योजना न बनाएं। साथ ही अपने प्रखण्ड के किसी एक ग्राम को चुनकर उसी स्थान पर सभी आर्यजन मिलकर एक दिवसीय वेद प्रचार में शामिल होने की कृपा करें। हम आपके प्रखण्ड में उक्त-उक्त तिथि को अपराह्न २ से ४ बजे के बीच पहुंचेंगे। सांयकालीन दैनिक अग्निहोत्र, संध्या एवं सत्संग के पश्चात् वहीं भोजन एवं विश्राम करेंगे। दूसरे दिन प्रात:काल संध्या के पश्चात् प्रभात फेरी, योग व्यायाम व प्राणायाम के द्वारा रोग निवारण का कार्यक्रम भी होगा। फिर दैनिक अग्निहोत्र, भजन व प्रवचन के पश्चात् भोजन कर अगले पड़ाव की यात्रा करेंगे।बिहार राज्य के प्रत्येक जिले में अवस्थित आर्य समाज के अधिकारियों एवं सजग कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि आप हमें अपने-अपने जिले में किस प्रखण्ड से किस प्रखण्ड जाने में सुविधा होगी वैसा मार्गनिर्देश लिखकर भेजने की भी कृपा करें। आपके निर्देशानुसार उपर्युक्त मार्ग में परिवर्तन किया जा सकता है। वर्णित यात्रा स्थानों पर भोजन एवं हमें अगले पड़ाव तक पहुंचाने की व्यवस्था का सहयोग स्थानीय बन्धुगण करने की भी कृपा करें।

निवेदक : सुशील (संस्थापक/संचालक)
आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल, जिला मधुबनी बिहार।
चलभाष : ८८०९८५२१८७, ६२०५९६७९५७

नूतन गृह प्रवेश एवं चूड़ाकर्म संस्कार तथा वैदिक संसार के अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्यों का अभिनन्दन आयोजन सानन्द सम्पन्न

परमपिता परमेश्वर की महती तथा असीम अनुकम्पा से स्वस्ति मेडिटेक सर्विसेस तथा पी एन वी हॉस्पिटेक प्रतिष्ठान के स्वामी, तृतीय क्रम के मेरे सुपुत्र इंजी. नितिन शर्मा के द्वारा इन्दौर महानगर के उपनगर राऊ में नवविकसित आवासीय परिसर संस्कृति रॉयल सिटी में अपने नवनिर्मित गृह '**वैदिका निधि**' का गृहप्रवेश एवं सुपुत्र प्रणव की प्रथम वर्षगांठ दिनांक २ मार्च २०२३ को उसका चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान्, आर्य समाज मल्हारगंज (इन्दौर) के धर्माचार्य आचार्य डॉ नरेन्द्र जी अग्निहोत्री, आगरा के ब्रह्मत्व में गृह प्रवेश स्टील व ताम्र की नवीन यज्ञवेदी पर गृह में और चूड़ाकर्म संस्कार गृह के बाहर आंगन में ईंट–मिट्टी द्वारा निर्मित विशाल यज्ञवेदी पर बृहद यज्ञादि कर्म के द्वारा वेदोक्त विधि–विधान के साथ हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर यज्ञब्रह्मा आचार्य नरेन्द्र जी, सभा प्रधान श्री प्रकाश जी आर्य, श्री दयानन्द जी, श्री लक्ष्मीनारायण जी का सारगर्भित उद्बोधन हुआ तथा श्री रमेश जी भाट द्वारा काव्य पाठ, श्री बंसीलाल जी के द्वारा महर्षि दयानन्द महिमा का भजन प्रस्तुत किया गया।

वैदिक संसार के अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्यों का शॉल श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र के द्वारा अभिनन्दन की अभिलाषा विगत दीर्घकाल से लम्बित थी। प्रथम चरण में इस मांगलिक स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाते हुए ९ सदस्यों का अभिनन्दन भी किया जाना निर्धारित किया गया। इस हेतु सम्बन्धित सदस्यों से विनम्रता पूर्वक पधारने का निवेदन किया तथा उनकी स्वीकृति एवं जीवन की कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त कर अभिनन्दन पत्र बनवाए गए।श्री लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार विक्रम नगर (मौलाना), श्री रमेशचन्द जी भाट अजमेर, श्री अनिल जी शर्मा इन्दौर उपस्थित रहे जिनका भावभीना अभिनन्दन अपनी गरिमामय उपस्थिति से आयोजन की गरिमा बढ़ाने वाले गणमान्य महानुभाव यज्ञब्रह्मा आचार्य नरेन्द्र जी अग्निहोत्री, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान् प्रकाश जी आर्य, दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग से पधारे आर्य जगत् की महान् विभूति दानवीर एवं गुरुकुल नवप्रभात आश्रम उड़ीसा के संरक्षक श्रद्धेय श्री दयानन्द जी शर्मा, आर्य समाज ब्यावर राजस्थान के वरिष्ठ सदस्य योगाचार्य किशनलाल जी जांगिड, आर्य समाज सवाई माधोपुर राजस्थान के मन्त्री श्री ब्रह्मप्रकाश जी शर्मा, आर्य समाज पिपलिया मण्डी के पुरोधा पण्डित सत्येन्द्र जी आर्य, आर्य समाज झोकर (मक्सी) के ८० वर्षीय युवा व दयानन्द के वीर सैनिक श्री रमेशचन्द्र जी इन्द्रिया, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डॉ. दक्षदेव जी गौड़ (इन्दौर सम्भाग प्रभारी) एवं बंसीलाल जी आर्य (रतलाम सम्भाग प्रभारी), आर्य समाज संयोगिता के मन्त्री श्री मनोज जी सोनी , आर्य समाज देपालपुर के सक्रिय युवा कार्यकर्ता श्री मनोज जी आर्य, वेद विद्या मन्दिर, धरमपुरी के संस्थापक एवं संचालक श्री मोहनलाल जी शर्मा, आर्य समाज राऊ का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री कैलाशचन्द्र जी पाटीदार, आर्य समाज विक्रमनगर (मौलाना) के प्रतिनिधि व कृषि संयन्त्रों के सुविख्यात औद्योगिक प्रतिष्ठान '**कृषि दर्शन**' के स्वामी श्री रमेशचन्द्र जी पाटीदार, वैदिक संसार पत्रिका के प्रकाशन में अहम् भूमिका का निर्वाह करने वाले राजा ऑफसेट के स्वामी श्री रमेशचन्द्र जी वर्मा एवं वी.एम. ग्राफिक्स के श्री नितिन जी पंजाबी, विंध्याचल नगर इन्दौर के वरिष्ठ समाजसेवी श्री रमेशचन्द्र पंवार, विश्वकर्मा मन्दिर पटेल नगर इन्दौर के वरिष्ठ सदस्य श्री केदार जी शर्मा, जांगिड ब्राह्मण समाज जिला बड़वानी के पूर्व जिला अध्यक्ष श्री विश्वेश्वर शर्मा, करणावत भोजनालय बंगाली नगर इन्दौर के स्वामी श्री मनोज जी गोठड़ीवाल, दूरसंचार विभाग से सेवानिवृत्त तिलक नगर वाले श्री पाटिल जी, वन्दना नगर के श्री लक्ष्मीचन्द जी शर्मा, राजेन्द्र नगर से डॉन इलेक्ट्रॉनिक के श्री मनोज जी शर्मा तथा विभिन्न स्थानों से यात्रा के कष्टों को सहकर पधारे स्नेहीजनों, परिजनों, सुपुत्र नितिन के सम्पर्क के साथीगण स्नेहीजन एवं गजेश के विभागीय सहयोगी साथीगणों के करकमलों द्वारा तथा उपस्थित साक्षी में किया गया। श्री रामभजन जी पाटीदार बूढ़ा (मन्दसौर), श्री रामचन्द्र जी कारपेंटर ब्यावरा (राजगढ़), श्री अशोक जी गुप्ता शिवपुरी, श्री अर्जुन जी झलोया मन्दसौर, श्री वेदप्रकाश जी शर्मा जयपुर, श्री समाधान जी पाटिल (जलगांव) किन्हीं कारणवश उपस्थित नहीं हो सके। श्री रामभजन जी पाटीदार की अनुपस्थिति में उनके प्रतिनिधि के रूप में पण्डित सत्येन्द्र जी को अभिनन्दन पत्र तथा शाल श्रीफल प्रदान किया गया। प्रथम चरण में सम्मिलित अन्य अनुपस्थित सदस्यों का अभिनन्दन उनके निवास पर पहुंचकर करने का प्रयास किया जाएगा।

शान्ति पाठ पश्चात् सहभोज के साथ मधुर स्मृतियों को मानस पटल पर अंकित करते हुए आयोजन का समापन हुआ।

अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्यों के अभिनन्दन के प्रथम चरण में सम्मिलित सदस्यों का संक्षिप्त जीवन वृत्त निम्नानुसार हैं।

प्रिय सुखदेव जी शर्मा
सादर सप्रेम नमस्ते।

आपका आमन्त्रण धीरज के मोबाइल पर आया। मुझसे भी चलभाष पर आपने आने का आग्रह किया। किन्तु शारीरिक असमर्थता के चलते मैं दूर बाहर जा नहीं सकता व घर के ये लोग अकेला जाने भी न देते। २.३.२३ को बहन के पोते का आशीर्वाद समारोह है, उसमें भी मैं न जा सकूँगा। घर के सदस्य (धीरज) जाएँगे। अत: मुझे प्रत्यक्ष उपस्थित मानकर हार्दिक शुभकामना अभिनन्दन स्वीकार करें। परिवार के दर्शन योग होगा तब करूँगा। रहा मुझे सम्मानित करने का प्रश्न, तो मैं तो हर माह वैदिक संसार में लेख चित्र आदि से सम्मानित होता ही हूँ। आपके साथ कई पाठकों के कविता व लेख पर प्रशंसा के सन्देश आते हैं। यह भी सम्मान ही है।

भाव का भूखा जो रहे सच्चा साधु वही।
धन-मान का भूखा जो रहे वह तो साधु नाहि।।

हाँ, कई विद्वान् भद्र महानुभावों के दर्शन, मिलन होते इस लाभ से वंचित रहने का खेद रहेगा।

बिन सत संग विवेक न होई।
प्रभु कृपा बिन सुलभ न सोही।।

आपके हृदय ने मुझे सम्मान योग्य समझा। बहुत–बहुत आभार। अभिमान नहीं पर गर्व है। धन्यवाद।

दि. २८.२.२३ **मोहनलाल दशोरा आर्य**
(नारायणगढ़)

---

(१) श्रीमान् लक्ष्मीनारायण जी आर्य (पाटीदार)

पिता : सेठ श्री मांगीलाल जी आर्य।
माता : श्रीमती तुलसाबाई आर्य।
जन्म दिनांक : १ अप्रैल १९५०।
विवाह : १ मई १९७३।
धर्मपत्नी : श्रीमती शिवकान्ता पाटीदार।
सन्तति : सुपुत्र श्री रवि पाटीदार एवं सुपुत्रियां श्रीमती विद्या पटेल, श्रीमती गायत्री पाटीदार, श्रीमती सरस्वती पाटीदार, श्रीमती सुनीता पाटीदार, श्रीमती किरण चौधरी।
निवास स्थान : विक्रमनगर (मौलाना), जिला : उज्जैन (म. प्र.)।
प्रतिष्ठान : मां तुलसी वेयर हाउस, पाटीदार पेट्रोलियम एण्ड सीएनजी गैस पॉइण्ट, आर्य कृषि फार्म।
सम्पर्क चलभाष : ९८२७०-७८८८०।

आपको वैदिक धर्म-संस्कृति के प्रति अगाध निष्ठा तथा संस्कार अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त हुए। आपका पूरा परिवार वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित, सुशिक्षित सफल, सुप्रसिद्ध, प्रतिष्ठित व्यवसाई एवं कृषक परिवार है।आपने उच्च आदर्शपूर्ण मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाया। आपका जीवन स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ को समर्पित है। आप आर्य समाज विक्रमनगर (मौलाना) के वटवृक्ष तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के आधार स्तम्भ हैं। आप उज्जैन सिंहस्थ में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार शिविर का आयोजन हो अथवा मध्यप्रदेश के एकमात्र कन्या गुरुकुल मोहन बड़ोदिया के विकास का विषय हो अथवा अन्य कोई भी वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार आयोजन तथा गतिविधियों का विषय हो तन-मन-धन से सदैव तत्पर रहते हैं। आपने अनेक पदों को सुशोभित किया है। वर्तमान में आप मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के उपप्रधान तथा उज्जैन सम्भाग प्रभारी पद का दायित्व कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। वैदिक संसार को आपका तन-मन-धन से सदैव आशीर्वाद प्राप्त होता रहता है।वैदिक संसार परिवार आपको अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्य के रूप में पाकर अभिभूत है तथा अपने आप को संरक्षित-सुरक्षित अनुभूत करता है। वैदिक संसार परिवार परमपिता परमेश्वर से आपके एवं आपके समस्त परिजनों के लिए सुख-शान्ति, समृद्धि, आरोग्यता युक्त दीर्घायु जीवन की कामना करता है।

(२) श्रीमान् रमेशचन्द्र जी भाट

पिता : श्री लादूराम जी भाट।
माता : श्रीमती निर्मलादेवी भाट
जन्म दिनांक : १० अक्टूबर १९६०।
धर्मपत्नी : श्रीमती मोहिनीदेवी भाट।
सन्तति : सुपुत्र चि. मोहित भाट एवं सुपुत्रियां श्रीमती ममता बारोठ, श्रीमती आशा।
निवास स्थान : पसन्द नगर,कोटड़ा, अजमेर (राज.)
सम्पर्क चलभाष : ९४१३३-५६७२८।

आप अत्यन्त सरल-सहज, सेवाभावी, मृदुभाषी, उदार मिलनसार तथा कर्मठता के गुणों के धनी व्यक्ति हैं।आपने अपने जीवन में उच्च आदर्शपूर्ण जीवन मूल्यों को स्थान देते हुए अपने जीवन को अन्य के लिए भी प्रेरणाप्रद बनाया है। आप न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ़ इण्डिया लिमिटेड, रावतभाटा, राजस्थान में टेक्निकल ऑफिसर (ई) पद पर सेवारत रहे। आप सेवाकाल की अवधि में आर्य समाज रावतभाटा के सम्पर्क में आए और सनातन धर्म-संस्कृति के प्रचारार्थ आपने तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया। आपने आर्य समाज रावतभाटा में उपमन्त्री, मन्त्री, कोषाध्यक्ष पदों पर सेवा प्रदान की और आपकी गणना आर्य समाज रावतभाटा के वरिष्ठ सदस्यों में आज भी होती है।सेवानिवृत्ति के पश्चात् आप अजमेर में निवास कर रहे और आपके जीवन का अधिकांश समय आर्य समाज तथा वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार गतिविधियों में ही व्यतीत होता है। वैदिक साहित्य का स्वाध्याय व रचनाओं का सृजन करना तथा वैदिक आयोजनों में ऑनलाइन और ऑफलाइन भाग लेना आपकी दिनचर्या का अभिन्न अंग है। आप उच्च कोटि की वैदिक सिद्धान्तों युक्त रचनाओं के कवि तथा साहित्य सृजनकर्ता है। आप वैदिक संसार के प्रारम्भिक काल से ही सदस्य हैं तथा वैदिक संसार को गहन स्नेह के साथ तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करते हैं। वैदिक संसार परिवार आपको अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्य के रूप में पाकर प्रफुल्लित है तथा परम पिता परमेश्वर से आपके एवं आपके समस्त परिजनों के लिए सुख-शान्ति समृद्धि, आरोग्यता युक्त दीर्घायु जीवन की कामना करता है।

(३) श्रीमान् अनिल जी शर्मा

पिता : श्री हीरालाल जी शर्मा।
माता : श्रीमती पुष्पादेवी शर्मा।
जन्म दिनांक : २९ मई १९६६।
धर्मपत्नी : श्रीमती चन्दादेवी शर्मा।
सन्तति : सुपुत्र चि. विवेक शर्मा, चि. यश शर्मा।
निवास स्थान : व्यंक्टेश नगर विमानतल मार्ग, इन्दौर (म. प्र.)।
प्रतिष्ठान : साईनाथ प्रॉपर्टी।
सम्पर्क चलभाष : ९३०३१-०९५४७।

आप कर्मठ, जुझारू, मिलनसारिता, दानशीलता तथा सेवाभावी गुणों से युक्त संघर्षशील व्यक्ति हैं। आपने संघर्षशीलता के बूते पर शून्य से शिखर को छुआ है। आप इन्दौर रियल प्रॉपर्टी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष पद पर तथा व्यंक्टेश नगर रहवासी संघ में सचिव पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आप सामाजिक-धार्मिक कार्यों को तन-मन-धन से समर्पित होकर प्रेरणाप्रद कार्य करते रहते हैं। आपने अपनी माताजी की मृत्यु पर मृत्युभोज न करते हुए पटेल नगर विश्वकर्मा मन्दिर समिति इन्दौर को विकास कार्य हेतु रु. १,५१,००० की राशि दान स्वरूप ३० जनवरी २०२३ को प्रदान कर सराहनीय कार्य किया है। वैदिक संसार के प्रति आपका आत्मीय सम्बन्ध है। वैदिक संसार परिवार आप जैसे व्यक्तित्व को अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्य के रूप में पाकर हर्षित है तथा आपके एवं आपके समस्त परिजनों के सुख-शान्ति , समृद्धि, आरोग्यता युक्त दीर्घायु जीवन की कामना परम पिता परमेश्वर से करता है।

(४) श्रीमान् रामभजन जी आर्य (पाटीदार)

पिता : श्री रतनलाल जी पाटीदार।
माता : श्रीमती देऊबाई पाटीदार।
जन्म दिनांक : १ जुलाई १९५३।
धर्मपत्नी : श्रीमती रामकन्यादेवी पाटीदार।
सन्तति : सुपुत्र श्री संजीव पाटीदार एवं श्री नवीन पाटीदार।

निवास स्थान : बूढ़ा, जिला : मन्दसौर (म. प्र.)।
सम्पर्क चलभाष : ९४२४५-३८५७५।

आपको वैदिक धर्म-संस्कृति के प्रति अगाध निष्ठा तथा संस्कार अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त हुए। आपका पूरा परिवार वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित, सुशिक्षित, सफल, सुप्रसिद्ध, प्रतिष्ठित कृषक परिवार है। आपके पिता को अपने ग्राम बूढ़ा में आर्य समाज की स्थापना का श्रेय जाता है।आपने उच्च आदर्शपूर्ण मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाया। आपका जीवन स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ को समर्पित है। आपने आर्य समाज बूढ़ा के प्रधान पद तथा अन्य पदों पर सेवाएं प्रदान की। आपने मध्यप्रदेश शासन के शिक्षा विभाग में शिक्षक पद पर भी सेवाएं प्रदान की। आप मुक्तिधाम समिति बूढ़ा के अध्यक्ष पद तथा धार्मिक-सामाजिक गतिविधियों हेतु क्षेत्र में सुविख्यात तथा समर्पित पाटीदार समाज धर्मशाला बूढ़ा के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर रहे हैं। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र संजीव पाटीदार आर्य बाल मन्दिर बूढ़ा के अध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर विरासत में प्राप्त सेवा संस्कारों को आगे बढ़ा रहे हैं। आपके सुपौत्र भी आर्य समाज की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर योगदान दे रहे हैं इस प्रकार आपकी चौथी पीढ़ी का पदार्पण आर्य समाज तथा वैदिक धर्म में सक्रिय योगदान हेतु हो चुका है।

आप वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार आयोजन तथा गतिविधियों को तन-मन-धन से सदैव तत्पर रहते हैं। वैदिक संसार को आपका तन-मन-धन से सदैव आशीर्वाद प्राप्त होता रहता है।वैदिक संसार परिवार आप जैसी महान् विभूति को अतिविशिष्ट संरक्षक सदस्य के रूप में पाकर गर्व की अनुभूति करता है। वैदिक संसार परिवार परमपिता परमेश्वर से आपके एवं आपके समस्त परिजनों के लिए सुख-शान्ति, समृद्धि, आरोग्यता युक्त दीर्घायु जीवन की कामना करता है।

(शेष भाग आगामी अंक में)

भारत को भारी तूफानी ने घेरा था

भारत को भारी तूफानों ने घेरा था,
चहुँ ओर भयंकर लहरों का डेरा था।।
सर्वत्र घनघोर घना घुप्प अन्धेरा था,
दिशाहीन ताना-बाना सारा था।।
दृष्टि से अति दूर किनारा था,
बेड़ा फँसा बीच मँझधारा था।।
माँझी भी मदिरा का मारा था,
लक्ष्य भी नहीं, कुछ विचारा था।।
चिन्ता में यात्री दल सारा था,
मात्र मृत्यु ही एक चारा था।।
बचने का नहीं कोई सहारा था,
अन्तिम आस प्रभु का आसरा था।।
तब आया एक ऋषिवर प्यारा था,
जो डूबती नैया का किनारा था।।
वह युग प्रवर्तक राष्ट्र सहारा था,
सौराष्ट्र में जन्मा दयानन्द दुलारा था।।
सर्वप्रथम ऋषिवर ने स्वराज उच्चारा था,
राष्ट्र हमारा कह अंग्रेजों को फटकारा था।।
देश छोड़ने हेतु उन्हें ललकारा था,
गोरों ने दयानन्द को बागी फकीर पुकारा था।।
उनके पीछे गुप्तचर तन्त्र उतारा था,
राष्ट्र भक्तों ने तन-मन-धन वारा था।।
बलिदानियों ने राष्ट्र ऋण उतारा था,
गोरों ने भारत से किया किनारा था।।
मुक्त गगन में राष्ट्र ध्वज फहरा था,
आर्यों के दृढ़ हाथों में लहरा था।।
राष्ट्र ने परमेश्वर का धन्यवाद पुकारा था,
सबने भारत माँ का जयगान उच्चारा था।।

हम कृतज्ञ आर्य वेदोद्धारक...

हम कृतज्ञ आर्य, वेदोद्धारक, गुरुवर दयानन्द के अनुयायी हैं,
सदियों बाद ऋषिवर की कृपा से हमने स्वाधीनता पाई है।।
हम पवित्र आर्य वैदिक धर्मी, एक ब्रह्म उपासी हैं,
जो सारे ब्रह्माण्ड का स्वामी व्यापक घट-घट वासी है।
हम ज्ञानी राष्ट्र भारत महान के मूल निवासी हैं,
जो सर्व पुरातन विश्वगुरु पवित्र वेदोपासी हैं।।
हम सर्वे भवन्तु सुखिनः स्वर के उद्घोषी हैं,
विश्व बन्धुत्व, शान्ति सद्भाव के हम पोषी हैं।
हम ज्ञान-विज्ञान सत्य न्याय तर्क तत्वान्वेषी हैं,
वेदों के अनुयायी एक ओंकार परमेश्वर विश्वासी हैं।।
जो अज अकाय अगोचर अनुपम सुख राशी है,
वह अजर अमर अनादी अखिलेश अविनाशी है।
जो सुखकर्ता दु:खहर्ता सबका कष्ट निवारी है,
वह दाता दयालु दानी, दीनबन्धु परम हितकारी है।।
जो परम विभो सर्वव्यापक कण-कण व्यापी है,
वह निराकार निर्विकार निरंजन, नित निर्लेपी है।
जो सच्चिदानन्द, आनन्दकन्द अनादी अभय सुखकारी है,
वह परम पिता परमेश्वर विश्वेश्वर विश्वधराधारी है।।
हम उस परम पालक प्रकाशक परमात्मा के आशी हैं,
जो सृष्टिकर्ता, धर्ता, संहर्ता, सबका परम प्रकाशी है।
वह न्यायकारी, अटल, सर्वपालक सर्वत्र व्यापी है,
जो परम कृपालु उपकारी, रक्षक प्रेरक प्रतापी है।।
हम सर्वाधार अनुपम अलौकिक पिता वास्तविक के आस्तीक हैं,
जो परम पवित्र, प्रेरक प्रजा वत्सल परम सात्विक हैं।।

अम्बालाल विश्वकर्मार्य
पिपलिया मण्डी, मन्दसौर
चलभाष : ८९८९५३२४१३

आर्य समाज सूरसागर की स्थापना के उपलक्ष्य में हीरक जयन्ती समारोह

(दि. २७ से ३० दिसम्बर २०२२)

ले. नरसिंह सोलंकी
प्रधान आर्य समाज, सूरसागर, जोधपुर (राज.)
चलभाष : ९४१३२८८९७९

आर्य समाज सूरसागर (जोधपुर) के मध्य में इस भवन को बने ८० वर्ष हो गए हैं। इस उपलक्ष्य में हीरक जयन्ती समारोह मनाया गया। यह भवन आज भी अति शोभायमान है। हमारे पूर्वज श्री गोवर्धनदास सोलंकी ने यहाँ के निवासियों के सहयोग से इसका निर्माण करवाया था। तब से यहाँ साप्ताहिक यज्ञ–सत्संग होता रहता है। वर्ष में एक बार तीन–चार दिनों का भव्य उत्सव मनाया जाता है। बाहर के विद्वानों व आर्यजनों को भी आमन्त्रित किया जाता है। आज तक के समारोहों में यह समारोह अति भव्य रहा। पूरा पाण्डाल भरा रहा। दूसरे दिन का महिला सम्मेलन तो अपूर्व रहा और तीसरे दिन आर्य वीर–वीरांगनाओं का तलवार, लाठी, व्यायाम प्रदर्शन भी अति भव्य रहा।

सर्वप्रथम श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (१०४ वर्ष) का आगमन उत्साहपूर्ण रहा जिनके करकमलों द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। इस उम्र में भी अच्छे प्रवचनों का लाभ सभी को मिला। आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय (दिल्ली) का प्रवचन भी जोशीला रहा। संस्कृत पर अच्छी पकड़ है। उर्दू की गजलें उनको खूब आती हैं लेकिन राजस्थान में उर्दू का कोई स्थान नहीं है (समीक्षा) महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को खूब बढ़ावा दिया था। गुजरात के होते हुए भी उन्होंने हिन्दी भारत को जोड़ने वाली भाषा कहते हुए खुद ने भी हिन्दी अपना ली थी। प्रो. डॉ. रामनारायण शास्त्री सादगी के प्रतीक एवं श्रेष्ठ विद्वान् हैं। यज्ञ बुद्धया होते हुए एवं सफल मंच संचालन करते हुए समय के पाबंद रहे। आचार्य वरुणदेव के प्रवचनों का लाभ विशेष तौर पर बच्चों में अति प्रभावशाली रहा। अपनी मधुर वाणी से सबको मोह लिया। बहिन कल्याणीदेवी भजनोपदेशिका ने महिला सम्मेलन में अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपदेश अपने भजनों के माध्यम से दिया। लोग गद्‌गद् हो गए।

महापौर श्रीमती कुन्ती देवड़ा ने महिला सम्मेलन में अपने प्रभावी शब्दों में महर्षि दयानन्द एवं वेदों के बारे में अच्छा प्रवचन दिया। श्रीमती रूपवती देवड़ा महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रवचन दिया। इन्होंने अपना प्रथम प्रवचन १६ साल पहले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मॉरीशस में मेरे आग्रह पर दिया था। श्रीमती ज्योतिदेवी सोलंकी (पूर्व पार्षद) ने अपूर्व मेहनत करके इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति दर्ज करवाई जो सराहनीय है। घर–घर जाकर महिलाओं को प्रेरित किया। सम्मेलन में कई बच्चियों व महिलाओं ने अच्छे सुन्दर भजन सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

आर्य किशनलाल गेहलोत हमारे सूरसागर के निवासी ने राजस्थान का सर्वोच्च पद आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख प्रधान होने का गौरव प्राप्त किया है। पूरे राजस्थान में घूम–घूम कर वेद और महर्षि दयानन्द का कार्य आगे बढ़ाया है। इनके नेतृत्व में एक वाहन भी प्रचार कार्य में गाँव–गाँव घूम रहा है। स्मृति भवन जोधपुर के मन्त्री रहते हुए कई दर्शनार्थ प्रकल्प स्थापित किये हैं जो आप लोग देख ही रहे हैं।

श्री जयसिंहजी गेहलोत (पालड़ी) सादगी के प्रतीक होते हुए भी महान कुबेर बने हुए हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के एवं स्मृति भवन जोधपुर के खजांची व परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त मन्त्री के पदों को सुशोभित कर रहे हैं। हमारी आर्य समाज में उप प्रधान भी हैं।

कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु श्री नरपतसिंह गेहलोत (पाठक) मन्त्री पद पर रहते हुए बड़ी मेहनत एवं लगन से जो कार्य किया है वह अनोखा एवं प्रशंसनीय है। मेरे साथ घर–घर घूमकर पर्चे बाँटे व दान संग्रह भी किया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग कार्यक्रम में भाग लेवें। दान संग्रह भी अब तक का सर्वोच्च रहा। समाज का इतिहास बताकर सभा के पूर्वज सम्माननीय लोगों का परिचय दिया गया। जिन्होंने समाज को सुदृढ़ बनाया व आज वो लोग संसार में नहीं हैं, उनके वंशज पुत्र–पड़पौत्र वगैरह का शॉल ओढ़ाकर व स्मृति चिह्न (मोमेन्टो) भेंट कर स्वागत किया गया।

अन्त में ध्वजारोहण करवाकर पधारे हुए लोगों को धन्यवाद देकर सभा विसर्जन की घोषणा की। ■

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ (गुजरात) की आगामी गतिविधियाँ

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
दिनांक : ९ से १३ अप्रैल २०२३ तक

आर्य वीर शिविर (युवकों हेतु)
दिनांक : ७ से १४ मई २०२३ तक

आर्य वीरांगना शिविर (युवतियों हेतु)
दिनांक : २१ से २८ मई २०२३ तक

आचार्य नवानन्द संन्यास दीक्षा समारोह
दिनांक : ४ जून २०२३

ज्योतिष शिविर
दिनांक : १८ से २५ जून २०२३

अध्ययन शिविर
दिनांक : २७ जून २०२३ से ६ मास तक

सम्पर्क करें : ९७२७०५९५५०

परोपकारिणी सभा, अजमेर की आगामी गतिविधियाँ

साधना–स्वाध्याय–सेवा शिविर
दिनांक : ११ से १८ जून २०२३ तक

दम्पत्ति शिविर
दिनांक : २४ से २७ अगस्त २०२३ तक

सम्पर्क : ०१४५–२९४८६९८, ९३१४३९४४२१

शुभी संग वैभव केसरवानी, आदर्श वैदिक विवाह संस्कार सम्पन्न

केसरवानी परिवार, कुण्डा, जिला प्रतापगढ़ (उ.प्र.) द्वारा दिनांक १६ फरवरी २०२३ को आयोजित आदर्श वैदिक विवाह संस्कार हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस विवाह की विशेषता यह थी कि विवाह का निमन्त्रण पत्र लीक से हटकर बाजार के रेडीमेड उपयोग न करते हुए विशेष रूप से गृहस्थियों के लिए उपयोगी वैदिक विद्वानों द्वारा रचित लेखों से युक्त पुस्तक 'आदर्श वैदिक परिवार' के संलग्न बनवाया तथा वितरित किया गया जो एक सराहनीय तथा प्रेरणादायी कार्य है।

निमन्त्रण पत्र का मुख पृष्ठ एवं अन्तिम पृष्ठ

भाई अपनी बहन को शीलारोहण करवाते हुए

लाजा होम की विधि को सम्पादित करने को उद्यत वर-वधू

सप्तपदी विधि को सम्पन्न करते वर-वधू

वर वैभव वधू शुभी की माँग भरते हुए

वधू शुभी का आभूषण शृंगार

बीना (म.प्र.) में सात दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

विस्तृत विवरण पृष्ठ २२ पर

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

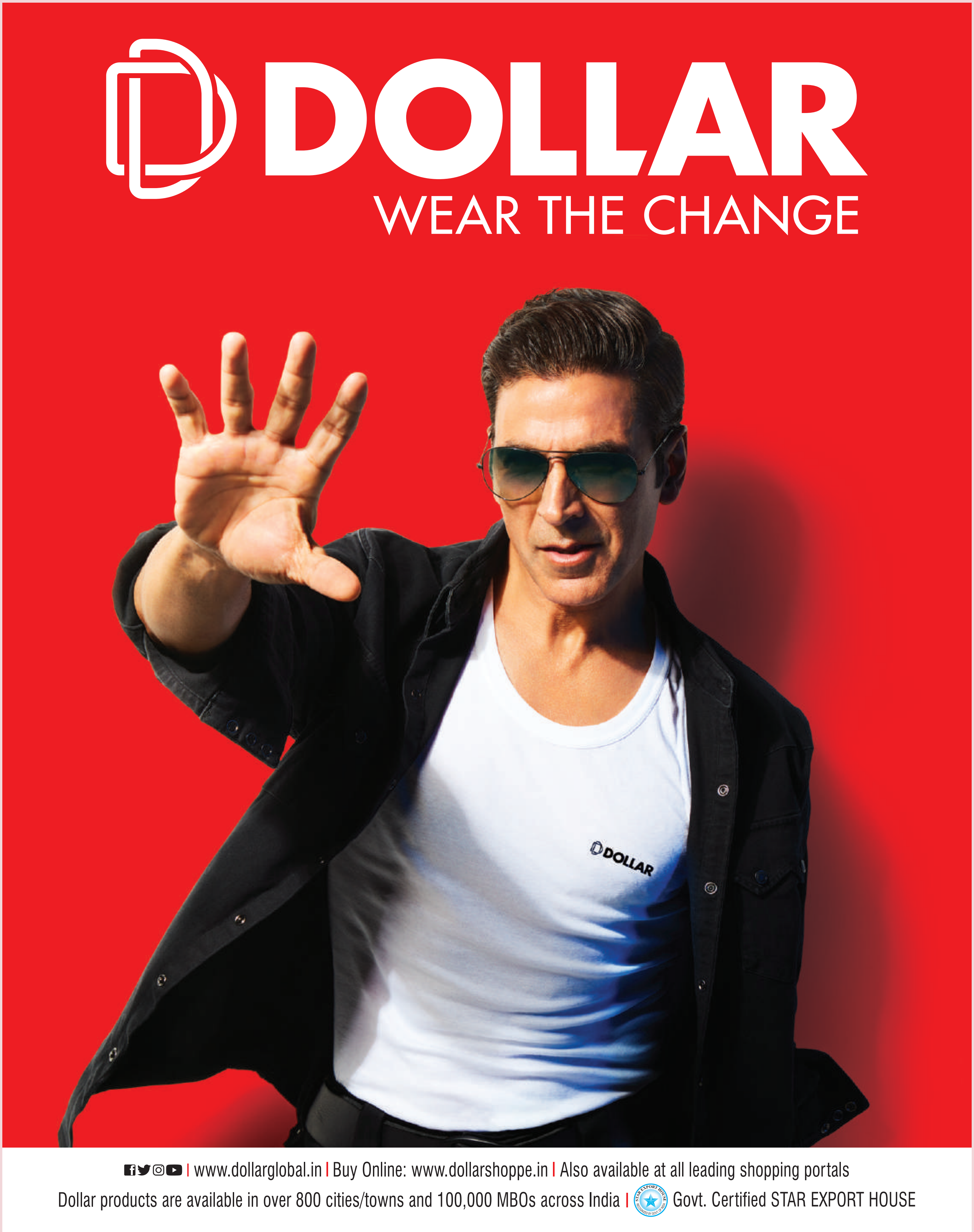

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित